अक्षर कुण्डली

अमृता प्रीतम

अक्षर कुण्डली

वाणी
आनंद
स्नेह
संकल्प
ज्ञान
मन
ॐ
मस्तिक
कला
तेज
आत्मा
बुद्धि
चेतना

मैं अपने ख़्यालों के सदके

मैं अपने ख्यालो के सदके तू पास नही और पास भी है

इन सादा से लफ्ज़ो मे जाने कितनी वुसत छिपी हुई हैं—जाने कितनी डाई-मैंशन्स, पर कह सकती हू कि अगर यह लफ्ज़ किसी आशिक के होठो पर आए, तो उसकी जेहनी कैफीयत का अनुमान होता है, उसकी दीवानगी का हासिल, जो किसी की गैर हाजिरी मे भी उसे हाजिर-नाजर कर देती है

जाहिर है कि यहा चेतना के दो पहलू दिखाई देते हैं—एक जो किरदार है, और एक जो दशक है। किरदार ने किसी की मौजूदगी का अनुभव पा लिया है, और दशक के लिए यह गैर मौजूदगी अवस्था है।

और ठीक यही लफ्ज़, अगर किसी जिज्ञासु के होठो पर हो, तो उसकी जेहनी कैफीयत का भी अनुमान होता है, जहा उसकी चेतना अपनी सीमा को स्वीकार भी करती है, और उससे इन्कार भी करती है।

और लगता है कि जैसे एक पछी उडने से पहले अपने पर तोलता है, यह वो नुक्ता है, जहा एक जिज्ञासु की चेतना, वसीह होने की तैयारी मे है। शायद उस अवस्था मे, जहा से उठाया हुआ एक कदम, एक नयी डाईमैंशन को उसके अनुभव मे ले आएगा। और उसका जो अपनी सीमा से इन्कार था, वही एक नए अनुभव का स्वीकार बन जाएगा।

वसीह चेतना की—एक्सपैंडिड कान्शियसनैस की इस यात्रा मे जाने कितने इन्कार हैं, और कितन स्वीकार हैं, पर जिन्होंने इसका दशन पाया है, उन्होंने इसे महाचेतना की कोख से निकली हुई सात धाराओ का नाम दिया है। सप्त वाणी कहा है। एक सप्तक।

भारतीय चिन्तन एक एक चेतना की सात-सात परतें मानता है। और इस तरह यह सात सप्तक बनते हैं—उनचास तत्त्व। और इन्हीं का पचासवा तत्त्व महाचेतना मान कर पूरे ब्रह्माण्ड को 'पचास-तत्त्वीय ब्रह्माण्ड' का नाम दिया गया है।

हमारी चेतना की सात परतों को सप्तऋषि का नाम भी दिया जाता है।

और ये सात ऋषि हैं—वशिष्ठ, कश्यप, अत्री, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज।

वशिष्ठ	—	अग्नि तत्त्व है	—	विवेक शक्ति
कश्यप	—	पृथ्वी तत्त्व है	—	जागृति
अत्री	—	जल तत्त्व है	—	वाणी शक्ति
जमदग्नि	—	तेज तत्त्व है	—	क्रिया शक्ति
गौतम	—	वायु तत्त्व है	—	विचार शक्ति
विश्वामित्र	—	आकाश तत्त्व है	—	इच्छा शक्ति
और भारद्वाज	—	चेतन तत्त्व है	—	संकल्प शक्ति

इन्हीं को श्री अरविन्द ने 'सेवन फोल्ड टरूथ कॉन्शियसनेस' कहा है। और चेतना की इन्ही सात परतो मे विज्ञान को श्री रजनीश न, इन्सान के एक ही शरीर मे सात शरीर कहते हुए—इन्हें विकास की सात मंजिलें कहा है। सात मूछित शक्तिया। सात सम्भावनाएं। जिन्हें चेतन यत्न से संवेदनशील करना होता है। सकल्पशील करना होता है है।

लगता है एक जिज्ञासु के मन की यही अवस्था रही होगी, कि तू पास नहीं, और पास भी है, कि शर्ले मैक्लेन ने योग साधना की, एक नई कोण तलाश की, और अपनी दो आखो के बीच की मस्तिष्क-रेखा से लेकर अपनी नाभि तक के उन स्थानो को सोने की सुइयो से बेंध कर एक ऐसा तजुर्बा हासिल किया, जो योगी लोग षट चक्र में सोई हुई शक्तियों को जगा लेने से हासिल करते हैं।

और इस माध्यम से शर्ले मैक्लेन ने अपनी महा चेतना से सम्पर्क पैदा किया और अपने कितने ही पूर्व जन्म देख पाई। एक बार जब उसने देखा कि हजारो साल पहले उसका एक जन्म भारत मे हुआ था, जहां अपने बचपन म वो एक बार एक हाथी, की मददगार हुई थी और फिर जब उस छोटी सी बच्ची का पिता नही रहा तो हाथियो ने मिलकर उसकी परवरिश की थी—यहां तक कि जब वो कुछ जवान हुई, तो हाथी उसकी कांच की चूड़ियो से खेलते थे। किसी जन्म का यह राज जब नुमाया हुआ, तो वो हैरान हुई कि यह कौन-सी चेतना थी, उसके अन्तर मे सोई हुई, कि इस जन्म मे उसने अपना न्यूयार्क का घर हाथियों की तस्वीरों से सजाया था

ऐसी कोई पहचान सी, जो हमारे किसी तर्क की पकड मे नही आती, ठीक वही अवस्था होती है—तू पास नहीं और पास भी है और यही से हमारे अन्तर मे कोई सम्भावना जागती है, कुछ क्रियाशील होता है

हकीकत तो वो भी है जो हमारे अनुभव की सीमा से आगे है, लेकिन मैं जिज्ञासु उसे मानती हू, जो अपने इन्कार मे भी एक स्वीकार का स्थान बनाये रखता है।

'पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे'—यह तो महाचैतन्य का अनुभव है। इसके लिए तो मीरा को जाना होता है। लेकिन जब एक जिज्ञासु ऐसी मंजिल की सम्भावना अपने में नहीं देख पाता, तब भी, मैं मानती हूं कि उसके कान उस रास्ते की ओर लगे रहते हैं—*जहां से ही दूर से मीरा के पांव में बंधे हुए घुंघरू*—उस पूरे रास्ते को तरंगित कर रहे होते हैं।

यह पुस्तक 'अक्षर-कुण्डली' मेरी किसी प्राप्ति की गाथा नहीं है। यह तो एक जिज्ञासु मन की अवस्था है, जिसे कभी-कभी किसी पवन के झोंके में मिली हुई मीरा के घुंघरुओं की ध्वनि सुनाई देती है

—अमृता प्रीतम

वक्री सूरज

एक काली लकीर मेरे सामने पड़ी किताब मे से उठकर बिजली की सुख लकीर की तरह मेरे मन-मस्तक से गुज़र गयी, जिस वक्त पढ़ा कि धरती का तवाज़ुन (सतुलन) उस समय बिलकुल हिल जाता है, जब सूरज वक्री होकर एक राशि म से दूसरी मे कदम रखता है

आज तक जो कुछ भी पढ़ा था, सुना था, वह यह था कि चाद-सूरज कभी वक्री नहीं होते। पर कीरो कह रहा था कि 2150 वष के बाद सूरज वक्री होता है। वह ईसाकाल से 388 वष पहले मेष राशि से वक्री होकर मीन राशि मे आया था और फिर 2150 वष के बाद अब कुभ राशि मे आया है।

सन् 1985 मे 388 वष जमा किये और फिर 2373 की गिनती मे से 2150 वर्ष मनफी किये (घटाये), तो सामने 223 वष आये, सूरज को कुभ राशि मे प्रवेश किये हुए।

और कीरो के मुताबिक सूरज जब एक राशि मे से दूसरी मे कदम रखता है, तो सात सौ वष सधिकाल के होते हैं जो दुनिया मे भयानक और अलौकिक तब्दीलियो का कारण होते हैं।

यह तो जान लिया कि इस समय हमारी दुनिया सात सौ वष के सधि काल से गुज़र रही है, जिसमे से 223 वर्ष गुज़र चुके हैं और 477 वर्ष बाकी हैं। लेकिन जो वष बाकी हैं, उनकी सूरत कैसी होगी और कुभ राशि का स्वामी शनि, सूरज के कदमो को कैसी खुशआमदीद कहेगा—उसकी दास्तान पढ़ी, तो देखा कि आ कापती हुई लकीर अभी मेरे मन मस्तक से गुज़री थी, वह सामने खलाअ (शून्य) म खड़ी हस रही थी।

आग की इस लकीर की हसी भयानक भी थी, अलौकिक भी। और वह कह रही थी— 'दुनिया के ज़लज़ले कई रास्ते अख्तियार करेंगे धरती के कई टुकड़े लावे में लिपट जायेंगे। कई देश मख सीत (बेहद ठडे) हो जायेंगे और यह तब्दीली कई रेगिस्तानो को हरियाली बख्श देगी और खाये हुए अतलांटिक के समदरी खडहरों मे से, धरती के कुछ टुकडे सतह पर आ जायेंगे "

और कीरो के होठ उस आग की लकीर मे हसते-कांपते कह रहे थे—"अमरीका का पूर्वी भाग मौसम के लिहाज से इतना सीत हो जायेगा कि वहां रहना मुश्किल हो जायेगा। साथ ही आयरलैंड, ब्रिटेन, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क और उत्तरी रूस, जर्मनी, फ्रांस और स्पेन इतने यख हो जायेंगे कि इनसानी रिहाइश वहा मुश्किल हो जायेगी। और, दूसरी तरफ कई रेगिस्तान हरियाले हो जायेंगे। खासकर मिस्र और उसके साथ लगते देश हरे-भरे हो कर दुनिया की तहज़ीब का केन्द्र बन जायेंगे।"

शनि किन हथियारो से इस दुनिया का सघार करेगा और फिर किन हथियारो से इसका निर्माण करेगा, इसी इल्म की प्यास थी कि मैंने मध्यप्रदेश के पडित कैलाशपति जी को पत्र लिखा, जिसके जवाब मे 11 दिसबर, 1985 का लिखा हुआ उनका खत मिला—"तुम्हारा ऋषिमन पूरी तरह जाग उठा है और अब आत्मा के वक्री होने का प्रसग जानना चाहता है। सूरज आत्मा का प्रतीक है। यह बहुत दिलचस्प व्याख्या होगी, पर आमने-सामने बैठ कर बातें करने से होगी"—और फिर, यह उनकी मेहरबानी कि उन्होने ऐसा दिन दूर भविष्य के किसी इकरार पर नही छोड़ा, वह 23 दिसबर की सुबह दिल्ली आ गये, और जब व्याख्या की मुद्रा मे बैठ गये, तो कहने लगे—

"सौरमडल मे सूरज स्थिर बिन्दु है। चलती तो पृथ्वी है, सूरज की परिक्रमा करती है। बाकी सब ग्रह भी सूरज की परिक्रमा करते हैं। और पूरा सौरमडल अनन्त की परिक्रमा करता है। जहा सूरज का भी चलना होता है।

"जैसे सप्तऋषि का भी राशिमडल है, वह भी एक राशि मे से दूसरी में जाता है, उसी तरह कोई भी राशिमडल किसी भी ग्रह मडल की परिक्रमा कर रहा हो, उसके अश 360 ही रहेंगे और उनके बारह हिस्से किये जा सकते हैं।

"लेकिन सूरज के वक्री होने का जो सवाल है, वह हमारे सौरमडल के सिद्धांत-ज्योतिष मे नही है। लेकिन खगोल मे सूरज को गति आश्रित सिद्धांत माना गया है। उसका प्रभाव फलित मे देखें, तो सूरज की प्रतीक आत्मा के अर्थ को जानना होगा "

और कैलाशपति जी मग्न मन कहने लगे—"मिथिहासिक तौर पर सूरज की जानकारी वेदों से पहले किसी ने नहीं दी। वेद वाक्यो मे सूरज को दुनिया की आत्मा कहा गया है। इस रूप मे सूरज के वक्री प्रभाव का अध्ययन करें, तो दुनिया पर पडनेवाला प्रभाव स्पष्ट हो जायेगा "

मैंने हसकर कहा—"जब चिन्तन नेगेटिव हो जाये, नकारात्मक, जरूर वही प्रभाव वक्री प्रभाव के अर्थों में हो जायेगा।

वे कहने लगे—"यकीनन इसी प्रभाव से जानना होगा। बारह राशियो को सामने रखना होगा। और कल्प, मनवतर और युगीन सवतों के अर्से की इकाई,

राशियो के अर्से के कालखड म दखनी होगी । वही कीरो ने देखा है और एक राशि से गुजरने का अर्सा 2150 वष गिना है । साथ ही हर राशि मे सूरज का फलित होना बताया है । और वतमान मे, उसका कुभ राशि मे प्रवेश, दुनिया में होने वाली घटनाओ के अर्थों म माना है । इसी को उसने सूरज का वक्री होना कहा है "

पूछा—"मानती हू, ज्योतिप म व्यक्ति की आत्मा को सूरज का बिंब माना गया है, लेकिन क्या आत्मा वक्री हो सक्ती है ?"

वे कहने लगे—"आत्मा अपन आप मे निर्विकार सूरज की तरह अग्नि शिखा होती है । अग्नि शिखा के रूप मे चेतना उसका चिहृमय रूप है । लेकिन उसके वक्री होने का सवाल इस तरह है, जिस जीव आत्मा, महा आत्मा परम आत्मा का भेद फलित मे रहता है । आत्मा इनसानो और पशु पछियो मे एक-सी होती है, परम आत्मा क शाश्वत अश के रूप में । लेकिन वह पल, वह क्षण आत्मा का वक्री पल-क्षण होता है, जब इनसान, इनसानी सूरत त्याग कर पशु सूरत अख्तियार करता है "

और कैलाशपति जी ने मिसाल के तौर पर रामचरितमानस की वह कथा सुनायी, जब काकभुशुडि ने उज्जन के मन्दिर मे शिव की आराधना की थी । एक बार उसी साधना के दौरान उसक गुरु आये, तो अभिमान की काली छाया काकभुशुडि के गिद लिपट गयी । वह गुरु को प्रणाम करने के लिए उठा नही । गुरु तो शांत स्वभाव थे, उन्होंने इस अवज्ञा पर ध्यान नही दिया, लेकिन शिव नाराज हो गये और काकभुशुडि से कहने लगे—"इतना अहकार ! तुम्हारे गुरु आये और तुम अजगर की तरह बैठे रहे । अब तुम अजगर हो जाओ और किसी पेड के खोह म बैठे रहो !"

"हां, यह तकमय बात थी, और वह अभिमानी क्षण ही आत्मा का वक्री क्षण हो गया ।"

कैलाशपति जी कहने लगे—' फलित ग्रथो म वक्री ग्रहो का कथन और उनका फल, पूवजम के कर्मों का उदय होना माना जाता है, वेदो म सूरज को चराचर आत्मा का अथ वक्री होने का फल लागू करता है । पर इनसान की उम्र सौ वष तक सीमित होती है, इसलिए 2150 वर्षों का प्रभाव किसी इनसान की जाती जिदगी के अर्थों मे नही है । इस भ्रमण काल का प्रभाव पूरे जगत के अर्थों मे है "

और वे विस्तार स कहने लगे—"शरीर की यात्रा सौ वष के करीब होती है, पर आत्मा की यात्रा लाखो बरस की होती है । इसलिए पूवजमो के सस्कार, आने वाल जमो पर असर रखते हैं । वही काल गिनती लम्बे समय मे 2150 वर्षों के एक कालखड में की गयी है । जैसे धतराष्ट्र ने अपने सौ जमो के ज्ञान की पुष्टि की, पर अपने सौ पुत्रो की मौत का कारण नही जान पाया, तो उसे 101वां पूर्वजम दिखाया गया, जिसके कम का फल उसके सौ पुत्रो की मौत थी ।

इस 101 को सौ वर्ष से गुणा करें, तो दस हजार हुआ। यह करीब चौथाई काल खंड हो गया, 2150 वर्षों के कालखंड का जिसमे उसने अपने कर्म का कुफल भोगा। और महाभारत की लड़ाई मे जो मारे गये, अपने ही भाई-बंधु, वह आत्मा के वक्री होने की दृष्टि का फल था"

मैंने पूछा—"और कीरो ने हर तरह के जलजले के साथ, जो रेगिस्तानो का हरियाली मे बदल जाना कहा है, खंडहरो पर हो रहे निर्माण के अर्थों मे, वह ?"

कैलाशपति कहने लगे—"यह महाविनाश और महानिर्माण का रहस्य है। ये दोनो शक्तियां संग-संग रहती हैं"

पूछा—"मान लिया कि यह सूरज के महाकाल की बात है, रोजमर्रा ग्रह गोचर की नही। इनसान काल में जीता है, आत्मा महाकाल मे। लेकिन क्या गोचर से बाहर भी कुछ है ?"

कैलाशपति हंस दिये, कहने लगे—"सिर्फ ब्रह्मशक्ति की आराधना ही उसका कुछ पता दे सकती है और कोई शक्ति नही।"

फिर पूछा—"और जो कुछ गोचर के भीतर है, उसमे, सूरज के, या ऐसे कहूं कि आत्मा के वक्री होने का क्षण बदला जा सकता है या नहीं ? यह इनसान के लिए संभव है या नही ?"

कहने लगे—"गायत्रीसाधना सूरज की उपासना है। वही सूरज के यानी आत्मा के वक्री होने के क्षण से इनसान को मुक्त कर सकती है।"

2150 वर्षों के कालखंड की गणना का सवाल अभी भी मेरे मन मे था, पूछा, तो कहने लगे—"ग्रह गति को लंबे काल मे देखें तो युगों का अहसास हो सकता है, लेकिन विराट के इन सूक्ष्म तत्त्वों को आत्मा की अनंत काल की साधना से ही पहचाना जा सकता है। तभी भविष्यगामी अर्थ सामने आते हैं। सूरदास ने कालखंड की ओर इशारा किया है—'सत वर्ष लौं सतयुग व्यापे धर्म की बेल बढ़े एक सहस्र नौ सौ के ऊपर ऐसा योग पड़े'—लेकिन सवाल उठता है कि उन्होंने एक हजार नौ सौ साल का इशारा किस संवत् मे किया है ? ईसवी सन् उनके समय मे प्रचलित नहीं था। विक्रमी संवत् से तो वह आज 2042 हो चुका है। इसलिए लगता है कि वह राष्ट्रीय शक संवत् है। उसे शक और शकारि संवत् कहते हैं। उसके वर्ष अब 1907 हो चुके हैं। सूरदास ने एक ही पद लिखा है—निर्माण का, सतयुग की आमद का। लेकिन इस आमद से पहले मानव चेतना सर्वनाशात्मक होकर विनाश की ओर बढ़ता है। विनाश के साथ ही निर्माण होता जाता है। यही पहलू कीरो ने लिया है दुनिया की आत्मा के वक्री होने का। जब उसने महाविनाश की तरफ भी जाना है—महानिर्माण की तरफ भी"

मुझे लगा—जो एक कामी और गुप्त गंभीर साधना शून्य मे चल रही है वह महाविनाश और महानिर्माण का साक्षी हो सकने के लिए, स्वयं को तैयार कर रही है

अक चालीस

"इस दुनिया से ऊपर की सतह पर एक और ऐसी दुनिया है जिसे 'अजायब घर' कहा जा सकता है। वह अक चालीस के फासिले पर है "

कोलिन विलसन ने एक धुरा विज्ञानी लैथब्रिज की खोज को सामने रखते हुए लिखा है— 'लैथब्रिज के लम्बे तजुरबो न उसे इस फैसले पर पहुचा दिया कि मौत के बाद, एक और दुनिया चालीस अक के फासिले पर बसी हुई है। और उससे आगे चालीस अंक के फासिले पर एक और। और उसस आग फिर चालीस अक के फासिले पर एक और, और उससे आगे "

इस 'और आगे' तक लथब्रिज का 'पैण्डुलम' नहीं पहुच सका था।

ज़मीनदोज़ पानी का ठिकाना ढूढ़ लेने के इल्म से लैथब्रिज को प्रेरणा मिली थी, और उसने बड़े से लाटू जैसा एक पण्डूलम' तैयार किया था—ज़मीनदोज़ धातुओं का ठिकाना ढूढ़ने के लिए

कोलिन विलसन ने उसके तजुरबों को विवरण-सहित लिखा है कि ज़मीनदोज़ गधक की शक्ति सात इच की दूरी से जानी जा सकती है। सात इच की दूरी से पैण्डूलम उसकी शक्ति से घूमने लगता है। इस तरह चादी की शक्ति को बाइस इच की दूरी से पहचाना जा सकता है

और अलग-अलग धातुओ की अलग-अलग शक्ति को पहचानते हुए अचानक लथब्रिज न अगली दुनिया का भेद जान लिया। एक नयी खाज उसके सामने आई कि—जिस धातु को जितने इचा की दूरी से पहचानने के अक तयार हुए थे, अगर उनम चालीस इच और जमा कर दिए जाए, तो वे धातुए, उस दूरी स फिर अपनी-अपनी शक्ति का पता देने लग जाती हैं। जैसे गधक सात इच की दूरी से पैण्डूलम को घुमा सकती है और वही 47 इच की दूरी से उसे फिर घुमा सकती है, परन्तु केन्द्र से ज़रा से फासिले पर रह कर

इस 'ज़रा से फासिले को लथब्रिज ने एक और डायमैंशन' के साथ जोड़ा है। यानि इस दुनिया से ज़रा से फासिले पर बसी हुई अगली दुनिया से। जिसका अस्तित्व चालीस इच की गिणती से पता चलता है

यह चालीस इच की गिणती, चालीस योजनो की प्रतीक है? या फासिले के कौन से मापदण्ड की प्रतीक? यह अभी खोज के हवाले है। पर जो लैथब्रिज की पकड मे आया है, वह चालीस का अक है

इस अक को उसने एक और तजुरबे के साथ भी अजमाया था। जब उसने किसी प्राचीन जग मे इस्तेमाल किए गए पत्थर, समाल घर से लाकर अपने पैण्डूलम के सामने रखे, तो ठीक चालीस इच के फासिले से उनकी शक्ति पैण्डूलम को घुमान लग पडी

उस वक्त लैथब्रिज ने नदी के किनारे से साधारण पत्थर लाकर जब अजमाये तो उनपे वह कोई शक्ति नही थी, जो पैण्डूलम को घुमा सकती।

इससे उसन जाना कि जिन पत्थरो पर गुस्से और मौत का असर अकित हो चुका था सिर्फ वही पत्थर पैण्डुलम को घुमाने की शक्ति रखते थे।

और इससे लैथब्रिज ने जाना कि मौत की घटना को चालीस इच से पहचाना जा सकता है। यानि इस दुनिया म हुए मौत के हादसे को और उसके बाद अगली दुनिया की हद शुरू हो जानी है

कोलिन विलसन ने बडे विस्तार से लैथब्रिज की खोज का जिक्र किया है, जिसके मुताबिक—दस, बीस, तीस और चालीस अक इतनी अहमियत रखते हैं कि दुनिया की हर चीज को उनके अपने घेरे मे पहचाना जा सकता है। जैसे—सूरज, रोशनी, आग और सच्चाई को दस इच से। धरती, जिन्दगी, गरमाइश और बिजली को बीस इच से। पानी, चन्द्रमा, आवाज और हाइड्रोजन को तीस इच से। और हवा सर्दी, नीद, झूठ और मौत को चालीस इच से।

यही गिणती दिशा की पहचान देती है। दस का अक पूर्व की पहचान देता है, बीस का अक दक्षिण की, तीस का अक पश्चिम की, और चालीस का अक उत्तर दिशा की।

लैथब्रिज के मुताबिक अगली दुनिया एक नही कई हैं। दूसरे लफ्जो मे इसी दुनिया की एक और सतह है, फिर एक और सतह, और फिर और और और लैथब्रिज ने एक सतह को चालीस के अक के साथ जोडकर, फिर दो बार चालीस, चालीस के अक से यानि अस्सी के अक से एक और सतह का राज ढूढा। पर उससे आगे जो कुछ उसकी सोच मे था, वह पैण्डूलम के सामर्थ्य मे नही था। उसकी रस्सी या तार को इतनी दूरी स सभालकर सन्तुलन मे नहीं रखा जा सकता था

एक और निशान उसने ढूढा कि चालीस इच स छोटा पैण्डूलम वक्त की थाह नहीं दे सकता। जिसका कारण वह सोचता है कि हमारी यह दुनिया वक्त के साथ जुडी हुई है जो हमेशा हरकत मे रहता है। और उसके अनुसार इससे अगली दुनिया एक सदीवी वर्तमान है जो एक तरह का अजायबघर है, जहां हमारी

दुनिया के इतिहास की हर घटना उसी तरह कायम अवस्था मे है जैसे घटी थी। और उससे अगली सतह पर यानि अस्सी के अंक से आगे, वक्त तैरता हुआ लगता है, हमारी दुनिया के वक्त की तरह।

और उससे अगली सतह, यानि 120 के अंक के बाद जो दुनिया है, उसे लैथब्रिज ने 'पूर्ण अन्धकार' की सूरत मे अनुमानित किया है।

कोलिन विलसन ने यह सब विवरण देते हुए, इनसान की अतीन्द्रिय शक्ति को इनसान के उस सामर्थ्य के साथ जोड़ा है, जो चालीस के अंक की अपनी हदबन्दी से, आगे जाकर उस सतह को देख सकता है, जिस सतह को लैथब्रिज ने अजायबघर कहा है। और जहां इस दुनिया की हर घटना, हर आवाज, एक कायम अवस्था मे है।

यह एक वैज्ञानिक सच्चाई है कि जिनको कभी अपने पूर्वजन्म का झावला दिखाई दे जाता है, या इतिहास की किसी और घटना का दृश्य, या कोई आवाज सुनाई दे जाती है, उनके किसी अपने तत्त्व में, किसी क्षण उस अगली सतह को देख आने का 'सामर्थ्य' आ जाता है।

यह 'सामर्थ्य लफ्ज इनसान के जिस्म की बिजलई शक्ति से जुड़ा हुआ है, जिसकी तरंग कितनी दूर जा सकती है, यह उसकी शक्ति से सम्बन्धित है

"काम की उत्तेजना भी बिजलई शक्ति को जुम्बुश देती है। कोलिन विलसन ने यह विज्ञान दिया है परन्तु तन्त्रविज्ञान के बारे में कुछ नही कहा। मैं सोचती हूं कि तन्त्रविज्ञान मे इनसान को सभोग की अवस्था मे ले जाकर यानि उसको तरंगित करके, फिर बिन्दु को खारज करने की जगह, किसी नाड़ी द्वारा, उसे अपने मस्तक मे ले जाने की जो साधना है, वह जरूर इसी बिजलई शक्ति के साथ जुड़ी हुई है।

समय का सिद्धान्त

10 अप्रैल, 1986 की शाम थी, जब श्री वीरेंद्र मागो ने मेरी जाती जिन्दगी मे किसी होने वाले हादसे की पेशीनगोई की—"देख रहा हूँ—आप किसी और मुल्क मे गयी हैं जहा आपके हाटल के कमरे म एक औरत दाखिल हुई है, जो किसी साजिश मे शामिल है। पूरी साजिश म सात आदमी हैं, जो आपके सामने नहीं आये। जो सामने आयी है—वह सिर्फ एक औरत है

"कोई सात आदमी हैं, जिनकी नजरें बदूको की तरह आप पर तनी हुई हैं

"फिर आपको मैं एक 'व्हील चेयर' पर देख रहा हूँ। और यह यकीनी बात है कि आपको जिस तारीख को उस मुल्क से वापिस आना था, उससे बहुत पहले मजबूरा आपको लौटना पड रहा है

"और यह भी यकीनी बात है कि आपके जिस्म का एक अग या तो कट गया है, या फिर बहुत जख्मी है "

"यह एक भयानक इत्तलाह थी, जिस पर बेयकीनी करने का मुझे कोई कारण नजर नही आ रहा था

"यही श्री मागो थे—जिन्होंने करीब दो साल पहले मेरे पूर्व जन्म का ठीक वही हादसा बयान किया था, जो मैं अपने सपने मे देख चुकी थी, और अपनी डायरी मे लिख चुकी थी "

'और फिर दो साल के अर्से म उन्होंने भले ही मेरे किसी जाती मामले से ताअल्लुक रखती हुई किसी हादसे की पेशीनगोई नही की थी, पर मैं उनकी शक्ति के और कई मोअजज़े देख चुकी थी

'याद आ रहा था—मेरे घर जब उनकी श्री कैलाशपति जी के साथ पहली मुलाकात हुई थी तो पहली मुलाकात म ही उन्होंने अतीन्द्रिय शक्ति के साधक श्री कैलाशपति जी से कहा था—'गुरु जी। आपके पिछले जन्म के आश्रम में आपके चार चेले थे और पांचवा मैं था, जिस उन चारो ने मरवा दिया था। मैं आपका मजूरे-नजर था और उन्होंने हसद मे आकर मुझे मरवा दिया था।

फिर वह चारों आपकी गद्दी के लालच मे आपके ही दुश्मन हो गए थे जो आपके इस जन्म मे भी, कहीं आपके आसपास रहते हैं, और पूर्वजन्म की दुश्मनी के एहसास से भरे हुए हैं मैं आपको आगाह करता हू कि इस जन्म में भी वह आपके खैरख्वाह नहीं। साथ ही सामने देख रहा हू कि दूध का एक गिलास भरा हुआ है, जिसमें जहर है, और वह आपको पिलाना चाहते हैं मैं आपको आगाह करता हूँ कि आप उनके हाथ से कभी दूध का गिलास नही पीजिएगा। "

"और, इसके जवाब म कैलाशपति जी ने कई मिनटो की खामोशी मे लीन होने के बाद कहा था—' मैं जानता हू। उन चारो को इस जन्म मे पहचानता भी हूँ। आपको नहीं पहचान पा रहा, पर उन्ह अच्छी तरह पहचानता हू और दूध के जिस गिलास के बारे मे आप कह रहे हैं, वह हादसा हो चुका है। मैंने उनके हाथो दूध का गिलास लेकर पी लिया था। फिर बेहोश हो गया था, पर उस बेहोशी के दौरान वह दूध क की सूरत मे मेरे अदर से निकल गया था और मैं बच गया था "

यू तो श्री मागो की शक्ति के मैंने और भी मोअजजे देखे थे पर जो कैलाशपति जी की हाजिरी मे हुआ था, उसने मुझे इस कदर हैरान किया, कि परा शक्तियो मे मेरी दिलचस्पी पाताल जितनी गहरी उतर गई ।

बोद्ध-गया के श्री ललितप्रसाद सिंह भी एक बहुत बडे साधक हैं। तन्त्र की व्याख्या, जो उन्होंने किताबी सूरत मे लिखी है, वह किताब अपने आप में एक कीमती दस्तावेज है। एक बार जब वह मुझसे मिलने आये तो बातचीत के दौरान श्री मागो का जिक्र आने पर, उन्होंने श्री मागो से मिलना चाहा था। जानती थी कि वह बहुत कम किसी से मिलने की ख्वाहिश रखते हैं। पर जब उन्होंने यह ख्वाहिश जाहिर की—तो अगली मुलाकात के दौरान मैंने श्री मागो को बुला लिया था। साथ ही मन मे एक डर-सा महसूस हुआ था कि ऋषि-साधना जैसी साधना करने वाले श्री ललित प्रसाद जी के सामने—श्री मागो की शक्ति ठहर भी पाएगी या नही ? और उस दिन मैंने फिर एक मोअजजा देखा, जब श्री मागो ने कहा—"मैं आपको कई जन्मो से साधना करते हुए देख रहा हू। आप मुझे दधीचि ऋषि का नया जन्म दिखायी दे रहे हैं। पर मैं आपको एक खतरे से आगाह करना चाहता हू कि आपके साथ एक भयानक हादसा होने वाला है। एक वीरानी-सी मेरे सामने दिखायी दे रही है, और एक नदी भी, जहा कुछ लोग आपको अगवा करके ले गये हैं "

और जवाब मे श्री ललित प्रसाद सिंह जी ने कहा था—"कई जन्मो से साधना कर रहा हूँ, यह मैं भी जानता हू। पर दधीचि ऋषि हूँ या नहीं, यह नहीं जानता। पर जिस खतरनाक हादसे की आपने बात की है, वह हादसा मेरे साथ हो चुका है। ठीक इसी दृश्य मे जो दृश्य आपको नजर आया है "

ये दो मोमजज़े ऐसे थे कि 10 अप्रैल, 1986 की शाम जब श्री मागो ने मेरी ज़ाती ज़िन्दगी में आने वाले हालात की पेशीनगोई की तो उस पर किसी तरह का संदेह करने का कोई कारण नहीं था

पूरे बारह दिन मन की अजीब हालत में गुज़रे, और 22 अप्रैल की दोपहर में जब मैं कई बरस पहले पढ़ी हुई एक किताब यूं ही दोबारा देख रही थी, तो कोलिन विलसन की उस किताब में समय के सिद्धांत के बारे में वह सफ़े सामने आ गये, जिनमें इनसानी-नज़र, कभी-कभी, अपने सीमित सामर्थ्य से आगे जाकर, धरती की उस सतह से बीत चुके समय, या आने वाले समय के वह दृश्य देख आती है, जो दृश्य एक पुरा-वैज्ञानिक लैथब्रिज की खोज के मुताबिक—हमेशा क़ायम हालत में रहते हैं

लैथब्रिज की खोज है कि हमारी इस दिखायी देने वाली दुनिया में समय का जो हिसाब लागू होता है, वह उस दूसरी अदृश्य सतह पर लागू नहीं होता। और उससे ऊपर की तीसरी सतह पर कोई हरकत इतनी तेज़ होती है, जिसका कोई दृश्य नज़र की पकड़ में नहीं ठहरता।

यही समय का सिद्धांत था, जिसका एक पहलू यह था कि हमारी दिखायी दे रही दुनिया की सीमा रेखा से आगे जो क़ायम समय की सतह है, उसमें से जो दृश्य सामने आया है, वह हमारे हिसाब से किसी बीते हुए काल का है, या आने वाले काल का, इसका निर्णय कई बार कठिन हो जाता है

इसी सिद्धांत की एक मिसाल देते हुए कोलिन विलसन कहता है—"जैसे एक कहानी एक किताब की शक्ल में लिखी हुई है। कहानी का किरदार किताब के आखिर में ज़िन्दा नहीं रहता। पर उस किताब के आखिरी सफ़ों में से अगर कोई सफ़ा सामने आए, तो उस किरदार की मौत का इल्म सामने आएगा। पर यदि उस किताब के पहले सफ़ों में से कोई सफ़ा सामने आए, तो उस किरदार के ज़िन्दा होने का इल्म सामने आएगा "

और यह मिसाल देते हुए कोलिन विलसन लिखता है कि खलाई शक्तियों की एक खास बनावट में कायम हुई आवाज़ें या दृश्य, किस जगह से नज़र आए हैं यह उस पर मुनासिर है। और यही जगह होती है—जहां से कई बार यह फ़ैसला उल्टा हो जाता है कि वह दृश्य, हमारे समय के हिसाब से, बीते हुए समय का है, या आने वाले समय का

इसी समय के सिद्धान्त का कोलिन विलसन ने एक और पहलू पेश किया है कि इनसानी नज़र अगर दूसरी सतह से भी गुज़र कर उस तीसरी सतह पर पहुंच जाए—जहां एक हरकत चार गुना तेज़ हो रही है, तो वहां से लौटते हुए, जो कुछ दूसरी सतह पर है, वह उल्टा नज़र आएगा। ठीक उसी तरह, जिस तरह एक धीमी रफ़्तार से चल रही गाडी के पास से, एक बहुत तेज़ रफ़्तार की गाडी गुज़र

रही हो, तो उस वक्त धीमी रफ्तार से चलती हुई गाडी आगे की ओर नहीं, पीछे की ओर चलती लगती है। हालांकि वह भी आगे की ओर चल रही होती है पर उस घडी जो एहसास होता है, वह उल्टा होता है। उसी तरह जो नजर तीसरी सतह से लौटते हुए, दूसरी सतह का दृश्य देखती है, वह उल्टा नजर आता है। और जिस घटना को हम बीते हुए समय की समझते हैं, वह किसी आने वाले समय की होनी है, या इसके विपरीत, जिस घटना का हम आने वाले समय की समझते हैं वह किसी बीत चुके समय की होती है

यही सिद्धान्त था, जो पढ रही थी—कि किताब हाथ से छूट गई। ज़हन मे, पिछले बारह दिनो से रेंगती हुई एक परेशानी—एक स्पष्टता बनकर मेरे सामने खडी हो गई, "श्री मागो ने जिस हादसे की पेशीनगोई की थी, वह दरअसल बीते हुए समय का हादसा था। एक नहीं, तीन अलग अलग हादसे थे, जो एक दृश्य मे समाए हुए थे "

एक एक हादसा याद आने लगा—

श्री मागो ने कहा था—"मैं आपको एक व्हील चेयर पर देख रहा हू"—2 मई, 1983 को जब मैं भारतीय भाषा परिषद के समारोह मे कलकत्ता गई थी, तो अचानक जिगर मे ऐसा दर्द उठने लगा, कि मुश्किल से ही मच की कुर्सी से उठकर अपनी तकरीर के लिए माईक के सामने खडी हो पाई थी। और उस शाम मेरी मेहरबान मेज़बान इतना घबरा गई थी कि कलकत्ते के दो डाक्टरो को बुलाकर उसने मेरा मुआइना करवाया था। उन डाक्टरो के मुताबिक मेरे जिगर मे एक ऐसा फोडा हो गया था, जिसका आप्रेशन बहुत जल्दी होना चाहिए था। हो सके तो दूसरे दिन ही। मैं आप्रेशन के लिए नहीं मानती थी और वापिस दिल्ली आना चाहा था। तब सुबह के पहले हवाई जहाज़ की टिकट का बन्दोबस्त किया गया, और डाक्टर की हिदायत के मुताबिक मुझे एयरपोट से 'व्हील चेयर' में ले जाया गया। साथ ही इमरोज़ को लाइटनिंग कॉल की गई, कि वह जब दिल्ली एयर पोट पर मुझे लेने के लिए आए, तो वहा व्हील चेयर का बन्दोबस्त होना चाहिए

सो यह व्हील चेयर वाला दृश्य था, जो आने वाले समय का नही, बीते हुए समय का था

और श्री मागो ने जो कहा था वह ठीक कहा था, "मैं आपको किसी और मुल्क मे देख रहा हू, और यह भी कि जिस तारीख आपको वहां से लौटना था, उससे बहुत पहले आपको मजबूरन लौटना पड रहा है और साथ ही दिखायी दे रहा है कि आपके जिस्म का एक अग या तो कट गया है, या बहुत ज़ख्मी है "

मेरे सामने 1983 के जून महीने की वह घटना आ खडी हुई, जब मैं फ्रांस

गई थी, और पहुचने के तीसरे दिन जब वहां के म्यूजियम लूव को देखने के लिए जा रही थी, तो लूव के सामने, सडक में एक टूटे हुए हिस्से मे मेरी चप्पल अटक गई थी, जिससे गिरने पर मेरी दायी बाह की हड्डी कधे के पास से इस तरह टूट गई थी कि छह दिन हस्पताल और होटल के कमरे मे बन्द रहकर जब मैं एक मजबूरी की हालत मे हिन्दुस्तान लौटी तो मेरी जख्मी बाह पट्टियो मे बधी हुई थी

सो यह—जख्मी हालत मे किसी देश से लौट आने वाला दृश्य था, जो बीते हुए समय का था

और श्री मागो की पेशीनगोई का तीसरा हिस्सा जिस साजिश से तआल्लुक रखता है—वह भी एक हकीकत है पर आने वाले समय की नहीं, बीते हुए समय की। उन्होंने जो कहा था कि जो सात आदमी इस साजिश मे शामिल हैं, वह आपके सामने नही, पर जो सामने है, वह एक औरत है। और देख रही थी कि आज भी मैं सिर्फ उस एक औरत को पहचानती हू पर उसके पीछे जो सात आदमी हैं उन्हें मैं आज तक नही जान पाई। सिर्फ इतना भर जान पाई हू कि वह हैं।

सो यह समय का सिद्धान्त है, जो पराशक्तिया रखने वालो को कई बार काल निर्णय के भ्रम मे डाल जाता है

इस बात की ताईद के लिए वह घटना भी याद आई, जब श्री मागो ने कैलाशपति जी को दूध का गिलास पीने के खतरे से आगाह किया था, पर जवाब मे कैलाशपति जी ने कहा था कि वह हादसा होने वाला नही हो चुका है। और जब श्री मागो ने ललितप्रसाद सिंह जी को अगवा किए जाने वाले हादसे से खबरदार किया था, तो उन्होने भी कहा था—वह हादसा हो चुका है।

कोलिन विलसन ने यह अचम्भा भी दर्ज किया है कि समय के सिद्धान्त मे एक मोअजजा यह भी है कि कुछ पराशक्तिया रखने वाले ऐसे लोग हैं—जिन्हें सिर्फ आने वाले काल का दृश्य दिखायी देता है। और कुछ ऐसे हैं—जिन्हें हमेशा बीते हुए काल का दृश्य दिखाई देता है।

बहुत कुछ अपार है—जिसका पार नही पाया जाता।

इकतालीसवा अक

23 अप्रैल, 1986 की सुबह थी, मेरी बेटी कन्दला के जन्म-दिन की सुबह। मैंने और इमरोज ने उसे सफेद रजनीगन्धा के फूल दिए। नवराज, अलका और दोनो छोटे बच्चो शिल्पी और अमान ने उसे सुर्ख गुलाब का एक एक फूल दिया और उस वक्त फूलों की महक मे लिपटी हुई बेटी ने कहा—"आज सुबह मुझे बहुत ही अजीब-सा सपना आया। देखा, आसमान से पूरे का पूरा सूरज नीचे धरती की तरफ चला आ रहा है। फिर देखा कि वह धरती पर गिरते ही टुकडे-टुकडे हो गया है। और वे टुकडे पिघलकर एक सुनहरी नदी की तरह बहने लगे नदी स कोई तपश नहीं आ रही, बल्कि एक सुनहरी सा पानी गिरता नजर आ रहा है

पर मैं एक पल के लिए डर जाती हू कि अब जब यह सूरज आसमान से गिर पडा है, आसमान हमेशा के लिए अधेरा हो जाएगा उस वक्त एक आवाज आती है, "यह सूरज पुराना हो गया था, इसलिए इसने टूटना ही था। पर और कई सूरज हैं, अब आसमान पर नया सूरज उगेगा ।"

यह एक अलौकिक सपना था। और सुनते ही मुझे एहसास हुआ कि कन्दला को ऐसा अलौकिक सपना ठीक उसके चालीसवें जन्मदिन पर आया है। यह चालीस अक किसका प्रतीक है ?

लैथब्रिज की खोज सामने आई कि इस नजर आती दुनिया को चालीस अक से जाना जा सकता है। इसके बाद इकतालीसवें अक से वह दुनिया शुरू होती है, जो हमे दिखाई नहीं देती

यह राज मैंने मौलाना हफीजुर रहमान साहब से जब पूछा था कि हर सिद्धि के लिए चालीसा काटने का क्या भेद है' तो उनके एक साथी मौलाना साहब ने कहा था—' कोई बच्चा जब गर्भ मे पडता है, तो पूरे चालीस दिन एक ही हालत मे रहता है। एक कतरे की सूरत मे। कतरे मे पहली हरकत ठीक इकतालीसवें दिन शुरू होती है, जो आगे विकास करती है चालीस दिन अमल के होते हैं, रूह की तैयारी के, पर इल्म का कण इकतालीसवें दिन से नसीब होना

शुरू होता है ''

इसी राज को कुछ समझने के लिए, मैंने 'वैदिक विश्व दर्शन' को देखना शुरू किया, पर उसमे विवरण नही मिला, हवाला जरूर मिला कि ''विराट 40वॉ तत्त्व है ''

याद आया कि कीरो ने अकविद्या पर जो कुछ लिखा है, उसमें अको के रूहानी अर्थ भी लिखे हैं। वे रूहानी अर्थ देखे तो यह विवरण था—''यह ऊची मानसिक अवस्था का अक है जिसका सम्बन्ध मानसिक धरातल से है, मानसिक नजरिये से, इनसान की अपनी इच्छाशक्ति से। पर यह जरूर है कि यह अपने आप म पूरा है। अकेला और पूरा ''

लगा—'यही पूर्णता शायद लैथब्रिज की खोज के मुताबिक हमारी इस नजर आती दुनिया की वह हद है, जिससे आगे सलाई शक्तियो का वह क्षेत्र शुरू होता है, जो हमारे सीमित सामर्थ्य को नजर नही आता '

यह इत्तफाक था कि मैंने और इमरोज ने जब तोहफे के तौर पर कन्दला को एक नया पहरण दिया, तो उसके भाई और भाभी ने एक वह दीवार घडी दी, जिसे साल मे सिर्फ एक बार चाबी लगानी पडती है

उस वक्त कन्दला को सपने की अलौकिकता एक और पहलू से भी नजर आने लगी ''यह घडी किसी नये वक्त की प्रतीक है नये सूरज के नये वक्त की प्रतीक ''

कन्दला की उम्र के चालीस साल उन आखो की तरह हैं, जिनमे किसी सपने ने घोसला डालकर नही देखा। उसने एम० ए० की पढाई बीच मे ही छोड दी कि कही नौकरी नही करनी, सिर्फ शादी करनी है, और घर बनाना है। लेकिन दस साल एक नाखुश ब्याह मे बीत गए। तलाक हुआ, तो कोख के दोनो बच्चो से भी बिछुडना पडा। फिर एक साल की और पढ़ाई स्कूल की नौकरी की, तो उस छोटी-सी नौकरी का बडा ही छोटा-सा भविष्य दिखाई दिया, जिससे उदासीन होकर उसने एक और कोर्स किया—ताज पैलेस होटल के हाउस कीपिंग का। पर वह नौकरी उसके स्वभाव के साथ मेल नही खाती थी। ऐसे एक और साल, एक और पढ़ाई मे लगाना चाहा, पर उस पढाई की शर्तों के साथ उसकी पिछली पढ़ाई का दर्जा मेल नही खाता था, इसलिए किसी शहर और किसी प्रान्त मे भी दाखिला मुमकिन नही था। फिर एक साल उसने एक और तालीम हासिल की, जिससे मिली नौकरी का यह पहला महीना था, जब वह नौकरी पक्की क़रार दी गई थी।

अचानक एक वाक्य कन्दला के मुह से निकला—''अब मैं अपना कमरा

सजाऊंगी ।" यह एक वाक्य था, जिसकी मैं कई सालों से इन्तज़ार कर रही थी। लगा—यह शायद चालीस सालो की जमी हुई हालत से, आज इकतालीसवें साल के पहले दिन, पहली घडी, पहले पल, एक कतरा सिम आया है

लगा—'शायद यही राज है, चालीस सालो के बाद एक पुराने सूरज के टूटने का, और आसमान पर नया सूरज उगने का '

सकल्प की यात्रा

5 मई, 1986 की दोपहर को जब थोड़ी देर के लिए मैं सो गई थी, तो एक सपना आखो के सामने झिलमिला गया था—जिसमे खिलाई तरगों का बना हुआ पूरा आसमान देखा। नीचे धरती की ओर से नही, कही ऊपर से। झिलमिलाते कणो का एक फैलाव था, जो साप की चाल रेंगती हुई लकीरो की सूरत मे नजर आ रहा था। लेकिन मैं सपने मे ही हैरान हुई कि उस जाल से बने हुए फैलाव के ऊपर अलग से कुछ तरगें थीं, जो फैलाव के एक हिस्से मे बाए से दाए की तरफ बह रही थी

जागी तो आखो मे हैरानी बसी हुई थी—यह कैसा आलम था जो दिखाई दिया? और क्यो दिखाई दिया? क्या यह समय के हालात का कोई सकेत था? और जो तरगें अलग से बहती हुई दिखाई दी, उनका क्या अथ था?

यह सितारो के अक्षर और किरणो की भाषा मुझे पढनी नही आती, कुछ समझ मे नही आया कि मैं किससे पूछू कि यह सब क्या था?

और इत्तिफाक हुआ कि एक महीने के बाद जब 6 जून को मध्य प्रदेश के कैलाशपति जी दिल्ली आए, तो दूसरे दिन मैंने उन्हे यह सपना सुनाया

—काल गणना का मुझे कोई इल्म नही है, लेकिन वह कहने लगे—देखो! हमारे प्राचीन ग्रथो म साठ साल का चक्र गिना गया है, जिसे बिनसती वष कहते हैं। वह वष यानी वह साठ साल, तीन हिस्सो मे हुए हैं, जिनमे से बीस वष ब्रह्मा के गिने जाते हैं, बीस विष्णु के और बीस शिव के।

पूछा—"और उन बीस-बीस वर्षों की सूरत क्या होती है?"

वह कहने लगे—ब्रह्मा के बीस वष नवनिर्माण के होते हैं, जिनमे विनाश भी होता है, निर्माण भी। विष्णु के बीस वर्षों मे दुनिया मे कई नए आविष्कार होते हैं, जो ब्रह्मा के किए हुए निर्माण की शोभा होते हैं। और शिव के बीस वष उन सब कुछ को भोगने के लिए होते हैं

पूछा—"लेकिन आप यह बताइए कि आजकल हम किस देवता के रहमो-करम पर हैं?"

वह कहने लगे—"1977 का वर्ष शिव के बीस वर्षों का आखिरी वप था, उसके बाद ब्रह्मा के बीस वय शुरू हुए। आपके लफ्जो मे—हम आजकल ब्रह्मा के रहमोकरम पर हैं !"

कहा—"यानी विनाश और निर्माण के अमल से हम गुजर रहे हैं विनाश तो दिखाई दे रहा है, लेकिन निर्माण कब दिखाई देगा ?"

वह कहने लगे—'दोनों व्यवस्थाए साथ साथ चलती हैं, लेकिन बीस साल का आधा हिस्सा विनाश से भरा हुआ होगा, और फिर निर्माण काल का आधा हिस्सा प्रत्यक्ष दिखाई देगा "

मैंने हिसाब लगाया—करीब आठ साल हो चुके हैं, जो विनाश-प्रधान काल था, और यकीनन दो साल अभी रहते हैं—विनाश दशन के

मन म आया—शायद यही मेरे सपन मे एक प्रत्यक्ष दशन था, उन तरतीब मे बधे हुए रोशन कणो के ऊपर एक अलग-सी तरगो म दिखाई दे रही उन लहरो का जो एक साए की तरह उस रोशन कणो के ऊपर फैली हुई थीं। शायद वही विनाश का एक सकेत था—

याद आया—हमारे प्राचीन चिन्तन मे सकल्प को बहुत महत्ता दी गई है। यहा तक कि काल गणना मे भी सकल्प की गहराई को शक्तिशाली माना गया है। यही सकल्प के सिद्धात का सवाल मैंने कैलाशपति जी के सामन रखा तो वह कहने लगे—

"देखो ! सष्टि सम्वत् के 1955885087 वष पूरे हुए। अगर आज किसी ने सकल्प लेना हो, तो वह कहेगा, वर्तमान वर्ष विक्रमी सम्वत 2043 है और अमुक महीना है, अमुक नक्षत्र है "

मैंने बीच मे ही टोककर कहा—'आप इसे किसी तरह की अवज्ञा मत समझिएगा, आज 7 जून, 1986 का दिन है, इसे किसी सकल्प का दिन मान लीजिए और 'अमुक' लफ्ज़ कहने की जगह पूरा नाम लेकर बताइए !"

वह हस दिए। कहने लगे—"अच्छा ! आपके कमरे मे गणपति की मूर्ति है, उसी के सम्मुख सकल्प लेकर कहता हू—आज विक्रमी वष 2043 है वतमान महीना ज्येष्ठ है, अमावस का शनिवार है रोहिणी नक्षत्र है,—धृति योग है, सन्ध्याकाल है और इस समय वश्चिक लग्न है, जिसमे चन्द्र सूय की राशि वृषभ है, मगल की राशि मकर है बुध और शुक्र की राशि मिथुन है, गुरु की राशि कुम्भ है, राहु की राशि मेष है, और शनि वृश्चिक मे है, लग्न मे, इसके अतर्गत अतिम होरा मे, 33 घडी और 35 पल पर, यमुना तट पर दिल्ली स्थान मे गणपति के सम्मुख शुभ कार्य के लिए सकल्प लेते हैं कि हम पुरोहित राष्ट्र को जागृत रखेंगे "

सकल्प का विधान सामने आया, तो मैंने पूछा—'यह राष्ट्र को जागृत रखने

का संकल्प, क्या प्राचीन काल में हर पुरोहित का सफल होना था ?"

वह कहने लगे—"जरूर होता था। मैंने इतिहास के हवाले से ही इसका ज़िक्र किया है, लेकिन आपके कहने पर आज की ग्रहदशा को सामने रखा है—आज सात जून की ग्रहदशा को "

उस शाम जब कैलाशपति जी दिल्ली से चले गए, सध्या की बेला गहरी रात मे ढलने लगी, तो लगा—मेरे ज़ेहन मे एक लफ्ज एक नया रूप धारण कर रहा है

वह लफ्ज पुरोहित था, जो किसी दैवी शक्ति की तरह एक नया परिधान पहन रहा था, कि लगा—सामने स्पष्ट अक्षरों मे 'अदीब' लफ्ज आसमान पर अकित हो गया है

किसी कालगणना का मुझे इल्म नहीं है, लेकिन यह एक हकीकत है, और अगर उसे कोई ठीक से गिन पाया है, तो उसके मुताबिक अभी दो वर्ष बाकी हैं—जिसमें विनाश की गति तेज कदम चलती रहेगी। और लगा—यही समय है एक सकल्प लेने का एक अपने राष्ट्र की शक्ति को जागत रखना है

और प्राचीन काल का 'पुरोहित' लफ्ज जो अब मेरे ज़ेहन मे 'अदीब' लफ्ज की सूरत मे खड़ा हो गया, लगा—आज, इस विनाश काल मे अगर मेरे देश का हर अदीब यह सकल्प लेता है तो मेरे देश पर मडराता हुआ खतरा इस सकल्प के सम्मुख उस तरह नहीं ठहर पाएगा, जिस तरह दिखाई दे रहा है सामने एक नज्म आई जो कुछ महीने हुए, मैंने तड़प कर लिखी थी—

वन देवता !
चदन के पेड़ का सीध मे
अशोक वाटिका के ठीक पीछे
और बोधी वृक्ष के पहलू मे
एक भुतहा पेड़ उग आया है
जब सासों की पवन बहती है
तो उस पेड़ की शाखा कांपती है
और जिस तरह एक चिता जलती है
उस पेड़ में से आग निकलती है
और वह आग निकलती है
तो बटोहियों के साथ चलती है
वह अग्नि मृग बनती है
तो बटोहियों का मन छलती है
वह अग्नि दूत बनती है
तो जाने बटोहियों से क्या कहती है !

यह अग्नि बाण बनती है
तो खून की एक नदी बहती है
वन देवता !
इस भुतहा पेड़ की गाथा
तुम विश्वकर्मा को सुनाओ।
जो देव-अस्त्र गढ़ता था
उसी से एक आरी को लाओ
देखो ! यह भुतहा पेड़ उग आया है

लगा—यह तो विनाश काल है, यह भुतहा पेड़, इसे काटने के लिए यह सक्ल्प ही किसी विश्वकर्मा का शस्त्र हो सकता है

लेकिन

यह एक लफ्ज था, 'लेकिन' जहाँ रात का अंधेरा सिमट आया

लगा—सकल्प तो कही भीतर से उगता है, इसे बाहर से किसी को दिया या लिया नही जा सकता

आज मेरे देश के अदीब यह सकल्प लें, यह मैंने सोच तो लिया लेकिन उन्हें कुछ कह पाना तो मेरे बस मे नही है

शायद यही बेबसी का आलम होता है जब इसान के पास दुआ मांगने के अलावा कुछ नही बचता

और यही मन मस्तिष्क से उठ रही दुआ थी कि मुझे करीब पद्रह दिन पहले का देखा हुआ अपना सपना एक और सपना याद हो आया, जिस सपने मे मैं खुदा से मुखातिब हुई थी, और कहा था—

जब हर सितारा हर गर्दिश से गुजर कर
तेरे सूरज के पास आने लगे
तो समझना—
यह मेरी जूस्तजू है
जो हर सितारे मे नुमाया हो रही है

मन का यही आलम था—जिसमे रात का अंधेरा एक नुक्ते पर सिमटा हुआ भी दिखाई देता रहा, और एक आरजू हर सितारे मे नुमाया हो रही भी दिखाती रही—और जब सुबह की रौशनी तन बदन पर दस्तक देने लगी, तो एक बहुत प्यारा सा इत्तिफाक हुआ—डा० लक्ष्मी नारायण लाल से फोन पर बात हुई, तो लगा—उनके हाथ भी जस इस सक्ल्प के दरवाजे पर दस्तक दे रहे थे

पुरोहित' लफ्ज सचमुच विस्तृत होता हुआ दिखाई दिया, उस हद तक, जहाँ कोई अदीब या कलाकार अपनी महाचेतना को छू लेता है

लगा—इस विनाशकाल में, जरूर कितने ही चिन्तनशील हाथ होंगे, जो इस संकल्प को लेने में समर्थ होंगे

फोन पर जो आवाज सुनाई दे रही थी, वह आवाज तो एक थी, डा० लक्ष्मी नारायण लाल की, लेकिन अहसास हुआ कि मुझे, जो अपनी आवाज अकेली महसूस हो रही थी, वह अकेली नहीं है। उसे उस दूसरी आवाज से कितना बल मिल रहा है, कि यही बल चार हाथों की तरह आगे बढ़ रहा है ।

खोज के हवाले

महाराज दशरथ ने जिस श्रृ गी ऋषि से यज्ञ करवाया था, उस श्रृगी ऋषि की आत्मा को आज किसी नए शरीर म देखना, एक ऐसा चमत्कार है, जहा उस शरीर तक किसी की आखें पहुच सकती हैं, और उस ऋषि की आवाज तक किसी के कान पहुच सकते हैं, लेकिन हम सभी के सीमित से तक का कही हाथ नही पहुचता ।

यह चमत्कार जो अब 1986 मे पहली सितम्बर की साझ को मैंने देखा, आज से चौदह साल पहले अप्रल 1972 म स्वामी योगेश्वरानन्द जी ने भी देखा था । मुझे कुछ भी कहने का अधिकार नही है, लेकिन योगेश्वरानन्द जी ने कहा था—"मुझे कई योगियो से मिलने का मौका मिला है । मैं खुद भी मग्न अवस्था म आध्यात्मिक वचन बोलता हू । उस समय मुझे आसपास का कोई ध्यान नही रहता, पर यह जो ब्रह्मचारी जी हैं, इनके अन्दर अपने पूर्वजन्मो के कारण कुछ और ही विलक्षणता है ।

मैं इतना ही कह सकती हू कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को उनकी अचेत अवस्था म देखना आज के और किसी प्राचीन युग के चिन्तन को एक ही समय एक ही स्थान पर और एक ही शरीर मे एक साथ देखने का अद्वितीय तजुर्बा है। साथ ही अत्यन्त साधारण और अत्यन्त असाधारण को कानो से सुनने का अलौकिक अनुभव ।

यह ब्रह्मचारी जी आज से करीब 45 साल पहल गाजियाबाद जिला मे मुरादनगर के पास ही खुरमपुर सलेमाबाद नामक गांव मे नानक चन्द नाम के एक जुलाह के घर पैदा हुए थे । जिस तरह मा देवकी के घर कृष्ण उलटे पाव पैदा हुए थे, उसी तरह यह बच्चा भी उलट पाव जन्मा था, इसलिए बच्चे का नाम कृष्णदत्त रखा गया, जिसे गाव मे किशना कहकर बुलाया जाता था ।

इस किशने को जब चारपाई पर सीधा लिटाया जाता तो उसके होठ फडकने लग जाते । वही होठ कुछ धीरे धीरे गुनगुनाने लगे, जिससे गाव मे समझा गया कि बच्चे का कोई प्रेती पकड' है और गावों मे ओझा लोग उसे किसी की पीट पीट

कर भूत प्रेत निकालते हैं, उसी तरह इस बच्चे को कई बार पीटा गया ।

पन्द्रह बरस की लगातार मार और पीड़ा से घबराकर, आखिर यह बच्चा सर्दी की एक रात को मुंह सिर ढक कर घर से निकल गया।

जुलाह बाप की गरीबी ने बच्चे को कभी किसी स्कूल में पढ़ने नहीं भेजा, पर यह सभी ने कानों से सुना था कि जिस प्रेत को वे बच्चे के अन्दर से निकालना चाहते थे, वह 'प्रेत' की कुछ एक देवसी में बोलता था, वह संस्कृत में होता था।

यह बाद में कुछ विद्वानों ने सुना और जाना कि वे वेदों के सूक्त हैं।

योगेश्वरानन्द जी के शब्दों में "यह वैदिक संस्कृति का दिग्दर्शन है।"

कृष्ण दत्त जी की अचेत अवस्था में उनके मुंह से करीब दस मिनट वेद मंत्रों का उच्चारण होता है, फिर हिन्दी में उन मन्त्रों की व्याख्या और फिर करीब दो मिनट और वेद पाठ।

व्याख्या में जिस संहिता की वाणी बोली जाती है, उस संहिता का नाम भी बताया जाता है—कि यह श्लोक अंगिरस संहिता में से है या वायु मुनि संहिता में से या शृंग केतु संहिता में से या रेकव मुनि संहिता में से ।

शृंगी ऋषि की जुबानी यह व्याख्या महानन्द नाम के प्रश्नकर्ता को भी संबोधित होती है और कई मुनिवरों को भी । जिसमें अक्सर हर काल का आंखों देखा वर्णन होता है ।

सबसे अलौकिक बात यह है कि कृष्णदत्त जी के मुख से जो आवाज़ निकलती है, वह इतनी तर्कशील होती है कि लगता है कि समय की धूल से जिन शब्दों के अर्थ गुम हो गए हैं, वह उन सही शब्दों का धूल में से उठा कर, धो-पोंछ कर उनकी सूरत का दीदार करा रही है। जैसे—

"शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, शृंग—ये सब ऋषि मुनियों की खास उपाधियां होती थी जो हर काल में खास खास गुणों के आधार पर, कुछ ऋषियों को सम्मान के रूप में दी जाती थी । जैसे शृंगी एक ऋषि का नाम भी था और दूसरे किसी काल में, अगर किसी ऋषि के पास खास तरह के यज्ञ करने का ज्ञान होता था और वह यज्ञ के विज्ञान को समझता था तो उसे शृंगी की उपाधि दी जाती थी। इसीलिए हर काल में शृंगी का वर्णन मिलता है।"

'कैलाश पर्वत भी है और कैलाश शब्द प्रजा के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए जो प्रजा का कल्याण करे वह राजा भी कैलाशपति कहलाता था।"

'कृष्ण की जो 16 हज़ार गोपियां बताई जाती हैं, वे वेदों की 16 हज़ार ऋचाएं हैं। गोपिका ऋचा को भी कहते हैं।"

'कुम्भकरण के लिए कहा जाता है कि वह छह महीने सोता था और छह

महीने जागता था, पर उसका सही अर्थ यह है कि वह छह महीने राज को त्याग कर एक पर्वत पर बनाई अपनी विज्ञान-शाला में चला जाता था, और विज्ञान-शाला में जो अस्त्र शस्त्र बनाए जाते थे, फिर छह महीने अपने राज्य में पहुंच कर उनके इस्तेमाल देखता-परखता था।"

इस तरह अनेक हवाले सामने हैं, जो कृष्णदत्त जी अपनी अचेत अवस्था में बोलते हैं, पर चेतन अवस्था में उन्हें अपनी ही की हुई किसी व्याख्या का स्मरण नहीं रहता। और उस समय किसी भी सवाल का वह उत्तर नहीं दे सकते।

संस्कृत तो दूर की बात, उन्हें साधारण-सी हिन्दी इबारत भी लिखनी नहीं आती और न वह अपने अचेत मन में पड़े हुए ज्ञान से परिचित हैं।

लगता है—यह पिछले जन्मों का कोई संचित ज्ञान है, जिससे उनका चेतन मन परिचित नहीं।

उनके बारे में जो खोज की गई है, उसका आधार कोई यौगिक मुद्रा प्रतीत होती है जिसके मुताबिक जब वह सीधे लेट जाते हैं तो उनका ब्रह्मरंध्र स्थान आकाशीय शक्तियों से सम्बन्ध पैदा कर लेता है यह सम्बन्ध किसी काल के शृंगी ऋषि के सूक्ष्म शरीर के साथ जुड़ता है या उनकी पूर्वजन्मों की साधना की स्मृति के साथ—पता नहीं। लेकिन यह कहीं जुड़ता जरूर है।

उस अचेत अवस्था में उनका गर्दन बड़ी तेजी के साथ हिलती है पर आवाज कहीं से भी लगती नहीं। मैंने उस आवाज का टेप करके भी देखा है जिससे लगता है कि जिस शरीर की गर्दन हिलती है, आवाज का उस शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं।

गर्दन के हिलने का कारण कृष्णदत्त जी के अपने ही किसी प्रवचन के अनुसार "जो अभ्यास किसी काल में किया था, उसका अभ्यास का जोर जब प्राणों पर पड़ता है तो कण्ठ के ऊपर के हिस्से में कम्पन होता है।

वह ऐसे किसी सवाल का जवाब चेतन अवस्था में नहीं दे सकते। करवट बदलते ही वह चेतन अवस्था में आ जाते हैं, और फिर उन्हें कुछ याद नहीं रहता।

यह चेतन और अचेतन अवस्था के बीच कैसा लोहे का दरवाजा लगा हुआ है, जो चेतन अवस्था में दी गई किसी दस्तक के साथ नहीं खुलता, यह राज पकड़ में नहीं आता। और जैसे कृष्णदत्त जी ने खुद ही किसी प्रवचन में कहा था कि किसी पूर्वजन्म में मिले किसी श्राप के कारण ऐसा हुआ—इस तर्क को मानना पड़ता है।

दिल्ली में एक वैदिक अनुसंधान समिति जरूर बनी है, जिसने कृष्णदत्त जी के अचेत अवस्था में बोले प्रवचन टेप करके कई छोटी छोटी पुस्तिकाओं के रूप में छापे हैं, पर हैरानी होती है कि आज जब रूस और अमेरिका जैसे देश पराशक्तियों के बारे में इतनी खोज कर रहे हैं, तो जिस देश में ऐसे अवसर सरलता से मिल जाते हैं, वहां ऐसी अलौकिक घटनाओं की वैज्ञानिक खोज क्यों नहीं की जा रही?

भृगुवाणी

जब कभी भृगु सहिता की बात चलती थी । एक प्रश्नचिह्न कही मेरे अन्तर से उठ खडा होता था । हालाकि एक हवाला मेरे सामने था कि जब मेरा बेटा बहुत छोटा था उसकी जिन्दगी के ब्योरे का एक पन्ना भृगु सहिता मे निकला था, जिसमे उसके कारोबार और जिन्दगी का ऐसा वर्णन था, जिसका सच कुछ वर्षों के इन्तजार के बाद आजमाया जा सकता था । और फिर जब वह सच आजमाया जा चुका था तब सामने और कोई ऐसा वाकया नही था, जिसके सामने मैं कोई प्रश्नचिह्न लगा सकती । फिर भी किसी अलौकिक शक्ति को न समझ पाने का असामर्थ्य था, कि मेरे अन्तर से कोई प्रश्नचिह्न रह रह कर उठ खडा होता था ।

शायद यही मन का कोई तकाजा था या मेरी जिज्ञासा का कोई ज्वार भाटा कि 1985 के नवम्बर महीने मे मैंने दिल्ली से होशियारपुर, भृगुसहिता वाले जयदेव शास्त्री को अचानक एक दिन सवेरे फोन कर दिया और कहा कि इस समय जो भी प्रश्न मेरे मन मे है, उसकी प्रश्नकुडली बनाकर मुझे फोन पर ही उसका उत्तर बताइए ।

मैंने कभी जयदेव जी को देखा नही था । उनका नाम और टेलीफोन नम्बर भी किसी स पूछा था । और जवाब मे उन्होंने जो उत्तर टेलिफान पर लिखवाया, वह लिखते-लिखते एक थर्राहट मेरे सिर से पावो तक उतर गयी—खुदाया ! यह क्या मुअजजा है ? क्या देववाणिया इस तरह कागजो पर लिखी हुई होती हैं ?

इस वाकये के बाद मैंने अपना पूरा नाम और पता बताकर जयदेव जी को दो एक खत लिखे कि मैं उनके साथ आमने सामने बैठकर कुछ बातें करना चाहती हू, भृगु सहिता की अलौकिकता के बारे मे, इसलिए वे जब कभी दिल्ली आए तो मुझे जरूर सूचित करें । यह भी लिखा कि अगर वे कभी दिल्ली आकर दो तीन दिन मेरे घर ठहरें तो मुझे निहायत खुशी होगी ।

इसके बाद कोई सूचना नही मिली । पर 1986 की 3 सितम्बर की साझ थी, जब घर का दरवाजा खटका तो जाना कि होशियारपुर से शास्त्री जी आए हैं ।

तीन दिन वे मेरे घर पर ठहरे और महसूस हुआ कि वे तीन दिन एक नये पहलू से मेरी मानसिक अमीरी के दिन थे।

प्रतीक्षा करता आदेश

किसी सबब के पीछे कुदरत का कौन-सा राज छुपा होता है ? वह राज तो पकड मे नही आता, पर उसका फल जरूर हथेलियो पर पडा हुआ दिखाई देता है। कुछ ऐसी ही बात थी कि आज से करीब पाच सौ साल पहले पजाब की एक तहसील गढशकर के एक गांव टूटो मयारा के एक पडित मुतसद्दीराम होते थे, जो नेपाल गए तो एक दिन काठमाडो के पुस्तकालय मे हस्तलिखित ग्रथो को देखने चले गए। उन्हें अचानक भोजपत्र पर बना हुआ कुडली का एक निशान दिखाई दिया, जिसके नीचे सस्कृत मे कुछ लिखा हुआ था। पडित मुतसद्दीराम उसे ज्योतिष के किसी हस्तलिखित ग्रथ का पृष्ठ समझकर सहज ही देखने लगे।

ज्योतिष के हस्तलिखित ग्रथ हिन्दुस्तान के कई भागो में मिलते हैं। पर यह सबब कुदरत के किसी राज को हथेली पर रखकर जैसे मुस्करा रहा था।

पडित जी सस्कृत जानते थे, इसलिए पढने लगे तो देखा कि उस भोजपत्र पर उनकी जन्मकुडली बनी हुई थी और नीचे उनका नाम भी लिखा हुआ था—इस आदेश के साथ कि यह 'भृगुग्रथ' अलौकिक खज़ाना है जो यहा एक गुमनाम कोने मे पडा हुआ है, इसे यहा से निकाल लो।

कहते हैं कि पडित मुतसद्दीराम ने कापते हाथो से वह पन्ना देखा। फिर उसके साथ के लाखो पन्ने देखे और एक बेचैनी की हालत म पुस्तकालय की दीवारो को देखने लगे।

उस लाखों पृष्ठो वाले ग्रथ को किसी तरह चुरा कर ले जाना न तो मुमकिन था और न ही ईमानदारी। इसलिए पडित जी ने एक रास्ता निकाला—वहा लाइब्रेरियन की नौकरी कर ली और साथ ही सस्कृत का एक विद्यालय खोल लिया।

यह एक कठिन साधना का समय था। पडित जी रोज़ कोई पचास पत्र अपने थैल मे डाल कर ले जाते और विद्यार्थियो की सहायता से रात को उनकी नकल करते। फिर अगले दिन पहले पत्रो को अमानत की तरह वापस रखकर नये पत्र ले जाते। और इस तरह एक लम्बी साधना के बाद यह भृगु सहिता पजाब मे पहुची। एक गाव टूटो मयारा मे।

पडित मुतसद्दीराम जी के घर उस समय कोई पुत्र नही था। इसलिए अपने भतीजे को अपने साथ लेकर उन्होंने इस ग्रथ को पढने और सुनाने का काम शुरू किया। उनके अपने घर पुत्र हुआ, पर बडी देर बाद। इसलिए समय के साथ-साथ यह ग्रथ पडित जी के पुत्र और भतीजे मे बट गया।

आगे की पीढ़िया म कुछ वारिस ऐसे भी हुए, जिन्होंने संस्कृत नहीं पढ़ी थी। इस कारण वे ग्रंथ क वाचक नहीं बन। पर जो वाचक बने, आगे उनके वंश में यह ग्रंथ फिर बाटा जाने लगा। और आज यह पांच खण्डो मे बटा हुआ मिलता है।

मिथिहास का एक वाकया हम सबने सुना हुआ है कि देवताओं म कौन-सा देवता बड़ा है, इस बात की परीक्षा ब्रह्मा जी के मानसपुत्र भृगु ऋषि को सौंपी गयी थी। और इस कथा के मुताबिक भृगु न पहली परीक्षा अपने पिता की ली और असमय की आमद पर जब ब्रह्मा जी के क्रोध को देखा तो भृगु हैरान होकर शिव क पास चले गए। भृगु के आने से शिव की समाधि भग हुई। इस कारण वे भी क्रोधित हो गय। भृगु और निराश हुए और विष्णु के पास चले गये। लेकिन देखा कि विष्णु ने भृगु को देख कर अपने मुह पर चादर तान ली, जिसस भृगु को इतना क्रोध आया कि उन्होंने विष्णु की छाती पर अपना एक पाव रख दिया।

कहते हैं विष्णु ने मुस्कराकर मुह से चादर हटाई और भृगु के पाव को दबाते हुए कहने लगे "देवर्षि! मेरा शरीर तो वज्र का है, इसे कोई चोट नहीं पहुच सकती, पर आपके पाव को तक्लीफ हुई होगी।"

इससे भृगु ने विष्णु की महानता तो जान ली, पर इस घटना से पास बैठी लक्ष्मी भृगु पर क्रोधित हो गयी थी। इस कारण लक्ष्मी ने भृगु को शाप दे दिया कि अब वह ब्राह्मण वंश मे कभी नही जायेगी।

भृगु उस समय तक ज्योतिष का ग्रंथ लिख चुके थे, जिसका गणित ऐसा था कि सदियो तक उसका फल निश्चित हो चुका था। उसी ग्रंथ के मान से भृगु ने लक्ष्मी स कहा—"मेरा हाथ जहा भी होगा, वहा तुझे सिर के बल जाना पड़ेगा।"

यह दो पर्वतो जैसे व्यक्तियो का टकराव था, जिसमे लक्ष्मी भी हार नही मान सकती थी इसलिए उसन कहा—"आज भी भृगु ग्रंथ को मेरा शाप है कि उसका फल कभी भी पूरा नही निकलेगा।"

यह भृगु के सारे ज्ञान क निष्फल हो जाने का शाप था, जिससे दुखी होकर वे लक्ष्मी को कोई शाप देने जा रहे थे कि विष्णु ने बीच मे पड कर कहा—'देवर्षि, लक्ष्मी को शाप न दें! किसी काल मे लोगो का इसके बिना गुजारा नहीं होगा। इसके बिना लोग त्राहि त्राहि कर उठेंगे। इसके बदले मे मैं आपको दिव्यदृष्टि देता हू जिससे नया ग्रंथ रचिए! उसका कोई फल कभी व्यर्थ नहीं होगा।"

दो ग्रंथो के मिलन का फल

और इसी मिथिहासिक घटना को दोहरा कर जयदेव कहने लगे—"अब

हालत यह है अमृता जी कि दोनो ग्रंथ मिले हुए हैं। वो पहलेवाला शापित ग्रंथ भी, और दूसरा दिव्य दृष्टि से रचा हुआ ग्रंथ भी। इसीलिए जो कोई आज अपना सवाल लेकर आता है, अगर उसका पन्ना शापित ग्रंथ का निकले तो उसका फल अधूरा निकलता है, पर अगर दूसरे ग्रंथ का निकल आये तो फल पूरा निकलता है।"

"क्या कथावाचक को उन पन्नो पत्रो की पहचान है ?" मैंने जब यह पूछा तो शास्त्री जी मुस्करा दिये— 'हा, मुझे पहचान हो चुकी है।"

इस समय सारा देश ऐसे कठिन दिनो से क्यो गुजर रहा है। स्वाभाविक ही मेरे मन मे यह सवाल पैदा हुआ, तो शास्त्री जी कहने लगे, "मेरे मन मे भी यह सवाल कई बार आया है, पर मैं यह प्रश्न भृगु महाराज के सामने रखने से डरता हू कि अगर जवाब मे मेरे लिए कोई ऐसा आदेश हुआ कि इस सकटकाल के निवारण के लिए तुम किसी महायज्ञ जसा उपाय करो तो मैं क्या करूगा ? न मैं आदेश को *माड सकूगा और न ही किसी उपाय को कर सकने मे समर्थ हूगा।"*

और जयदेव जी ने एक भेदभरी बात बतायी—' जब कोई किसी बेगाने की कुडली निकलवाकर उसके बारे मे कुछ जानना चाहता है तो मैं उसे रोक देता हू कि क्या पता उसमे कैसे जप-तप का, और किस तरह के महग उपाय का आदेश निकल आए, जिसे पूरा करने का भार फिर कुडली पढवाने वाले के ऊपर आ जाएगा। अगर वह नही करेगा, तो वह बेगाना शाप उसे भोगना होगा।"

"कभी वाचक को भी कुछ भोगना पडता है ?' जब मैंने यह बात जयदेव जी से पूछी तो उन्होंने जो कुछ बताया—वह मेरे लिए एक आश्चय है।

कहने लगे—"जब किसी को अपना पन्ना निकलवाने पर किसी मंत्र के जाप करने का आदेश मिलता है, वह तो खैर उसे खुद करना ही होता है, पर जब इस *तरह का आदेश मिल जाता है कि* इस फल के सुनने के बाद सुनने *वाला एक सौ,* पाच सौ, या पाच हजार मुद्रा से इस ग्रंथ को नमस्कार करे, तो उसके बाद उस राशि के इस्तेमाल के बारे मे प्राप्त उत्तर के अनुसार ही उनन राशि की दवाइया या कपडे खरीदकर जरूरतमद लोगो को देने होते हैं।" और जयदेव जी हसते हुए कहने लगे—"अमृता जी, कई बार तो वाचक को इस तरह का आदेश मिल जाता है कि जितनी रकम पत्र सुनने वाले ने दी है, उतनी ही रकम वाचक अपनी ओर से उसमे मिलाये और उसका इस्तेमाल इस तरह करे।'

एक पन्ने ने उसके भाग जगा दिये

मिसाल के तौर पर उन्होंने आज से पांच एक साल पहले का एक वाकया सुनाया—"दोपहर का समय था। कई लोग अपना-अपना पन्ना पढ़वाने के लिए आये थे। उस समय एक नौजवान बड़ी तेजी से आया और कहने लगा 'पहले मेरा पन्ना

निकाल दीजिए।' मैंने कहा कि मैं आपकी बारी आने पर निकाल दूंगा। पर वह आजिज-सा होकर हाथ जोड़ने लगा। पास बैठे लोगों ने भी कहा कि कोई बात नहीं, पहले इसी का पन्ना निकाल दीजिए, तो मैं प्रश्न-कुंडली बनाकर उसका पन्ना ढूंढ़ने लगा। वह पन्ना भी उसी समय मिल गया, जिसमें लिखा था कि वाचक इसी समय एक सौ पच्चीस रुपया इस लड़के को अपने पास से दे दे और आगे पन्ना न पढ़े। मैंने हैरान होकर उस लड़के को एक सौ पच्चीस रुपये दे दिये। वह लड़का कहने लगा कि फल सुनने के लिए वह कल आएगा। पास बैठे लोग भी हैरान थे। वे लड़के से कहने लगे कि कल का वक्त वह अभी बता जाये, जिससे कि वे भी उसी समय आ जाएं और वह फल सुन सकें, जो सुनने से आज मना किया है।

"तो अमृता जी, दूसरे दिन वह लड़का आया और जो फल पहले दिन पढ़ने के लिए मना किया गया था, मैं वह पढ़ने लगा, तो उसमें लिखा था—कल आखिरी दिन था, जब उस लड़के को कॉलिज की फीस देनी थी और इसके पास 125 रुपये कम थे। वह लड़का बड़ा जहीन है। इसकी पढ़ाई पूरी करनी है। इसलिए वाचक को आदेश है कि इसकी दो साल की पढ़ाई के लिए वह हर माह डेढ़ सौ रुपया उसे दिया करे।'

"और आप दो साल वे पैसे देते रहे?" मैंने पूछा तो शास्त्री जी हंस पड़े—"वे तो देने ही थे, मुझे आदेश जो हुआ था। पर वह लड़का चार माह तक तो आता रहा पैसे लेने के लिए, लेकिन फिर जब वह नहीं आया, तो उसका पता ढूंढ़ कर मैं उसके कालेज गया। तब उस लड़के ने कहा कि उसे इस तरह पैसे लेने में बड़ी शर्म महसूस होती है। वह किसी-न किसी तरह गुजारा कर लेगा, पर पैसे नहीं लेगा। उस समय मैंने उसके प्रिंसिपल से मिल कर उन्हें सारी बात बतायी और बाकी के महीनों के सारे पैसे एक साथ प्रिंसिपल के पास जमा करा दिए। बाद में वह लड़का फिर तब मेरे पास आया, जब वह परीक्षा दे चुका था और नौकरी ढूंढ़ रहा था। उस समय उसने फिर प्रश्नकुंडली बनवायी, जिसके जवाब में भृगु महाराज ने कहा कि लड़का फिक्र न करे। जिस दिन उसका नतीजा निकलेगा, उसी दिन उसे नौकरी मिल जायेगी।

'तो अमृता जी, ठीक इसी तरह हुआ। जिस दिन उसका नतीजा निकला, उसे उसी दिन एक बैंक में नौकरी मिल गयी। लड़का बहुत अच्छा था। कई बरस बाद छत्तीस सौ रुपया जमा करके मेरे पास आया, वापस करने के लिए, पर मैंने लिया नहीं, क्योंकि मुझे भृगु महाराज ने जो आदेश दिया था, वह कर्ज की सूरत में पैसा देने का आदेश नहीं था।'

शास्त्री जी के साथ बिताए तीन दिन ऐसे थे, जिनमें मैंने उनकी निजी जिंदगी की जद्दोजहद के भी कई किस्से सुने—वे मुश्किल से तीन महीनों के होंगे, जब मां

नहीं रही थी। नाना-नानी ने पालापोसा था, पर बच्चे को पढ़ाने की ओर उनका ध्यान नहीं गया। वे नाना के खेतों में काम करते रहे और गायें चराते रहे। फिर जब कोई पन्द्रह बरस के हुए, तो एक दिन बिना टिकट सफर करके जम्मू चले गये, नाना के भाई के पास, जो संस्कृत विद्यालय चलाते थे। वहां पढ़ाई की और फिर लाहौर जाकर 'प्राज्ञ' परीक्षा दी। वहां रायबहादुर गागरमल का संस्कृत कॉलेज था, जहां पढ़ाई मुफ्त होती थी। रोटी, कपड़ा और रहने की जगह भी मुफ्त थी। उन्होंने वहां दाखिल होकर 'विशारद' की परीक्षा दी और 'शास्त्री' की पढ़ाई के लिए ओरिएंटल कॉलेज में दाखिल हो गये। उन दिनों आर० सी० बुल्कर नामक एक जर्मन विद्वान वहां के प्रिंसिपल थे, जिन्होंने दो साल बड़े स्नेह के साथ जयदेव जी को संस्कृत और अंग्रेजी पढ़ाई। इसके बाद उन्होंने माहलपुर में स्कूल की नौकरी कर ली।

उनके पिता की मौत के बाद भृगु संहिता के वाचक उनके बड़े भाई बने थे, जिनके साथ वे कुछ साल मिलकर काम करते रहे, पर फिर भाई की मौत के बाद उन्होंने पन्ने बांट लिए।

ये सारी बातें उनकी जिन्दगी के बारे में थी। इसलिए पूछा—"कभी आपने निजी जीवन के बारे में प्रश्न जरूर किया होगा?"

वे कहने लगे—"जरूर किया था, इसलिए प्रण किया था कि मैं अपनी कमाई में से दसवां भाग कन्यापूजन पर खर्च करूंगा। मैं हर साल चिंतपुरनी के मंदिर में जाकर देवी को प्रसाद चढ़ाकर, बरस भर की कमाई का दसवां भाग, साथ के लड़कियों के स्कूलों में, कपड़े, कापियों, किताबों और मिठाई की सूरत में बांट आता हूं। इस कन्यापूजन का एक रूप यह भी है कि गरीब मां-बाप की बेटियों के विवाह के समय वह रकम मैं किसी-न किसी सूरत में खर्च कर देता हूं।"

मिरान भरा आदेश

"कई बार प्रश्न के उत्तर में यह आदेश मिलता है कि इस आदमी से वाचक अपना पारिश्रमिक न ले, क्योंकि इसका पैसा अच्छी कमाई का नहीं है। कई बार यह आदेश मिलता है कि इस आदमी ने जो रकम इस ग्रंथ के आगे रखी है वह स्वीकार नहीं हुई, क्योंकि वह रकम उसने श्रद्धा और विश्वास से नहीं रखी है, बल्कि भय के कारण रखी है, इसलिए रकम वापस कर दी जाए।

और शास्त्री जी ने बताया—"कई बार यह भी हुआ है कि किसी का फल पढ़ने के बाद वाचक को यह आदेश मिला कि इस पन्ने को दोबारा कभी न पढ़ा जाए। अगर वाचक पढ़ेगा तो उसका बुरा फल वाचक को भोगना पड़ेगा। दो बार यह आदेश मिला कि वाचक ये पन्ने गंगा में प्रवाहित कर दे, क्योंकि ये महा-घातकों के पन्ने हैं।"

इसी सिलसिले मे जयदेव जी ने एक अद्भुत घटना सुनाई—"एक बार एक ब्राह्मण लडका और एक शूद्र लडकी सयोग से एक ही समय आ गये, जिनको प्रश्न कुडलियो के उत्तर मे कहा गया था कि अगर ये दोनो वाचक की आज्ञा मान लें, तो मैं एक और फल भी बता सकता हूं। मैं भी हैरान था और वे दोनो भी हैरान कि आगे पता नहीं क्या आदेश मिलेगा। पर पहले तो उन दोनो का फैसला होना था कि वे वाचक का कहा मानें या न मानें। यह बात न उन्हें पता थी कि वाचक को क्या कहना है और न मुझ वाचक को।

"आखिर उन दोनो अजनबियों ने फैसला किया कि जो भी हो, वे वाचक का आदेश मानेंगे। और मैंने वाचक के तौर पर प्रश्न-कुडली बनाकर पूछा, 'मेरे लिए क्या हुकुम है ?' तो जवाब आया—'ये दोनो जातपात का खयाल न करें। अगर दोनो एक-दूसरे से ब्याह कर लें, तो सुखी रहेंगे।' और अमृता जी ! वे दोनों वहीं पर बैठ गये। उसी समय पडित बुलवाया गया, वेदी बना दी गई, फूल मंगवाये गये, मगलसूत्र भी खरीदा, और मैंने कन्यादान कर दिया। दोना अच्छे घरो के पढ़े लिखे थे। दोनो ने विवाह कराकर अपने-अपने शहरों मे अपने अपने मां-बाप को समाचार भेज दिया कि उन्होंने विवाह कर लिया है। इस घटना को कुछ साल हो गये हैं। अब उनके घर मे एक बेटा है और वे दोनो सचमुच बहुत सुखी हैं।"

आज के किसी वियोग का या किसी सयोग का सूत्र किस जन्म के किस कर्म से जुडा हुआ है, इसका कोई भेद चाहे किसी की भी पकड मे न आता हो, पर इसके सकेत भृगुवाणी के पन्नो की हथेली पर पडे हुए जरूर दिखाई देते हैं। और मेरी तरह किसी के अतर से उठते हुए प्रश्नचिह्न को वहीं लगाने के लिए कोई जगह नही मिलती।

यहा पर यह भी बता सकती हू कि 1985 के 23 सितबर की रात सपने मे मैंने भृगु दर्शन भी किये थे। और शुक्र की जुबानी पूछे गए मेरे एक सवाल का जवाब भी मैंने भृगु ऋषि के मुख से सुना था। और फिर एक बरस बाद जब जयदेव जी से मुलाकात हुई और वे भृगु सहिता मे से मेरे जन्म की जो कुडली और उसका ब्योरा ढूढकर लाये थे, उसमे भृगु ऋषि के मुख से मेरे लिए कहा हुआ एक फिकरा यह भी था कि किसी समय मैं भी शुक्र के साथ तुम्हारे पूर्वजन्म की आराधना से प्रसन्न होकर तुम्हें स्वप्न मे विश्वास देता रहूगा।

एक सपना—एक आदेश

नौ सितम्बर, 1986 की रात थी, रात का दूसरा पहर अभी-अभी शुरू हुआ होगा, जब देखा कि देश के विद्वानो की एक सभा-सी हो रही है, जहा पर लम्बे लम्बे व्याख्यानो के बाद उस सभा का सार तत्व समझाया जा रहा है, जिसके बोल मुझे सुनाई देते हैं—"असल मे सार यह निकलता है कि मद का जन्म उस पक्षी का जन्म होता है, जिसके पख जुडे हुए होते हैं, जो बाद मे उसकी बरसो की तालीम से और जिन्दगी के तजुर्बे से धीरे धीरे खुलते हैं, और मद किसी भी तरह की उडान भरने मे समर्थ हो जाता है। पर औरत का जन्म उस पक्षी का जन्म होता है जिसके पख शुरू से ही कटे हुए होते हैं"

ठीक, ये सारे लफ्ज मेरे कानो मे भरे हुए थे, जिस समय मेरी नीद खुली। मैं हैरान जरूर थी कि यह कैसा सपना था, पर नीद का गलबा इतना था कि मैं फिर सो गई

उस समय, सोई पडी के कानो मे आवाज़ आई—"अभी तुम्हें सपने मे लोगो की जो सोच दिखाई गई है, वह इसलिए दिखाई गई है कि तुमने उसके बारे मे लिखना है। तुमने अपना चिन्तन बताना है कि औरत के पख शुरू से ही कटे हुए क्यो कहे जाते हैं"

इस दूसरे सपने के बाद मेरी नीद टूटी, बल्कि देखा—किसी स्थान पर बहुत सारे लोगो की भीड है, जैसे कोई दरबार लगा हो। और मैं वहां मच पर खडी होकर कह रही हू—"जिन सामाजिक और सियासी हालात ने औरत के पख काट दिए थे—वह कैंची आर्थिक गुलामी की थी, जिसने औरत को फितरी तौर पर भी गुलाम कर दिया, फिर ज़ेहनी तौर पर भी, और फिर मनोवैज्ञानिक तौर पर भी और वही लोग जिन्होंने वह कैंची चलाई थी, आज अपने तशद्दद को एक फलसफा बनाकर पेश कर रहे हैं कि औरत का जन्म उस पक्षी का जन्म होता है, जिसके पख शुरू से ही कटे हुए होते हैं उन्होंने यह कभी नही सोचा कि पख नये भी उगते हैं पर साथ ही मैं औरत जात से भी कहना चाहती हू कि उसके नये पख एक प्रतिकर्म में से नहीं उग सकते, वे उसके एव्योल्यूशन में से उगेंगे—उसके

ज़ेहनी विकास में से "

यही लफ्ज मेरे होठो पर थे, जिस समय मेरी नीद टूटी

जागी हू—तो मेरी तरह मेरे मस्तक की एक नाड़ी धड़क रही है—कि जिसने सपने मे यह सब कुछ कहने का मुझे आदेश दिया है, मैं नहीं जानती, वह कौन है, शायद उसे महाचेतना कहा जाता है, यह वही है और अब शायद वही सारी औरत जात का हाथ पकड़कर उसे जगा देगी और औरत जात की, सदियो की नीद टूट जाएगी

हुस्न और इश्क का एक मुकाम

'खुदाया ! हुस्न और इश्क के तसव्वुर का यह कौन-सा मुकाम है !' आज से करीब नौ साल पहले जब एक दिन यह लफ्ज मेरे खामोश होठो पर आए थे, उस वाकिया को आज भी याद करू तो हैरानी नहीं जाती।

जिसकी मुहब्बत मे जाने खुदा मैंने कितनी नज्मे लिखी, और जिसकी एक छोटी-सी मुलाकात के लिए मैं बरसो इतजार करती थी, वही एक दिन दिल की बीमारी मे मुबतला होकर एक एसी दरगाह पर बैठा था, जहां से रूहानी शफा मिलती है और वही उसके सामने मैं बैठी थी और रूहानी शफा देने वाले श्री मिश्रा हमारे बीच मे बैठे कभी उसकी गदन और छाती पर फूक मारते हुए कोई मन्त्र पढ़ रहे थे, और कभी मेरे घुटनो की सूजन पर फूक मारते हुए कोई मंत्र पढ रहे थे

और मुझे लगा था कि रोमाटिक शायरी का इतिहास कभी हैरान होकर उसकी तरफ देख रहा था और कभी मेरी तरफ, और आज नौ साल के बाद एक ऐसा खत मेरे सामने पडा है, जिसे बार-बार पढ रही हू और ठीक वही लफ्ज मेरे होठो पर आ रहे हैं—खुदाया ! हुस्न और इश्क के तसव्वुर का यह कौन सा मुकाम है !

देख रही हू कि हुस्न और इश्क के अथ भी एक नए मुकाम पर पहुच गए हैं।

आज से नौ साल पहले जो वाकिया हुआ था, तब ये अथ एक जाती मुहब्बत के मुकाम पर खडे थे और आज ये अथ पूरे देश की मुहब्बत के मुकाम पर खडे हैं।

तब रूहानी शफा देने वाले उडीसा के श्री लोकनाथ मिश्रा थे, और आज मेरे सामने जिनका खत पडा है, वह रूहानी शफा देने वाले बम्बई के डॉ० रमाकान्त केनी हैं, जो कह रहे हैं मैं एक नई सभावना को खोज रहा हूं कि मेरे पास जो रूहानी शफा देने की शक्ति है उसे इस कदर इस्तेमाल करू कि हमारे देश मे दहशत पसदी खत्म हो जाए।' और उन्होंने यह तक सामने रखा है—अगर यह शक्ति कसर जैसी अलामता को शफा दे सकती है, तो दहशत पसदी जैसी जेहनी अलामत को क्यों नही शफा दे सकती ?'

अभी पिछले दिनो जब दिल्ली मे—नेशनल इटिग्रेशन कौंसिल' की मीटिंग

हुई और उस ग्यारह घंटे की लम्बी मीटिंग में देश के सियासी नेता देश की सला मती की फिकर मे दहशत पसदी को रोकने के लिए कई तरह के सुझाव देते रहे, तो मेरे जैसे जिन कुछ एक गैरसियासी लोगों को मीटिंग मे शामिल किया गया था, जब उन्हें भी कुछ कहने के लिए आमंत्रित किया गया, तो मैंने अपनी-अपनी आचरण शक्ति को जगाने पर बल देते हुए कहा था 'मैं समझती हू कि हमारा चिन्तन खो गया। हर चीज के अर्थ खो गए। तो कितने ही मसनूई अर्थों की स्थापना हुई, सत्ता के, समाज के, और मजहब के मसनूई अर्थों की स्थापना, और यह मसनूई अर्थ लोगो की साइकी में उतरते चले गए। हमने जो बल भीतर की सच्चाई मे से पाना था, अन्तर शक्ति से, वह हम बाहर की मौकापरस्ती में पाने लगे, और इसी मौकापरस्ती मे हर मजहब का नाम बचा जाने लगा।' और जाति और मजहब के व्यापार की तशरीह करते हुए मैंने कहा, 'हमारे एक प्रांत केरल मे जब जाति प्रथा इस कदर भयानक थी कि एजावा जाति का कोई आदमी अगर किसी ब्राह्मण के सामने से बत्तीस फुट की दूरी से भी गुजर जाता तो उसे मुजरिम करार दिया जाता था, तो उस वक्त स्वामी विवेकानन्द ने तड़प कर कहा था कि केरल भारत का पागलखाना है, और आज मैं भरी आंखों से कह रही हू कि हम अपने हर प्रान्त को भारत का पागलखाना बना रहे हैं। इसी पागलपन मे हम हजारो मासूम लोगो की हत्या के गुनहगार हुए और इसी पागलपन मे हमने देश की जवानी को गुमराह होने दिया।

और आज मेरे सामने डाक्टर केनी का खत पडा हुआ है, तो अहसास हो रहा है कि खुदाया! हुस्न और इश्क के तसव्वुर का यह कौन-सा मुकाम है कि कोई रूहानी शफा देने वाला मेरे देश की गुमराह हुई जवानी को शफा देना चाहता है।

दुनिया-भर की शायरी मे हुस्न के जिन अर्थों का सीमित दर्शन होता है, वे ही अर्थ असीम होकर रूहानी हुस्न तक पहुच गए लगते हैं, और इश्क की इन्तिहा उस मुकाम पर पहुच गई लगती है, जहा धरती आसमान को अपनी बाहा मे लेती हुई, वह अपने देश की गुमराह जवानी को भी गले से लगाकर उसे जहरीली मानसिकता से मुक्त करना चाह रही है।

जानती हू—अभी इसी साल मार्च के महीने मे जर्मनी मे दुनिया भर के डाक्टरो, सर्जनो, साइंटिस्टो और मनोवैज्ञानिकों की कांफ्रेंस हुई थी, जिसमे बाईस देशो के ये विशेषज्ञ शामिल हुए थे, और सोलह सौ बीमार लोगो के भरे हुए हाल मे खडे होकर अकेले डाक्टर केनी ने उन्हे रूहानी शफा दी, और इस 'मासहीलिंग' के इतने बडे कामयाब तजुर्बे को वहा के टेलीविजन पर भी दिखाया गया।

रूहानी शफा के कितने ही हवाले 'मैंदे इसाइक्लोपीडिया आफ द अनएक्स प्लेंड' मे पढे थे। भारतीय चिन्तन मे भी यह इल्म मिलता है। और कोलन विल सन की किताबो मे भी, लेकिन जब तक जाती तजुर्बा न हो, तब तक किसी शक्ति

के बारे में कुछ कह पाना यकीन की पकड़ मे नही आता।

25 मई, 1985 की रात थी, जब मैं गहरी नींद में सो रही थी कि लगा—अचानक हवा मे से एक हाथ मेरी तरफ आया है, और उसने मेरे दाहिने घुटने पर इतने जोर से मारा है कि मेरी चीख निकल गई। मैं सपने मे बोल उठती हू—कौन है ? यहां क्यो इतने जोर से मारा ? यही तो घुटने मे दर्द होता है

मैं इस अपनी ही आवाज से जग गई थी। कमरे मे कोई नहीं था और दूसरे दिन मैंने यह बात डा० केनी को लिख कर इसका अर्थ पूछा था। उससे पहले मैं कभी डा० केनी से मिली नहीं थी। सिर्फ उनका खत मुझे मिला था कि वह मुझे रूहानी शफा भेजेंगे। और उस सपने के बाद मैंने जो उन्हें खत लिखा, उसके जवाब मे उन्होंने लिखा 'यह होना ही था। घुटने मे जो नाडियां जम गई हैं उन्हें रूहानी शक्ति से खोलना था '

यही सपना था, जिसके बाद मेरे घुटने मे दर्द कम होता गया, और सूजन उतरती गयी।

कहा जाता है, इस इल्म के दो पहलू हैं—एक यह कि जिसमें मरीज का विश्वास भी शामिल होता है और दूसरा जिसमे मरीज का विश्वास शामिल नहीं होता। लेकिन ये दोनों पहलू इस इल्म की पकड मे हैं, जो अपनी शक्ति से मरीज की साइकी मे सोई हुई शक्ति को जागृत करता है।

डा० केनी के इस खत मे एक आरजू है—'अगर देश के बहुत से लोग इस मकसद के लिए रोजाना कुछ क्षण एकाग्र मन से बैठें तो यह अन्तर-शक्ति एक बहुत ही बडी शक्ति का रूप धारण कर लेगी जो नकरात्मक ताकत को जीत लेगी।'

मेरी नजर मे—डा० केनी का चिन्तन मेरे उसी चिन्तन को बल देता है, जो मैंने नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल की मीटिंग मे पेश किया था कि हमारे इतिहास में सागर मथन की बात बहुत गहरे अर्थों मे है। जिस मथन से कभी हमने चौदह रत्न पाए थे, आज उसी तरह के मथन से हमको पन्द्रहवां रत्न खोजना है—अपनी-अपनी आचरण शक्ति का रत्न।

डा० केनी के लफ्जों में रोजाना कुछ मिनट की साधना से अपनी-अपनी अतर-शक्ति को जगाना, मेरे लफ्जों मे अपने-अपने समुद्र का मथन करना है जिससे आचरण शक्ति की रूहानी शफा हासिल हो सकती है—जो देश मे फैली हुई हर तरह की बदइखलाकी जैसी जेहनी अलामतों को शफा दे सकती है

कह सकती हू कि यह भी हुस्न और इश्क के तसव्वुर का एक मुकाम है, जिसके मजर को देख कर कभी मैंने एक नज्म कही थी

> उठो ! अपनी गागर से
> पानी का एक कटोरा भर दो,
> मैं उस पानी से राहों के सब हादसे धो लूगी।

दो बैलो की गाथा

ऋग्वेद के दसवें खड के 85वें सूक्त मे चन्द्र विवाह का जिक्र आता है कि सूय-पुत्री जब चन्द्र के गुण सुन कर उसकी कामना करने लगती है, तो सूय अपनी पुत्री का विवाह चन्द्र के साथ कर देते हैं और विदाई का वणन करते हुए लिखा है कि दो तारे बैल हैं जो उस रथ के आगे जुतते हैं, जिसमे सूय पुत्री विदा होती है

इन सतरो की व्याख्या ऐसे की गई है कि 'यह सूय के प्रकाश का चन्द्र तक पहुचने का वणन है और जिन दो तारो के जरिये प्रकाश पहुचता है, वह ज्योतिष का विज्ञान है

लेकिन यह विज्ञान क्या है उसका कोई जिक्र नहीं, वे दो तारे कौन से हैं, यह भी नही बताया गया है। टीकाकार ने 12वी ऋचा का अथ करते हुए यह लिखा है कि इस विज्ञान की खोज होनी चाहिए।

यह एक सवाल था जो एक अरसे से मेरे मन मे बैठा हुआ था। और जब 16 अक्तूबर 1986 के दिन मैं चन्द्रभान सतपथी के साथ ज्योतिष विज्ञान की बातें कर रही थी, तो वह सवाल अचानक याद आ गया। पूछा, तो वे कहने लगे—' वे बुध और शुक्र हैं, जो हमेशा सूय के आसपास रहते हैं। बुध कभी भी सूय से 27 डिग्री दूर नहीं रहता और शुक्र भी 47 डिग्री के अन्दर-अन्दर ही रहता है। इसीलिए ये दोनो ग्रह प्रकाश-रथ के बैल कहे गये हैं।"

चन्द्र विवाह का वणन करने वाली पाच ऋचाओ मे जिस लम्बे रास्ते को पार कर सूय पुत्री को अपने प्रिय के घर पहुचना है उस रास्ते की कठिनाइयो की ओर उसमे इशारा है—'इस रथ को जड-चेतन का सफर तय करना है।'

सूर्य, चन्द्र और पृथ्वी—आग, पानी और मिट्टी

आत्म विज्ञान का यह दशन ज्योतिष विज्ञान मे कैसे बदल जाता है ? जब मैंने यह सवाल सतपथी जी के सामने रखा, तो उन्होंने एक कागज लेकर उस पर एक त्रिकोण बनाया, जिसके ऊपर के मुक्त पर सूय चन्द्र रख दिये और नीचे बाकी

के पाचो ग्रहो के लिए पाच आडी रेखाए खीच दी। पहली रेखा बुध की, दूजी शुक्र की, तीसरी मगल की, चौथी बृहस्पति की और पाचवीं शनि की। हर रेखा के दोनो कानो पर उस ग्रह की एक-एक राशि का नाम लिख दिया। कहने लगे, बारह खानो वाली कुडली का आधार यह तिकोन है। सूय, चन्द्र सिफ दो ग्रह हैं, जिनकी एक एक राशि होती है—चन्द्र की कर्क और सूय की सिंह। बाकी पाचो ने, हर ग्रह की दो दो राशिया होती हैं—आडी रेखाओ के दो-दो कोने। ये दो कोने जड और चेतन के प्रतीक हैं—
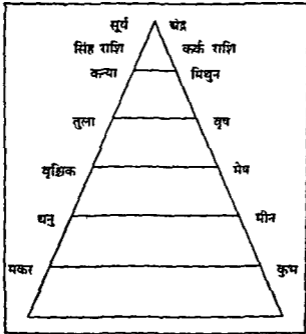
जाहिर था कि इस त्रिकोण को कुडली का रूप दिया जाये, तो ठीक इसी क्रम मे यह राशिच्चक्र लिखा जाता है। और हर ग्रह की एक राशि यदि पृथ्वी का भौतिक गुण रखती है तो दूसरी मानसिक। जैसे बुध की कन्या राशि पृथ्वी का गुण रखती है और दूसरी मिथुन उसका मानसिक गुण। शुक्र की एक राशि वृष पृथ्वी का गुण रखती है और तुला मानसिक। मगल की एक राशि वृश्चिक भौतिक होती है और दूसरी मेष मानसिक। और इसी तरह बृहस्पति की धनु राशि भौतिक और मीन मानसिक, और शनि की मकर राशि भौतिक और कुम्भ मानसिक।

ज्योतिष विज्ञान मे रचे हुए आत्म विज्ञान की बात करते हुए सतपथी जी ने तीन बुनियादी नुक्ते सामने रखे—सूय, चन्द्र और पृथ्वी के चिह्न। आग, पानी और मिट्टी वे तत्त्व हैं, जो हर रचना की बुनियाद हैं—सोल, माइंड एण्ड मटर।

हम सभी जानते हैं कि सूय का चिह्न एक गोल दायरा होता है, जिसके केन्द्र मे एक बिन्दु होता है। कहने लगे—"यही बिन्दु आत्मा है—ब्रह्म ! इसके चारों ओर महाकाल एक गोल दायरे मे घूम रहा है—आदिहीन, अन्तहीन !"

चन्द्र का चिह्न हम सभी जानते हैं—अर्ध चन्द्र की सूरत में और पृथ्वी का चिह्न भी हम जानते हैं—जो दो रेखाओ की सूरत मे होता है—एक उफकी और एक समतिया (क्षैतिजीय और लम्ब)। ये प्रकृति और पुरुष की सूचक हैं। वही दो रेखाए मध्य के बिन्दु को काटती हैं।

बाकी सभी ग्रहो के चिह्न इन मूल तत्त्वो पर आधारित हैं। सतपथी ब्योरे के साथ कहने लगे—"शुक्र का चिह्न पथ्वी के चिह्न के ऊपर के कोने पर सूय चिह्न को धारण करता है। इसलिए उसका गुण है—आत्मा की प्रधानता और पृथ्वी गुण की अधीनता। पर मगल चिह्न इससे बिल्कुल उलट होता है। इसके पृथ्वी चिह्न के नीचे के हिस्से मे सूर्य चिह्न होता है—पृथ्वी गुण की प्रधानता और आत्मा की अधीनता।

चन्द्र विवाह कुदरत का विज्ञान

'इसी तरह बहस्पति के चिह्न को देखिए। उसके पाश्व की ओर से चन्द्र चिह्न ऊपर की ओर उठता हुआ दिखाई देता है—माइड ओवर मैटर—जो इनसान की मानसिकता को पथ्वी से उठाकर, बहुत ऊचे स्तर पर ले जाता है। और इसके बिलकुल विपरीत शनि का चिह्न होता है, जिसमे पृथ्वी चिह्न बना कर, उसके पाश्व की ओर चन्द्र चिह्न को छिपता हुआ दिखाया जाता है। और यही शनि का गुण होता है—माइण्ड रूल्ड बाइ मैटर—सारी मानसिकता सिमट कर पथ्वी गुण के अधीन हो जाती है।'

सतपथी कहने लगे—"एक बुध ही ऐसा ग्रह है जिसके चिह्न मे तीन तत्त्व बनाये जाते हैं—नीचे पथ्वी चिह्न, उससे ऊपर सूय चिह्न और उससे ऊपर चन्द्र चिह्न। उसमें तीनो तत्त्व इकट्ठे होते हैं—मैटर, सोल, माइण्ड। लेकिन मैटर सबसे नीचे, सोल उससे ऊपर और माइण्ड उससे भी ऊपर।'

अब जाहिर था कि ऋग्वेद मे वर्णित सूर्य पुत्री जब यात्रा करती है तो जो बैल उसका रथ खीचते हैं वे बुध और शुक्र ही हो सकते हैं। और आगे काल की यात्रा म हर ग्रह की दो-दो राशियो के गुण जड-चेतन का प्रतीक बन जाते हैं जिनमे से इस रथ को गुजरना होता है।

लगा, ऋग्वेद का चन्द्र विवाह कुदरत का विज्ञान है, कि सूय का प्रकाश चन्द्र तक कैसे पहुचता है। लेकिन यह सिर्फ इतना ही नही है। इसकी छाती म बीज की तरह आत्म विज्ञान भी पड़ा हुआ है, कि महाचेतना का एक अश जब पथ्वी पर आने के लिए विदा होता है तो आग पानी, मिटटी के रूप म रूहानी, जेहनी

और फितरी वसफ उसकी यात्रा पूरी करवाते हैं और वह पृथ्वी पर इनसानी काया के रूप मे पहुचता है—महाचेतना का प्रकाश लेकर।

चन्द्र विवाह के वणन का एक और पक्ष याद आया सूर्य पुत्री ने जिन कानो से चन्द्र की सिफ्त सुनी थी और उसकी कामना करने लगी थी, उसके वे कान उसके रथ के पहिये बन जाते हैं।' सतपथी जी ने कानो के वणन मे छिपा हुआ ज्योतिष का विज्ञान एक नजर में ही देख लिया और कहने लगे—"काल पुरुष के लग्न से तीसरा स्थान (मिथुन राशि) कानों का होता है। चन्द्र सूय को सामने रख कर भले ही चन्द्र की राशि कर्क से लग्न बनाये और चाहे सूय की राशि सिंह से बनाये दोनो के तीसरे, कानो वाले स्थान पर बुध शुक्र की राशि आ जाएगी।"

वे निराश हो गये हैं

देखा, वाकई कर्क से तीसरे स्थान पर एक ओर बुध की कन्या राशि आ जाती है और दूसरी ओर शुक्र की वृष राशि। इसी तरह सिंह के तीसरे स्थान पर एक ओर शुक्र की तुला राशि आ जाती है और दूसरी ओर बुध की मिथुन राशि।

सतपथी जी कहने लगे, 'जिसने भी ऋग्वद मे यह चन्द्र विवाह लिखा है, उसने सारी उपमाए ज्योतिष विज्ञान का समझ कर लिखी है। इसलिए शुक्र की राशियो को रथ के पहिये कहा है और उन दोनो ग्रहो का दो बैल।"

और मैं देख रही थी इस सूरत मे सिफ कुदरत विज्ञान और ज्योतिष विज्ञान ही नही, इसकी छाती मे धडकता आत्म विज्ञान भी है। यह महाचेतना का वह पहलू है जो आलौकिकता की सिफ्त सुन कर यात्रा आरम्भ करता है और वही कशिश उसका बल बन जाती है यात्रा का बल! रथ के पहिये ही तो हैं, जिनके सहारे इनसानी काया दुनिया के जड-चेतन को पार करती है।

और आज दुनिया की यात्रा पर आया इनसान मजहब के नाम पर हाथा मे घातक हथियार लेकर खडा है। शायद इसीलिए कि वह जड चेतन की पहचान भूल गया है, क्योकि आलौकिकता की जो सिफ्त उसको मिली थी, उसकी गूज अब उसके कानो तक नही पहुचती है उसके कान तो रथ के पहिये थे और रथ के पहिये रुक गये हैं

इनसान की आत्मा, महाआत्मा की पुत्री, जो महा चेतना का प्रकाश धरती को देने आयी थी, वह प्रकाश उससे खो गया है, उसका मकसद खो गया है। और फितरी रूहानी और जेहानी सफर मे जो बैल उसका रथ खीचने वाले थे, आज वे बेहद निराश होकर इनसान के मुख की ओर देख रहे हैं।

प्रेत परछाइया

एक दिन शातिदेव जी आए। जानती थी कि वह शास्त्रीय सगीत की काफ़ी जानकारी रखते हैं। पर उस मुलाकात के दौरान यह भी जाना कि पिछले कई बरसो से वह हिन्दुस्तान के प्राचीन मदिरो की यात्रा करते हुए, उनका इतिहास खोज रहे हैं। अपने बहुमुखी अनुभवो की बात करते हुए, उन्होंने अपनी चढती जवानी के समय की एक घटना सुनाई, जिसका एक गहरा प्रभाव अभी तक उनके साथ चला आ रहा था

कहने लगे—"मोगा मे एक बहुत अमीर घराना था, जिन्हे 'ऊटोवाले सरदार' कहकर बुलाते थे। उनकी हवेली के बारे म कई दन्त कथाए मशहूर थीं। पर जब मैंने उस हवेली को, यानि एक खडहर को देखा, तो उसके हमेशा बद रहने वाले दरवाजो और झरोखो मे बरसो से लगे हुए जालो से अन्दाजा लगाया कि अब उस खडहर मे कोई नही रहता

'मेरी पैदाइश मोगा के नजदीक के एक गाव की है। पर जब मैं मोगा आकर पढ रहा था रात को उसी खडहर के एक ओर चारपाई बिछाकर सो जाता था, क्योकि वहा खुली हवा लगती थी पर एक रात क्या देखा कि उस खडहर मे से एक आदमी निकलकर मेरी चारपाई के पास आया, और कहने लगा— तुम यहा से अपनी चारपाई उठा लो।' मैं समझ नही पाया कि वह कौन था। मैंने यू ही कह दिया— मैं तो यही सोऊगा।' वह आदमी कुछ देर चुपचाप मेरी ओर देखता रहा फिर कहने लगा— तुम्हारी मर्जी। मैं तो इसलिए कह रहा था कि आज रात यह हवेली ढह जाएगी तो यह दीवार तुम पर आ गिरेगी'

इतना कहकर वह आदमी उसी खडहर मे गायब हो गया। पर मैं हवेली की खडहर जैसी दीवारो की ओर देखता हुआ, उसी तरह लेटा रहा

"वह रात गुजर गई। उस खडहर की कोई दीवार मुझ पर नही गिरी। फिर अगला दिन भी गुजर गया और शायद उससे अगला भी, कि जब मैं चारपाई उठाकर वहा सोने के लिए गया तो देखा—दीवार की एक खिडकी जरा सी खुली हुई थी, और उसमे वही आदमी खडा था। उसने मुझे देखकर, हाथ के

इशारे से पास बुलाया । मैं खिड़की के पास गया, तो कहने लगा—'भीतर आ जाओ।'

"मैंने आसपास देखा, कोई दरवाजा नही दिखाई दिया । पूछा—'यहां कोई दरवाजा ही नहीं, भीतर कैसे आऊ ?' उसने हाथ से साथ की दीवार की ओर इशारा किया । वहां एक दरवाजा जरूर था, पर बद था । तभी उसने उस दरवाजे के पास आकर भीतर से धकेल कर मुश्किल से इतना भर खोला कि जिसमे से मैं सरक कर भीतर जा सकू

"मैं भीतर दाखिल हुआ तो वह मुझे कई कमरो मे से गुजारकर, एक ऐसे कमरे मे ले गया, जहा घोर अधेरा था । कहने लगा—'बैठ जाओ !' मैंने पूछा—'कहां बैठू ? यहां कुछ दिखायी ही नही दे रहा ।' वह कहने लगा—'जहां तुम खड़े हो, वहां थोडा पीछे बेंत की कुर्सी पडी है ।' मैंने हाथो से कुर्सी टटोली और वहां बैठ गया ।

"तभी उसने कमरे के कोने मे एक बत्ती जलाई, जिसकी रोशनी बहुत थोडी सी जगह तक पडती थी । फिर उसने एक टेलिग्राम मेरे सामने रख दी । कहने लगा—'पढ़ो !' मैंने टेलिग्राम पढ़ी । वह लदन से आयी थी, और उसमें लिखा था कि आपका लदनवाला मकान अचानक गिर पड़ा है

"जो तारीख और वक्त लिखा हुआ था, वह ठीक वही था उससे तीन दिन पहले का, जिस रात उसने मुझसे कहा था कि यहा से चारपाई उठा लो, यह हवेली गिर जाएगी

"मैं हैरान था कि इस आदमी ने अपने घर के गिरने की जो पेशीनगोई की की थी वह सच निकली । सिर्फ वह यह नही जान पाया था कि उसका कौन सा घर उस रात गिर पडेगा

"उन दिनो आसपास के लोगों से मालूमात करके मैं इतना जान गया था कि उस खडहर जैसी बद हवेली के अधेरे मे वह आदमी कई बरसो से रह रहा था । वह उसके बाप की हवेली थी, जो किसी जमाने मे उस ओहदे पर था, जिसके मुताबिक वह घर मे ही कचहरी लगाता था । अपने इस इकलौते बेटे को उसने इग्लैंड भेजकर पढ़ाया था । इसने कानून की पढाई की थी, पर कभी वकालत नही की । घर म एक के बाद एक कई दुःखदायी घटनाए हुईं, और उसने अपने आपको उस खडहर मे बद कर लिया था । इतनी जानकारी मुझे बाहर से मिली थी, और खुद उस खडहर मे मैंने यह देखा था कि उस आदमी के पास बहुत बडी लायब्रेरी थी, जिसमे वेद-पुराण भी थे । वह ज्यादातर गरुडपुराण पढता रहता था, जिसे उसने खास तौर पर लाल कपडे मे लपेटकर रखा हुआ था

"फिर एक रात जब मैं अपनी चारपाई पर सो रहा था, वह मेरे सिरहाने आ खडा हुआ । मैं जागने पर डर सा गया—क्योकि उसके हाथ मे बदूक थी ।

कहने लगा—'मेरे साथ भीतर चलो। वहां कुछ आदमी आ गए हैं, मुझे मारने के लिए ' मैं उठ बैठा, पर कहा—'अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलता हू, पर यह अपनी बदूक मुझे दे दो।' वह नही माना। यू कहे जा रहा था कि उठो मेरे साथ चलो। उस वक्त मुझमे एक हौसला सा आ गया, और मैं उसके साथ हवेली के भातर चला गया। पूछा—'वे आदमी कहा हैं ?' यह कहने लगा—'भीतर आगन में।' आगन मे पैर रखते हुए मैं बडे ध्यान से चारो ओर देख चुका था कि आगन मैं कोई आदमी नही था। इसलिए मैंने आगन मे खडे होकर उससे पूछा—'वे कहा हैं ? यहा तो कोई नही '

"तब उसने उन कोठरियो की ओर इशारा किया जिनमे सलाखों वाले दरवाजे और ताले लगे हुए थे। देखने से ऐसा लगता था कि उन कोठरियों को कई बरसा से खोला नही गया। मैंने उससे बैटरी मागी। कोठरिया के भीतर बिलकुल अधेरा था। सलाखो मे से बैटरी की रोशनी डालकर भीतर देखता रहा —भीतर बरसा पुराने जाले लगे हुए थे, और कुछ नही था। पर वह हर कोठरी की आर इशारा करता हुआ कहे जा रहा था—वह खडे हैं सामने

"जाने उसे क्या दिखाई दे रहा था। पर मैं कुछ भी नही देख पा रहा था। मैं जानता था—व कोठरिया खाली थी। पर कोई प्रेत थे—जो उसे दिखाई दे रहे थे

"यह मुझे बाहर से कुछ बूढे बजुर्गों से बाद मे पता लगा कि इस आदमी का बाप जब घर मे कचहरी लगाता था, तो जिन्हे मुजरिम करार देता, उन्हें दूसरे दिन थाने मे पेश करना होता था। पर उस रात उन्हे बद करने के लिए—उसने अपनी इस हवेली मे ही ये काल-कोठरिया बनवा रखी थीं, जहा हमेशा पुलिस का पहरा लगा रहता था। और वे लोग जो कोठरियो मे बद किए जाते, रात भर गालिया बकते, साथ ही धमकिया भी देते कि वह बाहर निकलकर इकलौते बेटे को कत्ल कर देंगे

"मैं समझता हू कि यह आदमी, तब छोटा सा बच्चा रहा होगा, जब उसने इन काल-कोठरियो का सारा हगामा देखा होगा। साथ ही उसके भीतर एक खौफ सा उतर गया होगा—कि जो लोग कोठरियो मे बद किए गए हैं, वह किसी दिन कोठरिया मे से निकलकर उसे मार डालेंगे जरूर यही बचपन का हादसा होगा, जिसने उसे हमेशा के लिए मानसिक तौर पर बीमार कर दिया होगा "

शांतिदेव जी की सुनाई हुई यह घटना मुझे हर पक्ति पर याद आन लगी, जब मैं कोलिन विल्सन की लिखी हुई सर विलियम बैरेट की खोज के बारे में पढ रही थी कि जमीनदोज पानी की जानकारी का सम्बन्ध इनसान की अपनी ही किसी छुपी हुई शक्ति के साथ होता है। और उसी बुनियाद पर सैंकडों मैं

यह सिद्धांत खोजा था कि कि पैण्डूलम से कई ज़मीनदोज धातुओं का पता लगाया जा सकता है, वह पैण्डूलम सीधा—किसी धातु या पानी से भी संकेत लेता है और इनसानी जज़्बात से भी

इस सिद्धान्त के अनुसार, जैसे भी जज़्बात हो, वह आसपास की हर चीज़ पर अंकित हो जाते हैं। जिस जगह पर किसी ने खुदकुशी की हो, उस जगह पर पीड़ा और उदासीनता जम जाती है। यहां तक कि खुदकुशी के वक्त, खुदकुशी करने वाले की जो मानसिक हालत होती है, वह हालत इर्द-गिर्द के क्षेत्र को इस तरह प्रभावित कर जाती है, कि बरसो बाद भी, अगर कोई उस जगह जा खड़ा हो, तो उसी मानसिक उदासीनता के तीखे अनुभव मे से गुज़रता हुआ महसूस करता है। कई बार इतना कि वह खुद खुदकुशी करने पर आमादा हो जाता है

शांतिदेव जी की सुनाई हुई घटना, इस खोज के अनुसार बिलकुल वैज्ञानिक लगती है, कि जिस हवेली की दीवारों मे, इतनी बेबसी, इतना रोष और इतना खौफ़ जमा हुआ था, वहां बरसो तक एक आदमी का एकातवास, उसे ठीक उसी मानसिक हालत तक ले जा सकता था, जहां वह पहुच गया था

खौफज़दा हालत मे इनसान के भीतर की बिजलई ताकत कई बार तेज़ होकर, अपने तत्त्वों के सामर्थ्य से आगे निकल जाती है। और लथबरिज के अनुसार—उस सतह तक पहुच जाती है जो अगली दुनिया की एक वह सतह है, जहां सदियो पुरानी घटनाए भी किसी अजायबघर म रखी हुई चीज़ो की तरह निश्चल पड़ी रहती हैं। और एक खास आकार म बंधी व घटनाए भी कायम हो जाती हैं जिनका तआल्लुक, हमारी दुनिया के हिसाब से, किसी आने वाले वक्त के साथ होता है। शायद—यही विज्ञान था, जिसके मुताबिक उस हवेली वाले आदमी ने, एक आने वाली घटना को, यानि अपने मकान के अचानक गिर जाने वाली घटना को, पहले ही देख लिया था

खाली कोठरियो म जो उसे कभी इन्सानी सूरतें दिखाई देती थी, उन कोठरियों म बद किए जाने वालो के भीतर से खौफज़दा हालत मे पैदा हुई बिजलई ताकत से, इर्द-गिर्द के ज़र्रे-ज़र्रे मे उनके नक्शो का उतर जाना एक वैज्ञानिक हकीकत है जिसके मुताबिक उन लोगो का उन कोठरियो म से निकलकर चले जाने के बाद भी, अपने शरीरहीन शरीरो की सूरत मे वहा कायम हो जाना स्वाभाविक है।

यह मोमजज़ा—उस हवेली मे रहने वाले की मानसिक स्मृति भी हो सकती है, जो उसकी साइकी मे से उठकर इनसानी आकार धारण कर सकती है।

कोलिन विलसन की खोज है कि किसी भी प्रभाव को कबूल करने की ताक़त

पानी मे खास तौर से होती है । और इसीलिए और मुल्को की बजाय, इग्लैंड में सबसे ज्यादा प्रेती घर मिलते हैं, जा इग्लैंड मे सीलन-भरे माहौल की वजह से हैं । और जाहिर है कि दु खदायी हादसो के गहरे प्रभाव उसकी सीलन म जम जाते हैं ।

जो घटना शातिदेव जी ने सुनायी थी, लगता है—दहशत की घटनाए जो कभी उस हवेली मे हुई थी, वे उस हवेली की बद और अधेरी कोठरियो म हमेशा के लिए जमकर रह गई थी ।

दो चाबियो की दास्तान

रूहानी इल्म के दरवाजे को सिर्फ दो चाबिया लगती हैं, जिनमे से एक का नाम है अक, और दूसरी का नाम है अक्षर।

ऋषियों, सूफियो और दुनिया के दूसरे विद्वानो के इन चाबियो के इस्तेमाल करने के तरीके भले ही एक-दूसरे से अलग हो, पर इस नुक्ते पर वह एक ही राय रखते हैं कि पूरे ब्रह्माड की हर चीज जो बाहर से अलग-अलग दिखाई देती है, वह कही भीतर से एक दूसरे के साथ जुडी हुई है, और इस रूहानी दरवाजे को अगर खोलना हो तो उसकी सिर्फ दो चाबिया हैं

दोनो चाबियो को एक रूप करते हुए हिबरू चिंतन ने अक्षरो को अक शक्ति दी, और इसी अक शक्ति को इस्तेमाल करके आज के लैथबरिज जैसे पुरावैज्ञानिको ने इस स्थूल दुनिया से आगे अदृश्य सूक्ष्म दुनिया की ओर सकेत किया है फ्रायड के चेतन और अवचेतन सिद्धात मे सी० जी० जुग पहला मनोवैज्ञानिक था, जिसने अवचेतन सिद्धात मे सामूहिक चेतना के चिन्तन को शामिल किया—कलैक्टिव कॉशियस को। और साथ ही उसने महाचेतना की ओर सकेत किया, जिसमे परा शक्तियो के रहस्य छुपे हुए हैं

जुग अपने एक निजी अनुभव को शब्द देता है—"1924 की सर्दिया की एक रात थी, जब मैं बहुत से पैरो की आहट से जाग उठा। यह आहट मेरे घर से बाहर थी, पर घर के बहुत नजदीक। साथ ही सगीत की एक आवाज थी, जो दूर से सुनाई देती हुई, पास, और पास आती जा रही थी। उस वक्त मुझे लगा—'कई आवाजो के हसने और बातें करने की आवाज भी आ रही है।'

" यह कौन हो सकता है ?'—मैं सोचने लगा कि बाहर की नदी की ओर सिर्फ एक छोटी सी पगडडी है, वहा इस वक्त कौन थे ?

" मैं उठकर खिड़की की ओर गया, उसे खोल कर बाहर दूर तक देखा, पर कहीं कुछ भी दिखाई नही दे रहा था। तेज हवा तक नहीं थी। यह भी लग रहा था कि मैंने जो कुछ सुना था, वह सपने की हालत मे नही था, तो भी उसे अपना भ्रम समझकर मैं सो गया

"और यही सब कुछ फिर सुनाई देने लगा—वही पैरों की आहट, वही संगीत, वही हंसी, पर इस बार सैकड़ों चेहरे भी दिखाई देने लगे, जैसे वह इतवार के दिन खूबसूरत कपड़े पहनकर हंसते-खेलते कहीं जा रहे देहाती लड़कों के चेहरे हों

"मैं सोचने लगा—'कमाल है, जिस बात को मैं सपना समझ रहा था, वह हकीकत थी। और मैंने उठकर दोबारा अपने कमरे की खिड़की खोली। बाहर पूरे चांद की खुली चांदनी थी, पर कहीं किसी की परछाई तक भी नहीं थी यह क्या था, जो था भी और नहीं भी ? यह जलूस की शक्ल में चल रहे लड़के, जो दिखाई दिए वह एक हकीकत थे या भ्रम ?

"यह राज मैं बहुत देर बाद जान पाया कि सत्रहवीं सदी में एक आदमी हुआ था जो इस क्षेत्रीय स्थान पर परा शक्तियों की साधना करता था। एक रात उसके साधना स्थान को बहुत से लोगों ने घेर लिया और सारी रात गाते रहे उसी साधक ने दूसरे दिन इस बारे में पूछताछ की तो एक चरवाहे से उसे पता लगा कि इस जगह पर इलाके के जवान लड़कों की एक हंसती-गाती टोली, मौत के मुंह में चली गई थी "

सी० जी० जुंग का यह अनुभव आज के पुरावैज्ञानिक लैथब्रिज की उस खोज की ताईद करता है, जिसका कहना है कि हमारी दिख रही दुनिया से ऊपर एक सतह है, जिसमें हर बीती हुई घटना कायम हो जाती है

और इसी तरह के कुछ और क्षेत्रों की बात करते हुए रूहानी इल्म जानने वालों ने, रूहों के निवास के कई और क्षेत्र माने हैं। हमारी दिखाई दे रही दुनिया की सतह से ऊपर भी और इसी दुनिया का वह हिस्सा भी, जहां हमें अपनी सीमित दृष्टि से कुछ नहीं दिखायी देता

रूह विज्ञान के अध्ययन में पुनर्जन्म का सिद्धांत, हमारे प्राचीनतम चिंतन में तो शामिल है ही, पर आज के वैज्ञानिक युग में इसका अध्ययन पश्चिमी देशों में भी हो रहा है। पर जानती थी—कि इस्लाम में पुनर्जन्म का सिद्धांत नहीं माना जाता। तो भी रूहों को वश में करने वाला इल्म उनके एतकाद में बड़ी अहमियत रखता है।

मैं काफी देर से किसी ऐसे विद्वान की तलाश में थी, जो इस इल्म के बारे में गहरी जानकारी भी रखता हो, और साथ ही इस रूहानी इल्म पर कुछ रोशनी डालने के ख्याल से मेरे साथ बातें करने के लिए रजामंद हो जाए।

मेरी इसी तलाश में से मुझे दिल्ली के एक मौलवी हफीज़ुर रहमान का पता मिला, जिनसे पहली मुलाकात में ही मेरी दिलचस्पी और गहरी हो गई।

वह शहर की एक घनी आबादी में रहते हैं जहां पहुंचने के लिए बहुत संकरी गलियों में से गुजरना पड़ता है। एक गली के संकरे दरवाज़े में से गुज़र-

कर, सामने एक खुला आगन आ जाता है, जिसके एक तरफ मदरसा खुला हुआ है, और दूसरी ओर यूनानी दवाखाना, और साथ ही हुजरे जैसा एक स्थान है, जहा बैठकर वह मौलवी साहिब ग़ैबी मर्ज वालों को तावीज़ देते हैं—पर इस माहौल मे, मैं उनके साथ अपनी दिलचस्पी की बात तो कर सकती थी, मगर तीन-चार घटे लम्बी मोहलत नहीं पा सकती थी।

जिन लोगो ने उनका पता दिया था, उनसे मैंने इतना भर जान लिया था कि वह बडे पाक रूह इन्सान हैं। इतने कि अपने खर्च पर वह क़रीब चालीस जरूरतमद बच्चो को तालीम भी देते हैं और रिहायश भी।

यह भी पता लगा कि वह कभी किसी के घर जाना मजूर नहीं करते। पर जब एक बरस लम्बी मेरी जुस्तजू वह पहचान गए, तो यह 18 अप्रैल, 1986 की सुबह थी, जब उन्होंने मेरी दावत कबूल कर ली, और मेरे घर आने के लिए मान गए।

यह एक लम्बी मुलाकात थी, जिसमे मैंने जाना कि सहारनपुर जिला के दिओ बन्द इलाके मे उनके परदादा मौलाना शहारुफदीन रफीउद्दीन ने अरबी-फारसी की तालीम देने के लिए एक यूनिवर्सिटी खोली थी, और जहा के सैकड़ो तालिबइल्म उनके मुरीद हो गए थे

उसी जगह उन्होंने तालीम पाई—अरबी फारसी की भी, यूनानी तिब की भी, इल्मे नजूम की भी और इल्मे जफर की भी।

इस इल्मे जफर का ताअल्लुक पराशक्तियो के साथ है जिसकी तफसील मे जाते हुए उन्होंने बताया कि उनके एतकाद मे पूर्वजन्म का सिद्धात शामिल नही है और न ही मौत के बाद रूहो के भटकने का। पर उनके एतकाद मे एक ऐसी नस्ल का सिद्धात जरूर शामिल है, जिसे 'जिन्नात' कहते हैं। कहने लगे—"यह जिन्नात-नस्ल इसी हमारी दिखाई देने वाली दुनिया मे रहती है, पर दिखाई नही देती। और यह एक ऐसी नस्ल है, जिसे किसी भी तरह की सूरत बदल लेने का इख्तियार है।"

पूछा—"यह छलावा-नस्ल क्या खलाई शक्तियो की ही कोई सूरत नही? कुदरती तत्त्वों के जिस खास तवाजन से इन्सान पैदा होता है, और जिस किसी अलग तवाजन से पशु, पक्षी, पेड और फूल पैदा होते हैं, उसी के किसी अलग तरह के तवाजन से शायद यह जिन्नात-नस्ल पैदा होती हो ?"

वह हस दिए और जिन्नात को वश मे करने के अमल की बात करते हुए कहने लगे—"इस साधना के चार पहलू होते हैं—बादी, खाकी, आबी, और आतिशी "

जाहिर था कि खलाई तत्त्वो मे से अगर हवा के तत्त्व को वश मे करना है, तो वह अमल बादी होगा, अगर पृथ्वी तत्त्व को वश मे करना है, तो वह अमल खाकी

होगा, और इसी तरह जल तत्त्व के लिए आबी, और अग्नि तत्त्व के लिए आतिशी

इल्मे जफ़र मे सबसे ज्यादा अको की अहमियत है, जो रूहानी इल्म के दरवाजे की चाबी है । और इसकी तशरीह करते हुए उन्होंने हवाला देकर बताया —"जैसे कुरान की एक पक्ति है—'इन्ना रब्बी रहमु वदूद ।' जिसका अर्थ है—बिला शुबहा मेरा खुदा मेहरबान है और मोहब्बत करने वाला है । इल्मे जफ़र के मुताबिक इस पक्ति के कितने अक हैं, यह देखना होता है । जिस पक्ति के जितने अक हो, उतनी मर्तबा वह कलाम चालीस दिनो तक पढना होता है "

कोलिन विल्सन की किताब मे एक पुरावैज्ञानिक लैथबरिज की खोज के बारे म मैंने जो पढा था, वह याद आने लगा—कि अक चालीस इस दिखाई देने वाली दुनिया का आखिरी अक है । इसके बाद वह दुनिया शुरू होती है जो दिखाई नही देती । और फिर चालीस अक के बाद एक सतह शुरू होती है, जहा वह दूसरी सतह खत्म हो जाती है

यह चालीस अक क्या मोअजजा है, मैंने यह सवाल पूछा, तो हफ़ीजुर रहमान साहिब के साथ आए दूसरे मौलवी साहिब कहने लगे—"इसका जवाब मैं देना चाहता हू । है तो यह कोई कुदरत का राज़, जो जाना नही जा सकता, यह राज़ इस बात से कुछ पकड मे आता है कि जब मा की कोख मे कोई बच्चा आ जाता है, तो वह सिर्फ़ कतरे की सूरत में होता है, जो चालीस दिन तक उसी सूरत मे रहता है । उसकी तरबियत इकतालीसवें दिन से शुरू होती है इसी तरह इल्मे-जफ़र मे जो चालीसा काटा जाता है उसका असर इकतालीसवें दिन से शुरू होता है " लगा—यह इल्म भी एक पुरा-वैज्ञानिक के इल्म जैसा है, जिसने अक के वसफ़ को तलाश लिया है, पर इस वसफ के भीतर कौन सा राज़ है, उस राज़ की सूरत को नही पहचाना

पर यह वह घडी थी—जब यह राज़ लफ़्ज़, मेरी नज़र मे उस सामर्थ्य से जुड गया, जो किसी भी पैमायश का सामर्थ्य होती है ।

मैंने हफ़ीजुर रहमान साहिब से पूछा—"यह तो जानती हू, कि जिस तरह अल्लाह लफ्ज के अक गिने गए हैं और उन्हें तीन पक्तियो मे इस तरह बाटा जाता है, कि जिस ओर से भी गिनती की जाए उसका जोड 66 आना चाहिए । जैसे अल्लाह के नाम का तावीज जब बनाया जाता है तो पहली पक्ति म 21, 26, 19 अक लिखे जाते हैं, दूसरी पक्ति म 20, 22, 24 और तीसरी म 25, 18 23, जिसके मुताबिक जिस ओर से भी गिनती की जाए—जोड 66 आएगा । पर जिस तरह कीरो ने हर अक्षर के नबर बता कर किसी भी इनसान के नाम की गिनती कर लेने का हिसाब बताया है, अगर उसी तरह कोई खुद ही तावीज बना ले तो ?"

21	26	19
20	22	24
25	18	23

वह हँस पड़े। कहने लगे—' उस तरह भले ही कई तावीज बना लिए जाएं, उनका कोई असर नहीं होगा। जो इस इल्म को जानता है, वह पहले अक्षरों और अंकों की शक्ति को जगाता है। उस शक्ति को जगा लेने के बाद ही—उसका जहूर होता है "

और तावीजों की तफसील की बात करते हुए वह कहने लगे—तीन पंक्तियों वाले तावीज को मुसल्लस कहा जाता है, चार पंक्तियों वाले को मुरब्बा। पांच पंक्तियों वाले को मुखम्मस, और छह पंक्तियों वाले को मुसद्दस। यह गिनती सोलह तक भी जाती है, पर ये तावीज बनाने मुश्किल से मुश्किल होते चले जाते हैं। जो आम इस्तेमाल मे लाए जाते हैं, वह सिर्फ पहले दो तरह के होते हैं—तीन पंक्तियों वाले और चार पंक्तियों वाले।'

यह किसी भी देवी-देवता की मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करने वाला अमल था, जो बिल्कुल वैज्ञानिक कहा जा सकता है।

पूछा—'जिनात को वश में करने के अमल में भी क्या उसी तरह खतरा पेश आता है, जिस तरह हनुमान या किसी भी देवता की सिद्धि करने वालों का तजुर्बा है?"

उन्होंने एक घटना सुनाई—' मेरे एक मुरीद ने यह अमल करना चाहा था। मुहारत करता रहा पर अभी मैंने उसे इस काबिल नहीं समझा था कि उससे यह अमल करवाया जाए। उसने जल्दबाजी कर, मेरा ब्यास चोरी से पढ़ लिया। ब्यास हम उस नोटबुक को कहते हैं, जिसमें हर नुस्खा उतारा होता है। वह मुझसे चोरी, जैसा नुस्खे मे लिखा हुआ था, पढ़कर अमल करने के लिए चल दिया, और थोड़े दिनों बाद ही पागल हो गया ऐसा अमल हमेशा अपने पीर की निगरानी में करना होता है। जिनात बिरादरी में से कोई भी इनसान के वश में नहीं होना चाहता, इसलिए वह कई सूरतें इख्तयार करके उसे डराता है। अमल के दौरान भले ही अपने गिर्द एक लकीर खिंची होती है जिसके भीतर बैठा इनसान हिफाजत में होता है, पर अगर वह जिनात शक्ति की भयानक सूरतें देखकर खौफजदा हो जाए, तो फिर अपने होशोहवास हमेशा के लिए गवा बैठता है "

लगा—यह सारा अमल वैज्ञानिक है। किसी तत्त्व की असीम शक्ति को बर्दाश्त करना—इनसान की सीमित शक्ति के वश से बाहर रहता है जब तक कि वह अपने मे ऐसा सामर्थ्य न पैदा कर ले

जिन बीमारियो को 'ऊपर की हवा' का नाम दिया जाता है, उनकी तफ्तीश कैसे होती है, जब मैंने यह सवाल हफीजुर रहमान साहिब से पूछा, तो उन्होंने तफसील से बताया—' यह पहचान कई तरीको से होती है। बहुत सारे मरीज तो वहम के शिकार होते हैं, जिन्हें 'साइकलॉजीकली बीमार' कहा जा सकता है। हजारो म से कोई एक होता है जिसे सचमुच हवाई बीमारी होती है। उनकी तफतीश हम कलाम पढ़कर करते हैं। कई बार कागज का एक टुकडा उसकी मुट्ठी मे देकर कलाम पढते हैं, तो वह कागज उसकी मुट्ठी मे जलने लगता है। या उस कागज का नाप पल भर के लिए अपने सही नाप से छोटा हो जाता है। कई बार गुलाब का फूल उसकी मुट्ठी मे देकर जब कलाम पढ़ते है, तो उस गुलाब को पानी के कटोरे मे रखकर देखते हैं तब जब वह फूल अपना रंग छोड दे तो पहचान हो जाती है कि उस मरीज को हवाई मर्ज है। मैं किसी भी मरीज को देखने के लिए उसके घर नही जाता। पर एक बार एक मरीज हिंदूराव हस्पताल म था, और डाक्टरो न हर तरह का मुआइना करने के बाद कह दिया कि उसे कोई बीमारी नही पर वह मरीज तडप रहा था। जब मुझे उसके रिश्तेदार किसी तरह मनाकर हस्पताल ले गये तो मैंने जाते ही परख लिया कि मरीज को हवाई मर्ज है। कलाम पढा तो पन्द्रह बीस मिनट बाद मरीज का आराम आने लगा। उस वक्त एक डाक्टर ने आकर बडे गुस्ताख लफ्जो मे मेरे इल्म की तौहीन की, तो मैंने डाक्टर से कहा—'आप मरीज की नब्ज देखते रहिए।' वह मरीज की बाह पकडकर नब्ज देखने लगा, तो मैंने एक कलाम पढा। डाक्टर ने परेशान होकर मेरी ओर देखा कहने लगा—मरीज को अचानक 106 बुखार हो गया लगता है।' मैंने कहा—'कोई खतरा नही। आप नब्ज देखते रहिए। तब मैंने कोई दूसरा कलाम पढा, तो डाक्टर बोल उठा—'यह क्या मोअजज़ा है, अब बुखार बिल्कुल नहीं है। नब्ज नार्मल हो गयी है।' वही डाक्टर फिर अपनी बेटी के इलाज के लिए मेरे पास आता रहा "

इस रूहानी इल्म की बातें कई पहलुओ से इस इल्म पर रोशनी डालती रहीं, तो काफी देर से मन मे जो शका थी मैंने उसका जिक्र करते हुए उनसे पूछा—'पर तन्त्रशक्ति की तरह जो लोग आपके इस इल्मे जफर का गलत इस्तेमाल करते हैं, उनके बारे मे आप क्या कहेंगे? बहुत से लोग किसी दुश्मन को मखा डालने तक भी चले जाते हैं और कहा जाता है कि वह ऐसे जादू-टोने अक्सर मौलवियो से करवाते हैं '

हफीजुर रहमान साहिब के चेहरे पर एक नफरत-सी आ गई और वह

कहने लगे—"यह अमल दो तरह का होता है। एक जलाली और एक जमाली। जलाली अमल नेक रूहा वाले इनसान करते हैं। और उस अमल के दौरान हर तरह से परहेज़गार रहते हैं। न किसी जानवर का गोश्त खाते हैं न किसी जानवर से पैदा हुई कोई चीज। जिस तरह अंडा किसी जानवर से पैदा हुई चीज है, उसी तरह दूध-दही भी किसी जानवर से पैदा हुई चीज है। वह इनसे हर तरह से परहेज़गार रहते हैं। इस जलाली अमल यानी ऐसा कोई तावीज नहीं बनाते जो किसी को नुकसान दे सकता हो। वह खुदा की खलकत की खिदमत करने के लिए अपने इल्म को इस्तेमाल करते हैं। इस इल्म की पाकीजगी यह है कि गलत इस्तेमाल की ताकत ही इस इल्म में नहीं होती। कभी किसी तरह की दौलत के लालच में वह कुछ करना भी चाहें तो उनसे हो नहीं सकता

"पर जो जमाली इल्म वाले होते हैं, वह हमेशा गंदी चीजों के अमल से यह इल्म हासिल करते हैं। इसलिए उसका इस्तेमाल भी हमेशा गलत चीजों के लिए होता है। अगर कभी वे चाह भी कि किसी की खिदमत के लिए उस इल्म का इस्तेमाल करें, तो नहीं कर सकते। यह उनके इख्तयार में नहीं होता।

"जलाली इल्म की साधना हमेशा पाक साफ जगहा पर होती है और जमाली इल्म की साधना ग़लीज़ जगहों पर।"

दोपहर ढलने को थी, जब मैं हफीजुर रहमान साहिब के रुखसत के वक्त उन्हें खुदा हाफिज कह रही थी, तो लगा—जैसे मैंने एक चेहरे में कई प्राचीन ऋषियों, सूफियों, मनोवैज्ञानिकों और पुरावैज्ञानिकों का दीदार पा लिया है—जिनका चिंतन हज़ारों बरसों से रूहानी इल्म का दरवाज़ा खोलने के लिए, अंकों और अक्षरों की दो चाबियों में प्राण प्रतिष्ठा कर रहा है

एक घंटा फ़ुर्सत का सिला

(पण्डित शिवसुंदर दधीचि के साथ एक मुलाकात)

अ पंडित जी ! वैसे तो ईश्वर-अल्लाह एक ही बात के नाम हैं, पर एक राज की बात आपके मुंह से सुननी है कि आपने दधीचि ऋषि के वंशज होकर भी अपना मुर्शिद एक मुसलमान चुना, यह कैसे हुआ ?

द दुरुस्त फरमाया है। मैं हू तो दधीचि ऋषि के वंश से, जिसने राक्षसो को मारने के वक्त राजा इन्द्र के अस्त्रो के लिए अपनी हड्डिया दान दे दी थी। उस दधीचि के ग्यारह पुत्र थे जिनमे से एक अफगानिस्तान चला गया जिसका वंश आज दायिमा कहलाता है, और दस पुत्र जो यहा थे, उन सबका वंश 'दधीचि' कहलाता है। हमारे वंश की कोई भी लड़की दधीचियो के खानदान से बाहर ब्याह नहीं करवाती पर एक ऐसा संयोग बना कि मैं मिस्त्री याहिया खां से वाकिफ हुआ, और आगे ईश्वर अल्लाह की ऐसी मर्जी हुई कि मैंने उसे मुर्शिद धारण कर लिया

अ कुछ विस्तार से बताए ! मैंने आपके जन्तरो के बारे मे बहुत कुछ सुना है कि आप एक पहुचे हुए इनसान हैं !

द उदयपुर और जयपुर के बीच एक मंदिर पडता है—लूनी। मैं वहां का जन्मा-पला हू। काम रोजगार के लिए दिल्ली आया था। यहां एक फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर के यहा काम मिला। पाच छह साल काम किया, पर लगा कि यह रोजी रोटी उम्र भर के लिए नही। काम से इस्तीफ़ा देकर कुछ ट्यूशनें करने लगा। एक इलैक्ट्रीकल कॉंट्रेक्टर था, उसके काम की लिखा पढी भी करता था, पाच बजे तक। आगे उसी तरफ एक ट्यूशन करनी होती थी, सात बजे। बीच मे एक घंटा फुर्सत का होता था, जो पता नहीं लगता था कि कैसे गुजारू। अगर पाच बजे घर चला जाता तो बस आना-जाना ही होता था। या घर जाकर अलसा जाता था, और सात बजे फिर वहा पहुचना मुश्किल हो जाता था।

मैं जिस ठेकेदार के दफ्तर मे काम करता था, वहीं मिस्त्री याहिया

खां के साथ कभी-कभी मुलाकात होती थी। एक दिन वह कहने लगा—'मेरा घर राह में पड़ता है, बाबू जी ! आप रोज़ एक घण्टा मेरे घर आ जाया करो !'

मैं वहां जाने लगा, तो देखा कि वहां जरूरतमंदों की कतार लगी रहती थी। किसी को ताबीज़ या कोई जन्तर लिखकर दे रहे होते, किसी को फूंक मारकर पानी का घूंट पिला रहे होते। वह बन्दा मुझे बड़ा नेक लगता था, पर मैंने, जब यह सब कुछ देखा, तो कहा—'यह क्या करते हो ? लोगों को बेवकूफ़ नहीं बनाते ?'

मैं जब भी यह बात कहता वह हंस देते। कभी कभी इतना कह देते—'मैं लोगों की खिदमत करता हूं। कोई पैसे वाला आ जाए तो उसको भी, मैं उसको न नहीं कहता, पर जो लोग गरीब होते हैं, जिनके पास दवादारू के लिए भी पैसे नहीं होते, मैं उनके लिए यह खुदाई इमदाद हासिल करता हूं।'

इस तरह कई महीने गुज़र गए। सितम्बर का महीना था। कहने लगे—'दिसम्बर गुज़रने से पहले नौकरी मिल जाएगी। बस इतना करो बाबू जी कि जहां कोई जगह खाली हो, वहां अर्ज़ी ज़रूर दे दिया करो।'

मैं अखबार में जब किसी नौकरी की इत्तलाह पढ़ता, अर्ज़ी दे देता। अक्टूबर भी गुज़र गया, और नवम्बर भी। मैं निराश-सा हो गया था कि अचानक दिसम्बर की 22 तारीख को नौकरी मिल गई।

बात तो मेरे पीर की सही हो गई, पर मुझे फिर भी उन पर कोई विश्वास न बंधा। सोचा—यूं ही संयोग से यह बात सही हो गई।

फिर एक बार मैंने उस करनी वाले की अज़मत आंखों देखी। एक दिन एक मर्द अपनी औरत को लेकर आया, जिसका पेट इतना अफराया हुआ था कि उससे चलना भी मुश्किल हो रहा था। वे दोनों डरे हुए थे क्योंकि डाक्टरों ने ऑपरेशन की सलाह दी थी। पीर ने उस मर्द से कहा—'फ़िक्र न करो, अभी राज़ी कर देता हूं। सामने नल लगा हुआ है, दो बाल्टी पानी भर कर रख दो, और सामने एक गुसलखाना है उसका दरवाज़ा खोल दो।' और पीर ने एक गिलास पानी मंगवाकर उसमें फूंक मारी, और औरत से कहा—'यह पानी पी लो।'

उसने अभी आधा गिलास ही पिया था कि कहने लगी—हाजत महसूस हो रही है। गुसलखाने का दरवाज़ा पहले से ही खुलवाया हुआ था। पीर ने उसे गुसलखाने में जाने के लिए कहा। वह अन्दर गई, दरवाज़ा बंद किया तो बाहर सारा कमरा बदबू से भर गया।

मैं घबरा गया, उठकर जाने लगा, तो उन्होंने कहा—'बस दो मिनट की बात है बाबू जी ! घबराओ मत।' उस बीबी के साथ आए मर्द ने पानी की बाल्टियों से गुसलखाना धो दिया, और उसने देखा कि बीबी के पेट में से छिपकली निकली थी, और उसी घड़ी से वह बीबी राजी हो गई

मैं हैरान तो रह गया उनके इल्म पर यकीन भी आया, पर फिर भी मैं यह नहीं सोचता था कि मुझे यह इल्म हासिल हो। फिर कुछ वक्त बीत गया तब एक दिन वह खुद ही कहने लगे—'बाबू जी, आपकी रूह नेक-पाक है। आप गोश्त भी नहीं खाते, शराब भी नहीं पीते। आप मुझसे यह इल्म हासिल कर लो और लोगों की खिदमत करो।'

मैंने कहा—'आप अपना इल्म अपने बेटे को क्यों नहीं बख्शते ? मुझे क्यों देना चाहते हैं ?' वह कहने लगे—'मेरा बेटा इस काबिल नहीं। अगर मैंने अपना इल्म उसे दिया तो उसका रुझान पैसे कमाने की तरफ होगा, लोगों की खिदमत करने की तरफ नहीं। यह इल्म किसी पाक रूह के पास होना चाहिए '

अ सो आपकी एक घण्टे की फुर्सत ने यह संयोग बना दिया कि आपने इतना बड़ा इल्म हासिल कर लिया यह बताइए कि आपके इस इल्म में और तन्त्रशक्ति में क्या फर्क है ?

द विज्ञान वही है। पराशक्तियों के साथ संबंध जोड़ना होता है

अ इसकी साधना कैसे की ?

द पूरे छह साल साधना की। रोज रात को पीर के घर जाकर। आयतों और हिंदसियों के मुताबिक साधना करनी होती है

अ मसलन ?

द मसलन एक छोटी सी आयत है—या बाशितो। इसके 72 हिंदसे हैं

अ 72 कैसे हुए ?

द यह कोई नहीं जानता। हर हर्फ के हिंदसे मिथ हुए हैं

अ जैसे कीरो ने अंग्रेजी लिपि के हर हर्फ के हिंदसे लिखे हैं—ए० आई० जे० का एक एक ई० के पांच एफ० के आठ और इसी तरह हर हर्फ के, जिनके बारे में वह लिखता है कि वह यह राज नहीं जानता कि इन हर्फों के नम्बर कैसे बने पर प्राचीन हिब्रू जुबान में लिखे मिलते हैं

द आयतों के हर्फों का मिली हुई गिनती मिस्र से चलती आ रही है इसका विज्ञान भी हमारे इल्म में नहीं।

अ हां आप कह रहे थे कि उस आयत के 72 हिंदसे हैं

द सो उस आयत का रोज 72 बार पढ़ना होता है, और कागज पर नक्श

बनाकर पहले दिन एक बार लिखना, दूसरे दिन दो बार, तीसरे दिन तीन बार और इस तरह 72वें दिन 72 बार। इस तरह हर आयत का उसके हिंदसों की गिनती के मुताबिक जाप करना होता है। जाप भी करना और लिखना भी

अ पर कई आयतें लम्बी होती होंगी, उसी हिसाब से उनके हिंदसियो की गिनती होगी

द जी हां, कई तीन हज़ार एक सौ पच्चीस हिंदसो की हैं, जिन्हें सवा लाख की गिनती म पढ़ना होता है। उसी क लिए चालीस काटे जाते हैं। अगर एक दिन म तीन हज़ार एक सौ पच्चीस बार पढ़ें तो चालीस दिन म सवा लाख की गिनती पूरी हो जाएगी

अ पर रोज गिनती कैसे करते हैं ?

द एक तरीका तो यह है कि एक हज़ार दानो की तस्बी बनाकर तीन बार फिरा ली, फिर एक सौ पच्चीस दानो के आगे गाठ बाधकर, गिनती पूरी कर ली। दूसरा तरीका यह है कि सौ बार पढ़ने मे कितना वक्त लगता है, उस हिसाब स घण्टो का समय मिथकर घड़ी पास रख ली

अ हुज़ूर यह बतायें कि चालीसा काटने के लिए, उसकी इब्तिदा किसी खास रोज़ से शुरू करते हैं या जब दिल चाहे ?

द चालीसा काटने के लिए, एकम् के चांद वाली रात से जो पहली जुम्मेरात आए, उस दिन से इब्तिदा होनी चाहिए। उसे नौचदी जुम्मेरात कहते हैं आपने आयतो के हिंदसो की बात की थी, एक 'दुआ ए शफी' होती है, जिसकी गिनती एक लाख पैंसठ हज़ार छह सौ ग्यारह मिथी गई है, वह अपने हिंदसो के मुताबिक पढ़नी होती है

अ और जब यह सारी साधना पूरी हो जाए

द तब नियाज़ देना होता है। रोज़ कागज़ो पर आयतें लिखी जाए, उन सब कागज़ों को मोड़कर, आटे मे गूथकर, उस आटे को बहते दरिया मे मछलियो को डालना होता है। साथ ही खीर पकाकर आधी दरिया को नियाज़ देनी होती है और आधी खुद खानी होती है उसके बाद ही उस जन्तर का इस्तेमाल हो सकता है पहले नहीं।

अ साधना के समय भी कोई और पाबन्दी ?

द हां, कुछ आयतो की साधना के समय आसन दरी का होता है, कुछ आयतो की साधना के समय टाट का, या घास का। इसी तरह रंगों का फर्क होता है, कइयो के समय लाल रंग का धुआं करना होता है, कइयो के समय खाकी या सफेद रंग का

अ मसलन ?

द गुग्गल मे केसर मिलाकर जलाए तो वह धुआं लाल रग का होता है। लौंग, काले रग की नुमाइन्दगी करता है, जायफल खाकी रग की, लोबान सफेद रग की

अ आपने कभी रूहों का दीदार भी पाया है ?

द जी हां! धुए में से धुए के आकार भी रूहें नुमाइन्दा होती हैं, पर वे मेहरबान होने से पहले इनसान की बडी सख्त आजमाइश लेती हैं। उस वक्त डरना या घबराना नही होता। मैं कोई हिम्मतवाला बन्दा नहीं, पर मेरी साधना के दौरान मेरे पीर जी मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बैठे रहते थे

अ पीर जी की कोई तस्वीर आपके पास होगी ?

द नही जी, उन्होंने जिन्दगी मे कभी तस्वीर नही खिचवाई थी। वह दीवार पर भी किसी पीर या दरगाह की तस्वीर नही लगाते थे कि साल दो साल बाद जब तस्वीर फट जाएगी, तो रुल जाएगी। ऐसी पाक चीजें रोलने के लिए नहीं होती

अ आपके पहनने के लिए किसी रग या कपडे पर पाबन्दी नहीं थी ?

द नही! बात रूह को पाक रखने की है। एक बार मेरे पीर जी के और शागिर्दों मे से एक मुझसे हसद करने लगा। उसने शिकायत की कि पीर जी सारा इल्म मुझे देते हैं उसे नही। पीर जी हस दिए। अगले दिन जब कोई मरीज आए हुए थे, पीर जी ने मुझसे पूछा—'भई, कमरे मे कौन है ?' तो मैंने कहा—'जी खुदा की खलकत है। फिर यही बात पीर जी ने उस दूसरे शागिर्द से पूछी, जिसने शिकायत की थी। वह कहने लगा—'जी इतने मर्द हैं, और इतनी औरतें '

उस वक्त पीर जी ने कहा— भई, तेरी शिकायत का जवाब तुझे मिल गया। तुझे अभी मर्द और औरत का फर्क दिखता है। तुझे अभी सारे इनसान खुदा की खलक्त नहीं लगते। इसलिए तुझे यह इल्म हासिल नहीं होना।'

उसकी शिकायत मे यह शिकायत भी शामिल थी कि पीर जी एक हिन्दू का इल्म दे रहे हैं, मुसलमान का नहीं। उस वक्त भी पीर जी ने कहा कि बात हिन्दू या मुसलमान की नही, बात पाक रूह की है

अ सो यही राज है—एक दधीचि ऋषि के वश से आये पण्डित का, जिसने मिस्त्री याहिया खा को मुर्शिद धारण किया। बस एक बात और बताए कि अलग-अलग असर वाली आयतों का कोई अलग अलग नाम भी होता है या नही ?

द जरूर होता है। आयतें चार तरह की होती हैं—आबी, खाकी, बादी,

और जलाती

म यानि पानी, ज़मीन, हवा, और अग्नि—चार शक्तियों की नुमाइन्दगी करने वाली।

द जी हां! आबी बड़ा सुकून देती हैं, और जलाती सारे बदन में आग जला देती हैं

म इतनी वाक़फ़ियत देने के लिए आपका बड़ा शुक्रिया दधीचि साहब, और साथ ही मेरा सलाम आपके मुर्शिद को! बस एक ही दुआ मांगती हूं कि जो कोई आपको मुर्शिद बनाए, वह भी पाक रूह वाला इन्सान हो।

प्रश्नकुण्डली की अहमियत

एक लेख पढ़ रही थी, जिसमे हिन्दुस्तान के वजीरे-आजम के भविष्य की बात की हुई थी—ज्योतिष विज्ञान की बुनियाद पर।

हमारे वजीरे-आजम की सही जन्मकुण्डली किसी के पास नहीं। इसलिए अलग-अलग कियाफे लगाए जाते हैं—जिनमे मिथुन लग्न से लेकर, कर्क, कन्या और तुला तक कई कुण्डलियां बनाई जाती हैं

पर जो मजमून मैं पढ़ रही थी उसमे सही लग्न का पता न होने की सूरत मे उसे छोड दिया गया था। और जो कुछ अनुमान लगाया गया था, वह सिर्फ चन्द्रकुण्डली और सूर्यकुण्डली की बुनियाद पर लगाया गया था।

सुदर्शन प्रथा के मुताबिक हर इनसान की तीन कुण्डलियां सामने रखी जाती हैं—जन्मकुण्डली, चन्द्रकुण्डली और सूर्यकुण्डली। और उनकी अहमियत एक जैसी मानी जाती है। सौ मे से 33 33 नम्बर हर कुण्डली को दिए जाते हैं। इसलिए उस मजमून लिखने वाले ने बडे साफ शब्दो मे लिखा था—"क्योंकि जन्मकुण्डली का पता नही इसलिए सौ मे से 33 नम्बर मनफी करके बाकी 66 नम्बर बनते हैं, जो किसी कियाफे के लिए तगडी बुनियाद हैं।"

और उस मजमून मे आगे चलकर, जन्मकुण्डली वाले सारे मसले को एक ओर रखकर जो विचार किया गया था, वह 'शपथकुण्डली' की बुनियाद पर किया गया था, जिसके तीनो पहलू सामने मौजूद हैं। ऐतिहासिक हवाला है।

उस मजमून के लेखक श्री कापालिक सिद्धनाथ के लफ्ज हैं—'प्रधानमन्त्री श्री राजीव के जन्म समय की सही जानकारी न सही मगर उनके प्रधानमन्त्री पद की शपथ लेते समय की हमे प्रामाणिक जानकारी है। उस पर सौ फीसदी यकीन किया जा सकता है। वह 31 दिसम्बर का दिन था, समय सन्ध्या का, पाच बजकर सत्ताइस मिनट पर।'

किसी 'शपथकुण्डली' से अगर इतना कियाफा लगाया जा सकता है, तो प्रश्नकुण्डली से कितना कियाफा लग सकता है? यह सवाल मेरे मन मे आया और इसके बारे मे मैंने उर्मिल शर्मा के साथ जो तफसील मे बात की, वह इस

तरह है—

मैं शमिल दोस्त ! पहले बुनियादी बात बता कि प्रश्नकुण्डली की अहमियत कितनी होती है ?

उ कई बार जन्मकुण्डली के समान।

मैं कई बार उसके समान और कई बार उसके समान नहीं क्या मतलब ?

उ मतलब यह कि किसी के प्रश्न की उम्र, जिन्दगी के समान लम्बी नहीं होती। वह प्रश्न हल हो गया तो उसकी उम्र खत्म हो गई। उसकी उम्र स्थायी नहीं होती, अस्थायी होती है। मगर और कई बातें होती हैं, जिनकी उम्र लम्बी हो सकती है, इसलिए उसकी अहमियत भी लम्बे अरसे तक होती है।

मैं दूसरी बुनियादी बात यह बता कि फर्ज किया—कोई प्रश्न लेकर किसी के पास गया, आगे से वह मिला नहीं। वह फिर दूसरे दिन गया, तो प्रश्न का समय कौन-सा माना जाएगा ? पहले दिन वाला, जब कोई प्रश्न किसी के मन में आया था ? या दूसरे दिन वाला, जब मुलाकात हुई ?

उ दूसरे दिन वाला, जब मुलाकात हुई। जिस समय सम्बन्ध पैदा हुआ। प्रश्नकुण्डली के ग्रह अपनी कशिश रखते हैं, व किसी को तभी कोई सम्बन्ध बनाने देते हैं, जब उन्होंने कुछ बोलना होता है।

मैं एक और बुनियादी सवाल है कि क्या प्रश्नकुण्डली के जवाब में उत्तर-कुण्डली का समय— सूर्य निकलने के समय से लेकर सूर्य के अस्त होने के समय तक सीमित होता है ? यह बात मैंने कहीं पढ़ी थी

उ नहीं, जिस तरह बच्चे के जन्म का समय सूर्य निकलने के समय से लेकर सूर्य के अस्त होने के समय तक सीमित नहीं होता, उसी तरह प्रश्नकुण्डली का समय भी सीमित नहीं होता।

मैं एक और बुनियादी सवाल यह कि अक्सर कहा जाता है—प्रश्न तीन से ज्यादा नहीं पूछे जा सकते। यह सिद्धान्त क्या है ?

उ यहां पर भी मैं सीमा सिद्धान्त को नहीं मानती। यह बात दूसरी है कि किसी का कोई प्रश्न ही उसके लिए इतना जरूरी हो कि वह सिर्फ एक ही प्रश्न पूछे पर वह चाहे तो कई प्रश्न पूछ सकता है।

मैं एक और बुनियादी सवाल यह, कि हर प्रश्न का जवाब केवल 'हां' और 'ना' में ही मिलता है ? कि उसमें काल का ज्ञान भी मिल सकता है ? यानी—अगर जवाब 'हां' में होता है, तो इस 'हां' की तसदीक कब होगी ? यह कब हल होगा ? इसका जवाब मिल सकता है ?

उ जवाब मिल सकता है, सिर्फ मेहनत की जरूरत होती है। अगर उस

समय चन्द्र से दशा, अन्तदशा और प्रतिदशा निकाल ली जाए तो यह जवाब भी मिल सकता है कि यह प्रश्न कब हल होगा।

मैं एक और बुनियादी बात यह है कि क्या प्रश्न पूछने वाले को अपना प्रश्न बताना पड़ता है?

उ नहीं। मैं हमेशा खुद बताती हूं कि प्रश्न पूछने वाले का उस समय क्या प्रश्न है ?

मैं बुनियादी सवाल मैंने बहुत पूछ लिए हैं, अब एक राजदाना सवाल पूछती हूं कि दूसरे के मन में क्या प्रश्न है, इसका अनुमान किस तरह लगता है?

उ अच्छा दोस्त! यह राज भी बताए देती हूं सबसे पहले कमस्थान को देखना होता है, दसवें घर को कि उसका मालिक कहां पड़ा हुआ है, और उस घर में किस स्थान का मालिक आकर बैठ गया है

मैं मसलन ?

उ मसलन अगर कमस्थान का मालिक पांचवें घर में चला गया हो तो प्रश्न पूछने वाले का प्रश्न जरूर उस पांचवें घर से सम्बन्धित होगा। आगे यह आप जानते ही हैं कि पांचवां घर या तो ज्ञान इल्म के साथ ताल्लुक रखता है, या मुहब्बत या संतान के साथ इसलिए प्रश्न भी इनमें से किसी एक के साथ सम्बन्धित होगा

मैं तो इस तरह हर घर के जो वसफ होते हैं प्रश्न का ताल्लुक भी उन्हीं के साथ होगा। जिस तरह छठे घर का ताल्लुक बीमारी, कर्ज या दुश्मन के साथ होता है, इसलिए प्रश्न का ताल्लुक भी इनमें से किसी के साथ होगा, अगर कर्मेश उस छठे घर में चला गया हो।

उ कर्मेश का तो देखना ही होता है, साथ लग्न को भी देखना होता है कि वह शुभ है या अशुभ। और साथ चन्द्र को भी देखना होता है कि वह शक्तिहीन है या शक्तिशाली

मैं चन्द्रबल कैसे देखते हो ?

उ शुक्लपक्ष का चन्द्र बली होता है और कृष्णपक्ष का कमजोर। हम लोग उसे 'क्षीण-चन्द्र' कहते हैं कृष्णपक्ष की दसवीं से लेकर शुक्लपक्ष की पंचमी तक चन्द्र क्षीण होता है।

मैं हां—जाहिर है—कृष्णपक्ष का चन्द्र अमावस की ओर जा रहा होता है, उसकी रश्मियां बहुत कम होती हैं—भले ही बढ़ रही होती हैं—

उ क्षीण चन्द्र में प्रश्न का उत्तर भी कमजोर होता है

मैं लग्न की हालत तो देख ली कि उसका लग्न अपनी किसी राशि में है, या उच्च की राशि में है, या पंचम में है या नवम में है, तो जान लिया कि लग्न बली हो गया, पर और कौन-कौन से पहलू देखते हो ?

उ लग्न शुभ हो तो प्रश्न का शुभ फल तो होगा ही, पर कब होगा, इसका पता राशि से लगता है। लग्न शुभ हो, चन्द्र बली हो, कर्मेश अच्छे स्थान पर हो, अगर राशि स्थिर हो, तो फल देर से मिलेगा। राशि चर हो तो फल बहुत जल्दी मिलेगा।

मैं अगर राशि दो स्वभाव की हो?

उ तो एक बार 'न' होकर फिर 'हां' होगी। पर यह दो स्वभाव वाली राशि यात्रा के सम्बंध में बड़ी शुभ होती है—यानी इन्सान जहां जा रहा हो, वहां से सही सलामत लौटेगा, वह इस बात की 'हां' कहती है।

मैं पर अगर कोई दूसरी जगह आबाद होना चाहता हो, वापस मुड़ना न चाहता हो?

उ तो उस समय अगर स्थिर राशि आ जाए तो उसकी मुराद पूरी होगी। *वह जहां पर आबाद होने के लिए जा रहा है, वह जरूर आबाद हो* जाएगा। पर अगर उस समय दो स्वभाव वाली राशि आ जाए तो उसे वापिस मुड़ना पड़ेगा।

इसीलिए जिन्होंने 'चलता काम' शुरू करना होता है उन्हें चर राशि में शुरू करना चाहिए। पर जिन्होंने पक्का व्यापार शुरू करना होता है उन्हें स्थिर राशि में करना चाहिए। इसी को देखने के लिए तो मुहूर्त निकलवाए जाते हैं। सियासी लोगों को शपथ भी स्थिर राशि में लेनी चाहिए, अगर वे अपने पद पर कायम रहना चाहते हों तो।

मैं इसलिए इश्क भी स्थिर राशि में करना चाहिए

उ यह बात तो जरूर लिख दो! मुहब्बत के मामले में तो आजकल लोगों को चर राशि लगी हुई लगती है। मेरे पास जितनी भी लड़कियां आती हैं, एक बार तो लगता है कि जिसे मुहब्बत करती हैं, बस वही उनकी स्वास और प्राण बन गया है, पर कुछ महीनों के बाद किसी और का ही सवाल लेकर आ जाती हैं, फिर किसी और का, और फिर किसी और का

मैं इस भटकन के युग में क्या औरत क्या मर्द, लगता है, 'चर राशि' उनका नसीब बन गई है यह शायद इस युग की तलाश है स्थिर राशि के लिए

आचार्य राज की एक गुमशुदा किताब

आज से तीस वर्ष पहले 1957-58 में, जब आचार्य राज कलकत्ते रहते थे, उनको ख्याल आया कि वहाँ की वेश्याओं के हाथ देखकर, यह मुतालिया किया जाए कि तक्दीर की वह कौन-सी लकीरें होती हैं जो औरतों को घर नहीं देतीं, बाजार देती हैं

इस ख्याल की बुनियाद, समय का वह कानून था, जिसने यह बाजार बन्द करवाए थे, और श्री राज ने हिसाब लगाया कि लाइसेंस शुदा कोई बीस हजार वेश्याएं हैं, और बिना लाइसेंस के कोई साठ हजार। और वे इस कानून बन्दी के बाद अपनी रोटी रोजी कैसे कमाएंगी ?

कानून नया-नया लागू हुआ था, इसलिए हर छोटे-बड़े चकले में पुलिस की सख्ती हो रही थी। पर वह दोपहर ग्यारह बजे घर से चले जाते, और शाम के पांच बजे तक किसी-न-किसी तरह चकलों में पहुंच जाते, और वेश्याओं के हाथ देखते।

श्री राज के लफ्जों में—"इस पेशे के दो बुनियादी कारण होते हैं—एक तबीयत से इस पेशे में किसी औरत की रुचि, और दूसरा—उसकी मजबूरी।"

आगे मजबूरी वाले पहलू को वह दो तरह देखते रहे, एक—आर्थिक मजबूरी और दूसरी हालात की, जो मुहब्बत का एक जाल बनकर किसी औरत के पैरों के आगे बिछ जाती है, और फिर उसके घर की दहलीज नसीब नहीं होती

आज भी श्री राज एक हसरत से कहते हैं— 'मेरा यह मुतालिया एक बहुत बड़ी किताब का मसौदा था, जिसको कलम नसीब नहीं हुई "

इसका कारण—वह बताते हैं कि उन दिनों वह कलकत्ते से एक धार्मिक मासिक पत्र निकालते थे—'वैष्णव' जो मिथल की खोज से सम्बन्धित था। और जब वह लगभग छः हजार हाथ देख चुके और कोई डेढ़ हजार हाथों की छाप ले चुके, तो उनके मित्रों ने सलाह दी कि वह चकलों की इस खोज को कभी कागज पर न उतारें, नहीं तो उनकी रोटी रोजी बन्द हो जाएगी। हर वैष्णव उनकी ज्योतिष

विद्या को नकार देगा। वह लोगो की नजरों मे—चकलो मे घूमने वाले ... आवारा व्यक्ति हो जाएगे

और अब उस किताब का यह हश्र है, कि उसका अक्षर-अक्षर खो चुका है। वह हजारो हाथो की छाप भी समय की धूल मे खो गई है

उसी गुमशुदा किताब की बात करते हुए, मैंने एक दिन श्री राज को उनके उस मुतालिया के बारे मे पूछा, जो अभी भी कुछ उनकी याद मे था

वह कहने लगे—"वसे तो नौ ग्रह हाथो पर होते हैं, पर सात ग्रह खास तौर से माने जाते हैं—चारो अगुलियो की सीध मे जो पवत कहे जाते हैं, वह बहस्पति, शनि, सूरज, और बुध के चार पवत होते हैं। हथेली के अगूठे की ओर, ऊपर के हिस्से मे मगल और नीचे के स्थान पर शुक्र ग्रह होते हैं। और चीची अगुली की ओर, हृदय-रेखा के साथ लगता, दूसरा मगल और उससे नीचे चन्द्र का स्थान होता है।

"वैसे तो—सब कुछ देखना होता है कि हाथ की किस्म कैसी है? चमडी की सख्ती या नरमाई कैसी है, और नाखूनो से खून की किस्म का पता लगता है, पर वेश्याओ के मामले मे दो लकीरें और दो पवत खास तौर पर देखने होते हैं। एक हृदय रेखा, एक मस्तिष्क रेखा और पवतो मे से एक मगल का और दूसरा शुक्र का स्थान "

मैंने पूछा—"आपके मुतालिया मे उनकी हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा किस तरह की देखने मे आई थी?'

वह कहने लगे—'अक्सर यह देखने मे आया कि दोनो रेखाए बहुत चौडी और छोटी होती हैं, जो शनि पवत की सीध मे पहुचकर खत्म हो जाती हैं। और उन पर अक्सर जजीरें सी बनी होती हैं। साथ ही उनमे से कई शाखाए निकलकर दोनो रेखाओ को आपस मे मिला देती है। और साथ ही अक्सर यह देखने मे आया कि दोनों लकीरो पर कई गड्ढे होते हैं, कई यव, जिनको आइलैण्ड कहा जाता है, साथ ही चौकोण भी बने होते हैं।"

मैंने पूछा—'किस्मत रेखा क्या बोलती है?"

वह कहने लगे—"किस्मत रेखा असल मे कर्म रेखा होती है। और वेश्याओ के हाथो मे वह रेखा सीधी शनि पवत की ओर जाती है या उधर जाती रास्ते मे ही खत्म हो जाती है। और उसी रेखा की तरह हृदय रेखा भी शनि पवत तक बड़ी मुश्किल से पहुचती है, बहस्पति के पवत की ओर कभी नहीं जाती "

और मन मस्तिष्क की तकदीर बदलने वाले ग्रहो की बात करते हुए श्री राज कहने लगे—"हृदय-रेखा पर शनि मगल का प्रभाव गहरा हो जाता है, और मस्तिष्क रेखा पर मगल शुक्र का। उनके हाथों पर शनि, मगल और शुक्र के स्थान बहुत उभरे हुए होते हैं, बाकी सारे पर्वत बैठे हुए से।"

—

मैंने श्री राज से पूछा—"आपने उन हालात की तसरीह की थी और मजबूरी में भी दो पहलू देखे थे, उनकी पहचान कैसे की ?"

वह कहने लगे—"औरत अपनी शौकिया तबीयत के कारण इस पेशे में जाती है, तो उसका मंगल, शुक्र बहुत ही उभरा हुआ होता है। शुक्र-ग्रह वासना रुचि देता है, और चन्द्र जज़बाती रुचि, और मंगल कई तरह के पहलू पेश करता है—जिसमें बदले की भावना भी होती है।"

मैंने पूछा—"पर अगर शुक्र, चन्द्र के स्थान पर शनि पर्वत बहुत उभरा हुआ हो तो ?"

वह कहने लगे—"फिर मंगल और शनि मिल कर अत्यधिक निराशा भी देते हैं, अत्यधिक बगावत भी। शनि मजबूरी का संकेत देता है, और छोटी अंगुली की ओर का मंगल उसके साथ मिलकर बदले की भावना पैदा करता है। बहुत बारीकी में जाना हो तो अंगूठे के नीचे के सिरे पर राहु को भी देखना होता है। "

मैंने पूछा—"इस मुतालिया के समय कोई अजीबो-गरीब हाथ भी देखने में आए थे ?"

वह कहने लगे—" मुझे एक बच्ची कई बार याद आ जाती है। वह लगभग ग्यारह साल की बच्ची थी, जिसको मैं अक्सर एक छोटी सी चाय की दुकान पर सिगरेट पीते देखता था। पता चला कि वह पूर्वी बंगाल की ओर से आई थी, जिसके घर में एक मोहताज मां थी, और दो छोटे छोटे भाई। कोई आदमी उसको एक रुपया देकर ले जाता था, कोई चार आने देकर, और कोई दस पैसे देकर। वह किसी को इनकार नहीं करती थी।

" एक दिन मैंने उसे चाय पिलाई, साथ में एक रुपया भी दिया, और कहा—'बच्ची ! अगर तू यह पेशा छोड़ दे तो मैं तुझे रोज़ एक रुपया दिया करूंगा '

" वह हँसने लग पड़ी, कहने लगी—'अगर आपने एक रुपया दिया है, तो अब घर ले चलिए।'

" मैंने कहा — मैंने तुझे बेटी कहा है '

वह फिर हँसने लग पड़ी— बेटी कहने से क्या होता है ? मुझे यह पेशा अच्छा लगता है। मैं यह छोड़ नहीं सकती।'

" उस समय मैंने उसका हाथ देखा, उसकी छाप ली। उसका शुक्र पर्वत बहुत ही उभरा हुआ था। और उसकी हृदय रेखा और मस्तिष्क-रेखा इतनी छोटी थी कि उसका शुक्र जैसे उसके मन मस्तिष्क की ताकत से बाहर हो गया था। "

और श्री राज कुछ देर खामोश रहने के बाद कहने लगे— 'एक और वाक्या सामने आया था। एक होटल में काम करने वाले उस आदमी का हाथ मैंने देखा था, जो होटल की जरूरत के लिए हर रोज लगभग सौ जानवर काटता था। यह

सवाल उसी का था कि 'घर के छह् बच्चो की पालना के लिए उसको कोई सौ जानवर हर रोज काटने पडते हैं, यह क्या तकदीर है ?'

" उसके हाथ पर सब कुछ उसकी तकदीर म लिखा दिखाई देता था—उसके दोनो हाथ टेढ़े-से थे, दोनो पैर भी टेढे थे। हाथो पर काले-काले निशान, शुक्र और चद्र पवत दोनो दबे हुए शनि पवत बडा ही उभरा हुआ, हृदय रखा और मस्तिष्क रेखा पर कितने ही यव, और कितने ही चौकोण। दोनो रेखाए बहुत चौड़ी और छोटी। साथ ही उसका अगूठा जैसे चौडा चपटा एक ठूठ-सा। बडा ही सख्त, आगे से भी बहुत चौडा, जिसका नाखून बस नाखून का निशान सा ही था। मगल दोनो ही उभरे हुए थे—पाजेटिव भी और नेगेटिव भी "

यह एक गुमशुदा किताब थी, जिसको याद करके श्री राज कहने लगे—"अगर कहीं वह मुतालिया किसी किताब की सूरत मे आ जाता, साथ ही सभी हाथो को छाप भी, तो मैं एक एक पवत, एक एक रेखा, एक एक शाखा, और हर निशान की वह तशरीह दे सकता था, जो इस मुतालिया के पहलू से एक दस्तावेज साबित हो सकती थी "

वर्जित और अवर्जित फल

सहज और असहज के बीच कितना भर फासिला होता है और विचित्रता के कितने रूप, काटवे योगी की किताब म कुछ यही वणन था, जो मैं बडी दिलचस्पी से पढ रही थी कि सात्विक, राजसी और तामसी रुचियाँ, इनसान की परछाइ की तरह, उस राह पर भी उसके साथ साथ चलती हैं, जिस राह पर वह दुनिया के सारे रग त्यागकर सिर्फ गेरुआ रग पहन लेता है। और इनसान की मूल रुचियों के इस अध्ययन मे काटवे योगी ने साधुओ-सयासियो की हर जमराशि म, हर बुनियादी रुचि की प्रधानता के अनुसार, एक गहन व्याख्या की हुई थी। जैसे—मेष राशि के प्रभाव म पैदा होने वाला सयासी अगर सतोगुणी होगा, तो बडा शीलवान होगा। वैराग्यमय। कममयोगी भी। पर अगवाई करने की बहुत कोशिश के बावजूद भी अनुयायी होगा। प्रपच का अविश्वासी होने के बावजूद प्रपची जिदगी बिताएगा। बोलो म मिठास होगी। क्रोध नहीं आएगा, अगर आएगा तो शात होना मुश्किल हो जाएगा। और इसी राशि के प्रभाव मे पदा होने वाला सयासी अगर राजसी स्वभाव का होगा तो दूसरो से मान सम्मान की उम्मीद रखना उसका सहज स्वभाव होगा। वह विद्वान होगा पर दूसरो पर अपनी छाप भी चाहेगा। उपकार करेगा पर उपकार का सिला भी चाहेगा। वह बडे लोगो से मित्रता भी चाहेगा। और इसी राशि के प्रभाव म पैदा होने वाला साधु सयासी अगर तामसी रुचि का होगा, तो उसका क्रोधी स्वभाव उसके बस मे नही होगा। दम्भ उसका सहज होगा। स्त्री की प्यास उसके अदर रची हुई होगी। दूसरा की राह मे रोडे अटकाना भी उसका सहज स्वभाव होगा

और इस तरह मेष राशि से लेकर मीन राशि तक, बारह राशियो का विवरण था, जिसम इनसान के त्रिगुण स्वभाव का बडा बारीक विवरण दज था पर इस वैज्ञानिक दशन को पढते ही मै चौंक गई जिस समय लाल किताब म दज एक विवरण पढा कि कुछ लोगो के लिए किसी धमस्थान की स्थापना करनी—उनके लिए बडी अशुभ साबित होती है। और साथ ही पढा कि कई लोगो के लिए दान देना भी बडा अशुभ कम साबित होता है

इस अशुभता के पीछे कौन-सा तर्क छिपा हुआ है, उसी को पहचानने के लिए मैंने पंडित कृष्ण अशान्त को फोन किया। गहरा अध्ययन उनका एक ऐसा वस्फ है, जिसे मैं बड़ी कद्र की नजर से देखती हूं।

पूछा—"पंडित जी! किसी के हाथों धर्मस्थान की कोई स्थापना भी अशुभ हो सकती है? दान भी अशुभ हो सकता है? यह माजरा क्या है?"

वह हंस पड़े। कहने लगे—"समन्दर मथन के समय अमृत जैसी चीज के साथ जहर की प्राप्ति में जो तर्क छिपा हुआ है, वही तर्क इस अशुभता का तर्क है। हर इनसान के अन्दर त्रिगुण होते हैं—सात्विक, राजसी और तामसी। फर्क सिर्फ मिकदार का होता है। यही मिकदार इनसान के अन्तःकरण की रूपरेखा है। पिछले जन्म के संस्कारों की बुनियाद ऊपर किसी इनसान में जो खास तत्त्व प्रधान हो जाता है—वह सब उसकी माया है।"

पूछा—"इस माया में किसी धर्मस्थान की, किसी देवमन्दिर की, किसी इबादतगाह की स्थापना भी वर्जित हो जाती है?"

कृ हां, हो जाती है। जो रुचि बीज रूप में हासिल नहीं हुई, उस बीज के बगैर, खाली जमीन को पानी देते रहना कोई फल नहीं दे सकता

? कोई कर्म निष्फल जा सकता है, यह तो तर्क की पकड़ में आता है पर वह मारू कैसे हो सकता है?

कृ जिस तरह बड़े सूक्ष्म चिन्तन में पला हुआ बच्चा अगर एक दिन अचानक किसी बूचड़खाने में चला जाए, तो वह दहशत उसे पागल कर सकती है। या बूचड़खान में पला हुआ बच्चा अगर एक दिन किसी देवस्थान पर चला जाए, तो वह अचम्भा उससे बर्दाश्त नहीं होगा—उसकी मानसिक वनतर का लावा उसे अपनी लपेट में ले लेगा

? पर यह फल जिसके लिए वर्जित फल हो जाता है, आपके ज्योतिष के अनुसार उसकी क्या पहचान होती है?

कृ कुण्डली के जो बारह स्थान हैं, उनकी व्याख्या कई तरह से की जाती है, मैं अपने हिसाब से कह सकता हूं कि अगर किसी की कुण्डली में दूसरा घर खाली है, और उसके आठवें और बारहवें घर में जो ग्रह बैठे हैं, वह आपस में दुश्मनी रखते हैं तो ऐसी हालत में किसी भी देवी-देवता का पूजन अशुभ हो जाएगा।

? पर यह टकराव किस तरह होगा?

कृ बारहवां स्थान कई चीजों का कारक होने के अलावा समाधि का कारक भी होता है। इसीलिए इसको 'मोक्ष स्थान' भी कहते हैं। दूसरा स्थान अपने आप में धर्म स्थान होता है। इनसान का मन्दिर, मस्जिद और गिरजा। और आठवां स्थान मौत का होता है। अब आप देख लें कि

अगर दूसरा घर खाली है, यानि धमस्थान खाली पड़ा है, जिसकी रक्षा करने वाला कोई नही, तो आठवें स्थान का ग्रह, यानि मृत्यु स्थान का ग्रह जब उसे पूर्ण दृष्टि के साथ यानि सातवी दृष्टि के साथ देखेगा, तो आराधना की मौत हो जाएगी यह मौत का धमस्थान को देखना है।

? बारहवें स्थान की समाधि आठवें स्थान की मौत के साथ टकरा गई, और आठवें घर की मौत न जब पूर्ण दृष्टि से दूसरे घर को देखा, यानि धम स्थान को देखा, तो वहा भी मौत हो गई, यह तो पकड़ मे आ गया, पर अगर आठवें घर कोई शुभ ग्रह पड़ा हो, तो उसकी शुभता मौत की अशुभता पर हावी नही होगी ?

कृ नही। वह भी अशुभता की लपेट मे आ जाएगी। फर्क सिर्फ यह होगा कि वह ग्रह किस चीज़ का कारक है, उसे पहुचने वाली तकलीफ का इशारा उसी से मिलेगा

? मसलन ?

कृ अगर वहा बुध ग्रह पड़ा है, तो बुध व्यापार का कारक भी है, बहन का भी। सो तकलीफ व्यापार को मिलेगी, वह मदा हो जाएगा। और तकलीफ बहन को मिलेगी, किसी-न किसी तरह की बीमारी की सूरत में।

? यह तशरीह ज़रा बारी बारी करें। अगर वहा, आठवें घर सूरज पड़ा हो तो ?

कृ सूरज आर्थिक पहलू से राज-दरबार के पहलू से और बाप के पहलू से इन्ही चीज़ो का कारक है, सो इन सब चीज़ो को नुकसान का अन्देशा हो जाएगा

? अगर चन्द्र हो ?

कृ चन्द्र मा का कारक भी है, अपनी मानसिक हालत का भी शुक्र पत्नी का कारक भी है, सुख-आराम का भी। मगल भाई का कारक भी है, लड़ाई-झगड़े का भी। शनि चच्चा ताऊ का, राहु ससुराल का, और केतु अपने बेटे का

? अपने पूजा-पाठ के हाथो, अपने मन की हालत को, अपने व्यापार को, और मा-बाप और बेटे से लेकर अपने सम्बन्धियो को तकलीफ पहुचे—यह सचमुच भयानक है

कृ अपने हाथो अपने मुखालिफ तत्त्वो को बल देना होता है

? यह तो मान लिया कि सहज बल उन्ही तत्त्वो को मिलना चाहिए, जो किसी के अन्दर बीज रूप मे पड़े होते हैं। और जो-जो देवता, जिस जिस तत्त्व का प्रतीक है उसकी पहचान ज़रूरी है

कृ जो लोग एक ही समय हर देवी-देवता को पूज लेते हैं, वह समझो कि हर तरह के तत्त्व को शक्तिवान् कर लेते हैं, और हर तरह के तत्त्व एक-दूसरे के साथ टकराकर व्यर्थ हो जाएगे कई लोग सारी उम्र आपने पूजा पाठ करते देखे होंगे, और साथ यह भी कि सारी उम्र दुखी रहते हैं। उसका यही कारण होता है कि उन्होंने मुखालिफ तत्त्वों को भी जागृत कर लिया होता है

? पर अपने तत्त्वों को पहचानकर उन तत्त्वों की शक्ति को बढ़ाने का अगर असूल सामने रख लिया जाए, तो अपने तत्त्वों की पहचान कैसे पानी होती है?

कृ जन्मकुण्डली का पांचवां घर पिछले जन्म के कर्मों की खुली किताब जैसा होता है। यह पहचान उसी से पानी होती है।

? सो पांचवां घर हमारी सब की 'लाल बही' होता है पर हजूर पांचवां घर इश्क मुहब्बत का भी होता है

कृ हां, इश्कमजाजी का भी और इश्कहकीकी का भी। सो यह शारीरिक सम्बन्धों तक सीमित नहीं होता, इससे मिले संस्कार आत्मा मे उतरे हुए होते हैं। जन्म-जन्मान्तरों से।

? कहते हैं—कि पांचवें घर के मालिक का, अगर सातवें घर के मालिक के साथ, और साथ ही सातवें से पांचवें, यानि बारहवें घर के मालिक के साथ सम्बन्ध हो जाए—तो मुहब्बत की दास्तान शुरू होती है

कृ हां, होती है, पर उस दास्तान मे किसी हीर के और रांझे के अहसास की शिद्दत उस वक्त आती है—जब उन घरों के ग्रह या तो स्व राशि के हों या उच्च के?

? उन ग्रहों से किसी कैदों की पहचान होती है?

कृ हां, मुहब्बत की दास्तान को दुखान्त मे बदल देने वाला, हीर का चाचा कैदो, इन ग्रहों मे राहु होता है

? सो यह राहु चाचा होता है, जो हीर को जहर का प्याला पेश करता है—खैर यह तो पांचवें घर के एक असफ की दास्तान हुई, पर आप बता रहे थे कि अपने मूल तत्त्व की पहचान पांचवें घर के ग्रह से पानी होती है

कृ और उसी तत्त्व के आधार पर अपने इष्ट का चुनाव करना होता है

? सो एक तरह यह स्वयंवर स्थान होता है, कि आत्मा ने कौन-से इष्ट के गले मे माला डालनी है

कृ हां इस स्थान मे स्वयंवर-स्थान का ही गुण होता है

? अब विवरण के साथ बताएं कि किस ग्रह की आत्मा ने किस इष्ट को ब्याहना होता है?

कृ हमारी परम्परा के अनुसार—सूरज ग्रह का देवता विष्णु होता है। चन्द्रमा का शिवजी। शुक्र ग्रह की देवी लक्ष्मी। मंगल का हनुमान, शनि का भैरो, बृहस्पति का ब्रह्मा या शिवजी और बुध ग्रह की देवी दुर्गा।

? राहु केतु के इष्ट ?

कृ केतु का गणेश देवता और राहु की सरस्वती देवी

? सो इसके अनुसार यह चुनाव भी करना होता है कि पूजन देवता का हो या देवी का ?

कृ पुरुष ग्रह वाले को देवता चुनना चाहिए, और स्त्री ग्रह वाले को देवी। साथ ही यह कि पांचवें से पांचवें स्थान पर, यानि नौवें स्थान पर कौन-सा ग्रह है, वह भी देखना होता है। वह पूजा विधि की तशरीह करता है, उसे क्रियात्मक रूप देता है। वह दैवी सहायता को जाहिर करता है

? और पंडित जी ! अगर पांचवें घर मे ग्रह ही कोई न हो ?

कृ राशि तो जरूर होगी, उसी से राशि के मालिक को देख लिया जाएगा, चाहे वह कही भी पडा हो

? पर एक जगह समस्या खडी हो जाएगी—जब पाचवें स्थान पर पुरुष ग्रह हो और नौवें स्थान पर स्त्री ग्रह

कृ हा, उस हालत मे यह फैसला करना मुश्किल हो जाएगा कि इष्ट किसी देवता को चुना जाए या देवी को

? अगर आप मुझे इजाजत दें तो ऐसी हालत मे किसी इष्ट के चुनाव के बारे मे कहना चाहूगी कि उस हालत मे शिवशक्ति और अर्धनारीश्वर का इष्ट चुन लिया जाए। उसमे पुरुष-स्त्री के गुण इकटठे मिल जाएगे, और पाचवें घर का पुरुष ग्रह और नौवें घर का स्त्री ग्रह या पाचवें घर का स्त्री ग्रह और नौवें का पुरुष ग्रह, मन मे कोई दुविधा नहीं आने देंगे।

कृ हा, यह माना जा सकता है

पंडित कृष्ण अशान्त चाय का घूट लेते हुए कुछ देर जैसे अन्तर्धान हो गए। देखा—अचानक उनके चेहरे पर एक लौ चमकी, और वह कहने लगे—

कृ आज जाति पाति के नाम पर कई लडाइया मोल ली जा रही हैं। मैं ज्योतिष के आधार पर ही कह सकता हू कि किसी की जाति जन्म से नहीं होती, उसके कर्म से होती है। जन्म से किसी ब्राह्मण के घर शूद्र भी पैदा हो सकता है, और किसी शूद्र के घर क्षत्री या ब्राह्मण भी। यह बटवारा सात्विक, राजसी और तामसिक गुणो के आधार पर होता है। इसीलिए ग्रहो और राशियो को पुल्लिंग, स्त्री लिंग और जातियो मे बाटा हुआ है। जसे—वृष वृश्चिक और मीन राशिया ब्राह्मण गिनी गई हैं।

मेष, धनु और सिंह राशि क्षत्रिय। मिथुन, तुला और कुम्भ वैश्य। और कर्क, कन्या और मकर शूद्र।

? इनसान की अन्तरजाति क्या है? यानि कौन-से तत्त्व उसके बीच प्रमुख हैं जो उसकी जाति का निर्णय करते हैं? क्या वह पहचान भी पांचवें स्थान से पानी होगी?

क्र हां, देखना होगा कि पांचवें घर में कौन-सी राशि है

? और उससे सात्विक, राजसी और तामसी जाति को पहचान कर, पूजा-अर्चना भी भिन्न भिन्न तरह से करनी होगी?

क्र जी हां, सात्विक गुण वालों को किसी बाहरी धर्मस्थान पर जाने की जरूरत नहीं होती। उनके लिए वैदिक मन्त्र, योग-साधना और समाधि की अवस्था तक पहुंच जाना उनका सहज कर्म होता है

? और राजसी गुण वालों के लिए?

क्र उनकी रुचियों में विश्वास सहज होता है। भजन, गीत आरती, कथा-कीर्तन—यानि भक्ति उनका क्षेत्र होती है। बाकी विधियां व्रत, नियम, तीर्थयात्रा और सारा प्रपंच तामसिक रुचियां रखने वालों के लिए होता है

? इस हिसाब से तो हर मन्त्र की शक्ति को पहचानना भी जरूरी है। बीज-मन्त्र तो बनते ही पांच तत्त्व की शक्ति से हैं।

क्र बिना समझे किसी मन्त्र का जप बिलकुल उलटा पड़ सकता है। इसके विज्ञान को समझने के लिए एक मिसाल देता हूं कि छठा, आठवां और बारहवां स्थान, जो हमारे इल्म में त्रिक स्थान कहे जाते हैं, उन्हें देखना भी बहुत जरूरी है। बारह राशियों में से कौनसी राशि किस किस अक्षर के तत्त्व को धारण करती है—यह विवरण हर जगह लिखा मिल जाता है। देखना यह होगा कि छठे, आठवें और बारहवें घर में जो जो राशि है, उससे सम्बन्धित अक्षर जो भी हैं इनसान कभी भी उस मन्त्र की साधना न करे, जिसका पहला अक्षर, छठी, आठवी और बारहवी राशि के अक्षरों के अनुसार हो।

? कोई मिसाल देकर बताएं।

क्र मान लो कि किसी का मेष लग्न है। उसके हिसाब से उसके छठे घर में कन्या राशि होगी, आठवें में वृश्चिक और बारहवें में मीन

? और अब देखना होगा कि कन्या राशि के अक्षर कौन से हैं, वृश्चिक के अक्षर कौन से और मीन के कौन से और उनमें से कोई भी अक्षर वह नहीं होना चाहिए, जो मन्त्र का पहला अक्षर हो

क्र बिल्कुल यही असूल सामने रखना होगा। नहीं तो अगर मन्त्र का पहला

अक्षर वह होगा, जो छठे घर की राशि के अक्षरों में से है, तो इनसान पर खाहमखाह कोई मुकदमा लागू हो जाएगा या और कोई झगडा फसाद पैदा हो जाएगा, क्योंकि छठा स्थान इन बातों का होता है।

? बेचारी मासूमियत को यह सजा ?

कृ मासूमियत तो है, पर यह मासूमियन अज्ञान की है। हा, जलते कोयले ने यह नही देखना कि किसका मासूम पोर जल गया। सवाल तो जलते कोयले को पकडने का है

कृ इसी तरह आठवें घर की राशि जिन अक्षरो की नुमायदा होती है, उनमे से अगर कोई अक्षर किसी मन्त्र का पहला अक्षर होगा, तो इनसान बीमारियो के बस मे पड जाएगा। और बारहवें घर की राशि के अक्षरों म से कोई अक्षर किसी मन्त्र का पहला अक्षर होगा, तो उसके जप से इनसान की दौलत खाहमख्वाह खर्चे की राह पड जाएगी

? मगर वैदिक मन्त्र आम तौर पर ॐ लफ्ज से शुरू होते हैं। अगर ॐ अक्षर इनसान के छठे, आठवें या बारहवें घर की राशि का अक्षर हो तो ?

कृ एक मिसाल देता हू। 'ॐ नम शिवाय।' वैदिक मन्त्र है। अगर 'ओ' लफ्ज किसी के चौथे, छठे, आठवें, और बारहवें स्थान की राशि के अक्षरो मे पैदा हो ता उसे वैदिक मन्त्र की जगह बीजमन्त्र का जप करना चाहिए। शिव के बीजमन्त्र का जप। वह उसी पाय का सिर्फ छोटा-सा लफ्ज है—होअम। इसके साथ 'ओ' अक्षर भी छोडा जा सकेगा, और उसका असर भी कायम रहेगा

? पर सरकार ! अभी आपने सिर्फ छठे, आठवें और बारहवें स्थान की बात की थी, अब साथ चौथा स्थान भी जोड़ दिया

कृ वह स्थान भी देखना जरूरी है। वही तो जमीन है इनसान के पैरों के लिए। अगर पैरो के नीचे की जमीन ही हिल गई तो बाकी क्या रहेगा

? है तो सब कुछ वैज्ञानिक, पर यह मसला बहुत बडा है। और उसके बारे मे आप क्या कहेंगे कि कइयो के लिए दान भी अशुभ होता है ?

कृ इसके लिए दान के सिद्धान्त को सामने रखना होगा। यह तो सबने सुना है कि जिसके जन्म समय के जो ग्रह शुभ होते हैं उनकी शुभता को बढाना होता है, और जो अशुभ होते हैं उनकी अशुभता को घटाना होता है।

? हा, जिन धातुओ या पत्थरो मे जैसे गुण होते हैं उनकी पहचान करना और उनको धारण करना—उन तत्त्वो की शुभता को बढाना माना जाता है। इसी तरह जो ग्रह अशुभ होते हैं उन तत्त्वो को अपने से दूर करना

उनकी अशुभता को घटाना होता है

क्रु यही दान का सिद्धान्त है। पर दान उस जगह पर ग़लत हो जाता है, जब अनजाने मे किसी उस चीज़ का दान दिया जाता है, जो शुभ ग्रह की कारक चीज़ हाती है

? हां, उस हिसाब से शुभता को घटाना हो जाएगा।

क्रु मान लो कि किसी की जन्म-कुण्डली मे मगल बडा शुभ है। तीसरे स्थान पर पडा हुआ मगल बडा शुभ होता है। वह इनसान अगर मिठाई बाटे, तो उसके लिए यह दान बडा अशुभ होगा। मिठाई मगल की कारक है। मानि उसने मगल की शक्ति को बाट-बाटकर अपने आप ही कम कर लिया।

? सातवें स्थान पर वृष या तुला का शुक्र भी बडा शुभ माना जाता है

क्रु हां। अगर वह इनसान फूलो का दान दे या इत्र फुलेल का, या सिले हुए कपडे का, तो शुक्र की शुभता बट जाएगी इसी तरह अगर चन्द्र दूसरे या चौथे स्थान पर हो, जा शुभ होता है तो इनसान गलती से चादी दान कर दे या मोती, तो चन्द्र की शुभता उसके अपने लिए कम हो जाएगी।

? इस हिसाब से तो शराब क्योंकि शनि की कारक होती है और अगर शनि शुभ पडा हो, तो काकटेल पार्टिया इनसान को तबाह कर देंगी ?

क्रु जरूर कर देंगी

? खुदाया ! इल्म के दान का क्या बनेगा ?

क्रु अगर बुध किसी की कुण्डली मे शुभ हो तो उसे कला का दान नही देना चाहिए। अगर बृहस्पति शुभ हो तो किताब का दान नहीं दना चाहिए

? मारे गए

क्रु यही सिद्धान्त दान लेने वाली बात पर भी लागू होगा—कि जब अपनी पत्री मे कोई अशुभ ग्रह पडे हो, तो उन ग्रहो की कारक चीजो के तोहफे कुबूल करने उनकी अशुभता को बढा देंगे।

? और इस हिसाब किताब के अनुसार—शुभ ग्रहो की कारक चीज़ो के तोहफे कुबूल करने उनकी शुभता को बढा देंगे

क्रु हा, यह सिद्धान्त सीधा है। पर गौर करने वाली एक और हालत होती है अशुभ जगह पर पडे हुए ग्रहो की हालत मे दान देने के पहलू से। मसलन—चौथे घर चन्द्रमा, और दसवें घर बृहस्पति यदि हो, तो बृहस्पति चाहे बहुत शुभ ग्रह है, पर शनि स्थान पर उसकी हालत सूखे पीपल जैसी होती है। चन्द्रमा क्योंकि पानी का सोमा है, और ऐसी हालत मे कुआं लगवाना, या छबील लगवाना—सूखे पीपल पर पानी का व्यर्थ

गिराना है, जिसके साथ चन्द्र का सोमा सूख जाएगा।

? कोई और मिसाल ?

कृ मान लो कि शनि आठवें स्थान पर पड़ा हुआ है। बदहवास। तो ऐसी हालत मे अगर इनसान कोई सराय बनाएगा, मुसाफिरो, राहगीरों के लिए, तो उसका अपना बेटा बेघर हो जाएगा

इसी तरह चन्द्रमा बारहवें स्थान पर अशुभ होता है। ऐसी हालत म किसी साधु फकीर को रोटी देना—साधु फकीर की झोली म कोई बुरी चीज डालने जैसा हो जाता है। इसके साथ मन म अजीब अशान्ति पैदा हो जाएगी

? आपकी नजर म इसकी तशरीह पता नही क्या है, पर मेरी नजर मे इसके अन्दर किसी तरह की अपात्रता का दखल मालूम होता है। शायद— बृहस्पति की सूखे पीपल जैसी हालत दूसरे की अपात्रता की प्रतीक है, और आठवें घर के शनि की और बारहवें घर के चन्द्रमा की—अपनी अशुभ हालत के हाथो बनी अपनी अयोग्यता की प्रतीक अपनी अपात्रता की

कृ यह भी तत्वविज्ञान है। जो तत्व पात्रता के होते हैं, वे जब अपात्रता के तत्वो के साथ टकरा जाते हैं तो उस टकराव मे से कई बुरे फल निकलते हैं। इसी तरह योग्यता के तत्व जब अयोग्यता के तत्वो के साथ टकराते हैं एक और मिसाल सामने आती है कि सातवा स्थान शुक्र का होता है। वहा अगर बृहस्पति आकर बैठे तो उसकी हालत कबीलदारी मे उलझे हुए सन्यासी जैसी होती है। उस हालत मे किसी धर्मस्थान के पुजारी को कपडो का दान देना इनसान के अपने घर मे ग़रीबी ले आएगा

? हा, कपडे, शुक्र का कारक बन जाएगे। और शुक्र पहले ही बृहस्पति का शत्रु है आपका यह दान सिद्धान्त सचमुच ही वैज्ञानिक है। इससे मुझे एक बडा दिलचस्प वाकया याद आया है—कि पिछले दिनो मैं जब शकराचार्य जी को मिलने गई, तो कुछ देर, उनके दर्शको के पास अकेली बैठी हुई थी, जिस वक्त एक दर्शक ने बात सुनाई कि जो कई साधु सन्यासी किसी को इजाजत नही देते—अपने पैरो को छूने की, तो इसका राज एक बार उसने शकराचार्य जी से पूछा था। उस समय शकराचार्य जी हस पडे थे। उन्होंने कहा था कि सवाल जमा-पूजी का है। जो साधु सन्यासी अपने पैरो को हाथ लगाने की किसी को इजाजत नही देते— उनके पास शक्ति की बहुत थोडी-सी पूजी होती है। और पैरो के पोरों के

द्वारा अपनी शक्ति अगर वह दूसरों को बाट दें तो अपनी जमा-पूजी नहीं रहेगी

क्र यह भी दान के सिद्धान्त में आता है। शुभता की कारक शक्ति को देने से शुभता कम हो जाएगी

? मेरा ख्याल है—इसीलिए चमत्कारो का प्रदर्शन और करामातो की नुमाइश शक्तिशाली लोगो को वर्जित होती है

क्र प्रदर्शन से शक्ति को अपने हाथो खर्च करना होता है, उसके बाद शक्ति फिर से अर्जित करनी होती है

गिराना है, जिसके साथ चन्द्र का सोमा सूख जाएगा।

? कोई और मिसाल ?

कृ मान लो कि शनि आठवें स्थान पर पड़ा हुआ है। बदहवास। तो ऐसी हालत मे अगर इनसान कोई सराय बनाएगा, मुसाफिरो, राहगीरों के लिए, तो उसका अपना बेटा बेघर हो जाएगा

इसी तरह चन्द्रमा बारहवें स्थान पर अशुभ होता है। ऐसी हालत म किसी साधु फकीर को रोटी देना—साधु फकीर की झोली मे कोई बुरी चीज डालने जैसा हो जाता है। इसके साथ मन म अजीब अशान्ति पैदा हो जाएगी

? आपकी नजर म इसकी तशरीह पता नही क्या है, पर मेरी नजर मे इसके अन्दर किसी तरह की अपात्रता का दखल मालूम होता है। शायद—बहस्पति की सूखे पीपल जैसी हालत दूसरे की अपात्रता की प्रतीक है, और आठवें घर के शनि की और बारहवें घर के चन्द्रमा की—अपनी अशुभ हालत के हाथो बनी अपनी अयोग्यता की प्रतीक अपनी अपात्रता की

कृ यह भी तत्त्वविज्ञान है। जो तत्त्व पात्रता के होते हैं, वे जब अपात्रता के तत्त्वो के साथ टकरा जात हैं तो उस टकराव मे से कई बुरे फल निकलते हैं। इसी तरह योग्यता के तत्त्व जब अयोग्यता के तत्त्वो के साथ टकराते हैं एक और मिसाल सामने आती है कि सातवा स्थान शुक्र का होता है। वहा अगर बहस्पति आकर बैठे तो उसकी हालत कबीलदारी मे उलझे हुए सन्यासी जैसी होती है। उस हालत मे किसी धर्मस्थान के पुजारी को कपडो का दान देना इनसान के अपने घर मे ग़रीबी ले आएगा

? हा कपडे, शुक्र का कारक बन जाएगे। और शुक्र पहले ही बृहस्पति का शत्रु है आपका यह दान सिद्धान्त सचमुच ही वैज्ञानिक है। इससे मुझे एक बडा दिलचस्प वाकया याद आया है—कि पिछले दिनो मैं जब शकराचाय जी को मिलने गई, तो कुछ देर, उनके दशको के पास अकेली बैठी हुई थी जिस वक्त एक दशक ने बात सुनाई कि जो कई साधु-सन्यासी किसी को इजाजत नही देते—अपने पैरो को छूने की, तो इसका राज एक बार उसने शकराचाय जी से पूछा था। उस समय शकराचार्य जी हस पडे थे। उन्होंने कहा था कि सवाल जमा-पूजी का है। जो साधु सन्यासी अपने पैरो को हाथ लगाने की किसी को इजाजत नही देते—उनके पास शक्ति की बहुत थोड़ी-सी पूजी होती है। और पैरो के पोरों के

द्वारा अपनी शक्ति अगर वह दूसरों को बांट दें तो अपनी जमा-पूंजी नहीं रहेगी

कृ यह भी दान के सिद्धात मे आता है। शुभता की कारक शक्ति को देने से शुभता कम हो जाएगी

? मेरा ख्याल है—इसीलिए चमत्कारो का प्रदशन और करामातो की नुमाइश शक्तिशाली लोगो को वर्जित होती है

कृ प्रदशन से शक्ति को अपने हाथों खच करना होता है, उसके बाद शक्ति फिर से अर्जित करनी होती है

गिराना है, जिसके साथ चन्द्र का सोमा सूख जाएगा।

? कोई और मिसाल ?

कृ मान लो कि शनि आठवें स्थान पर पडा हुआ है। बदहवास। तो ऐसी हालत मे अगर इनसान कोई सराय बनाएगा, मुसाफिरो, राहगीरो के लिए तो उसका अपना बेटा बेघर हो जाएगा

इसी तरह चन्द्रमा बारहवें स्थान पर अशुभ होता है। ऐसी हालत मे किसी साधु-फकीर को रोटी देना—साधु-फकीर,की झोली मे कोई बुरी चीज डालने जैसा हो जाता है। इसके साथ मन मे अजीब अशान्ति पैदा हो जाएगी

? आपकी नजर मे इसकी तशरीह पता नही क्या है, पर मेरी नजर मे इसके अन्दर किसी तरह की अपात्रता का दखल मालूम होता है। शायद—बहस्पति की सूखे पीपल जैसी हालत दूसरे की अपात्रता की प्रतीक है, और आठवें घर के शनि की और बारहवें घर के चन्द्रमा की—अपनी अशुभ हालत के हाथा बनी अपनी अयोग्यता की प्रतीक अपनी अपात्रता की

कृ यह भी तत्त्वविज्ञान है। जो तत्त्व पात्रता के होते हैं, वे जब अपात्रता के तत्त्वो के साथ टकरा जाते हैं तो उस टकराव मे से कई बुरे फल निकलते हैं। इसी तरह योग्यता के तत्त्व जब अयोग्यता के तत्त्वो के साथ टकराते है एक और मिसाल सामने आती है कि सातवा स्थान शुक्र का होता है। वहा अगर बहस्पति आकर बैठे तो उसकी हालत कबीलदारी मे उलझे हुए सन्यासी जैसी होती है। उस हालत मे किसी धर्मस्थान के पुजारी को कपडो का दान देना इनसान के अपने घर मे गरीबी ले आएगा

? हा, कपडे, शुक्र का कारक बन जाएगे। और शुक्र पहले ही बृहस्पति का शत्रु है आपका यह दान सिद्धान्त सचमुच ही वैज्ञानिक है। इससे मुझे एक बडा दिलचस्प वाक्या याद आया है—कि पिछले दिनो मैं जब शकराचार्य जी को मिलने गई, तो कुछ देर, उनके दर्शको के पास अकेली बैठी हुई थी जिस वक्त एक दर्शक ने बात सुनाई कि जो कई साधु-सन्यासी किसी को इजाजत नहीं देते—अपने पैरो को छूने की, तो इसका राज एक बार उसने शकराचार्य जी से पूछा था। उस समय शकराचार्य जी हस पडे थे। उन्होंने कहा था कि सवाल जमा-पूजी का है। जो साधु-सन्यासी अपने पैरो को हाथ लगाने की किसी को इजाजत नहीं देते—उनके पास शक्ति की बहत थोड़ी-सी पूजी होती है। और पैरो के पोरों के

द्वारा अपनी शक्ति अगर वह दूसरों को बाट दें तो अपनी जमा-पूजी नहीं रहेगी

क्र यह भी दान के सिद्धात मे आता है। शुभता की कारक शक्ति को देने से शुभता कम हो जाएगी

? मेरा ख्याल है—इसीलिए चमत्कारो का प्रदशन और करामातो की नुमाइश शक्तिशाली लोगो को वर्जित होती है

क्र प्रदशन से शक्ति को अपने हाथो खच करना होता है, उसके बाद शक्ति फिर से अर्जित करनी होती है

अक्षर-कुण्डली

5 मार्च 1987 की रात थी—जब सपने ने एक अलौकिकता मेरी आखो के सामने रख दी, देखा—बहुत ही सादे और भोले लोग मेरे सामने खडे हैं। मैं कह रही हू—"सभी देवी देवता खिलाई शक्तियो के प्रतीक हैं। सिर्फ देवी देवता नही, सारी वनस्पति उसी शक्ति का इजहार है। यह तो मन की अवस्था है—जो किसी भी चीज मे से शक्ति का दीदार पा सकती है "

फिर देखा—मैं अकेली हू और सामने आसमान मे एक बहुत पतली चादी की तार सी चमकती है, और लोप हो जाती है। सपने मे ही सोचती हू—शायद यही ब्रह्म की अव्यक्त स्थिति मे से उसका व्यक्त स्थिति म आने की बेला थी

साथ ही देखती हू—आसमान के एक हिस्से मे कई रग जगमगाते हैं, और सोचती हू—शायद यही एक बिन्दु के विस्फोट-समय का दर्शन है "

साथ ही अहसास होता है कि वह समय, समय की गणना और मान से बाहर था, लेकिन आज के साइंसदान अगर आज क वक्त की गणना और मान को, घडी की सुइयो की तरह पीछे ले जाकर देखें तो वह जरूर रात के दो बजकर बीस मिनट का समय था—जब ब्रह्म अपनी अव्यक्त स्थिति से व्यक्त स्थिति मे आया था

इस सपने से जागी—तो मेरी दीवार वाली घडी पर दो बजकर बीस मिनट का समय था

इस अलौकिक सपने को मैंने डायरी मे दर्ज कर लिया था। और फिर सोलह अप्रैल की बात थी, जब सपने मे एक आवाज सुनी कि दुनिया का हर रहस्य अक सात में है

सात आकाश, सात पाताल, सात समुद्र, सात स्वरों का ब्योरा पढ़ा, लेकिन फिर भी सात अक का राज मेरी पकड मे नहीं आया। फिर श्री अरबिन्द की किताब देखी—'द सीक्रेट ऑफ द वेदा' जिसकी सतरें मन में उतर गईं—The seven fold truth consciousness in the satisfied seven fold truth-

being in creasing the divine births in us by the satisfaction of the soul's hunger for the beautitude

फिर मेरी नज़र मे, अचानक मध्य प्रदेश के श्री कैलाशपति जी का मेरे घर आना—एक दैवी घटना थी, कि जब वह एक रात मनु की व्याख्या करते रहे, कालगणना के रूप म, तो उनके मुह से निकला—हर मनु के काल मे सप्तऋषि मण्डल नये नाम धारण करता है। वतमान मे सातवें मनु के समय जो सप्तऋषि-मण्डल है—उन सात ऋषियो के नाम हैं—वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वमित्र और भरद्वाज।

लगा—'मेरे सवाल का सूत्र किसी उत्तर के साथ जुड़ता जा रहा है।' पूछा—"यह तो मानना होगा कि देवता नाम तत्त्व का है। क्या आप मुझे इन सातो ऋषियो के तत्त्व बता सकते हैं ?"

वह मुस्करा दिए, एक दैवी मुस्कान और कहने लगे—

"वशिष्ठ — अग्नि तत्त्व है, विवेकशक्ति।
कश्यप — पृथिवी तत्त्व है, जागृति।
अत्रि — जल तत्त्व है, वाणीशक्ति।
जमदग्नि — तेज तत्त्व है, क्रियाशक्ति।
गौतम — वायु तत्त्व है, विचारशक्ति।
विश्वमित्र — आकाश तत्त्व है, इच्छाशक्ति।
भरद्वाज — चेतन तत्त्व है, सकल्पशक्ति।

और कैलाशपति जी पाच तत्त्व की व्याख्या करने लगे—' यही पांच तत्त्व दस प्रकार की साधना के साथ पचास तत्त्व बनते हैं। इसी दस प्रकार की साधना को दस महाविद्या कहते हैं। यह समझ लीजिए कि एक एक तत्त्व के दस उपतत्त्व तैयार होते हैं। यही सस्कृत के पचास अक्षर हैं।"

श्री अरबिन्द की व्याख्या भी मेरे अन्तर मे समाई हुई थी, इसलिए पूछा—"चेतनाशक्ति की कितनी परतें हाती हैं ?"

वह कहने लगे—"प्राणशक्ति की, चेतनाशक्ति की सात परतें होती हैं। और हर परत की आगे सात परतें होती हैं। यह परत-दर-परत सिलसिला है। इसी को सात सप्तक कहा जाता है। हर सप्तक सात-सात तत्त्वा की सभा है। यही सप्तवाद ससद होता है। आज देश की जिस ससद मे आपको लिया गया है—वह ससद लफ्ज़, किसी विद्वान ने इसी सप्तवाद से लिया होगा जो सात सात परतो की सभा है "

पूछा—' चेतना की सात परतो, और हर परत की सात परतो को अगर जरब दें तो अक 49 बनता है "

वह कहने लगे—"हां, इसी 49 अक का 50वा अक प्राणशक्ति है। हम पूरे

ब्रह्माण्ड को पचास तत्वी ब्रह्माण्ड कह सकते हैं।"

और वह तत्त्व-व्याख्या की बारीकी मे उतरते कहने लगे—'तत्त्व अक्षर रूप है। और अक्षर शक्ति ध्वनि के अणु मे है। एक अणु का सूक्ष्म रूप, उसका 4 अरब 72 करोडवा हिस्सा होता है, अति सूक्ष्म, जो कभी मिटता नही। इसीलिए ओम् के अढाई अक्षर, वह ध्वनि है, जो ब्रह्म दर्शन है। उसमे तीन तत्त्व समाए हुए हैं—सूय, अग्नि और वायु। यही ब्रह्म है, आत्मा है। यह आदि ध्वनि है। निरन्तर शाश्वत ध्वनि। निरन्तर का अथ है—जिसक बीच मे से नित्य ही आकार निकलते हैं। इसका रूप परिवर्तनशील है, पर आत्मा अमर है। महाकाल के पहलू से, उसकी परिवतनशीलता को हम काल की सीमा कहते हैं, चिन्तन की सीमा, ज्ञान की सीमा, अनुभव की सीमा।"

और कैलाशपति जी ने मेरे सामने एक कागज रख दिया, कहने लगे—"जिस तरह हमने 360 के काल को बारह हिस्सो मे बाटा है, और बारह राशिया बनाई हैं, उसी स्थूल के आधार पर मैं आदि ध्वनि ओम की आध्यात्मिक कुण्डली बनाना चाहता हू, जिसे अक्षर-कुण्डली कहा जा सके। इस अक्षर-कुण्डली के मध्य बिन्दु को ओम् मानकर आज आप अक्षर-कुण्डली बनाए।"

मैंने हैरान होकर कहा— 'मैं बनाऊ?"

वह हस पडे। कहने लगे—' आपको जो सपना आया है कि दुनिया का हर रहस्य अक सात मे है, वह सपना व्यथ नही। वह चेतना है। चेतना की सात परतें, और हर परत की सात परतें। उसी सप्तक का पचासवा अक चेतना का दशन है। और पचास अक्षरो की मूल ध्वनि ओम् है। इसलिए ओम् की अक्षर-कुण्डली मैंने आपकी कलम से बनवानी है। जिसके बीच अक्षरो के सारे तत्त्व विचार रूप में प्रकट हा

यह शायद कैलाशपति जी का शक्तिपात था कि मैंने कागज पर बारह खानो की कुण्डली बनाकर बारह राशियो के रूप मे अपना चिन्तन दज कर दिया—

कैलाशपति जी ने मेरे हाथ से कागज लेकर पढ़ा, और माथे से लगा लिया। कहने लगे—"मेरा यत्न आज सार्थक हो गया।"

घडी बाद पूछने लगे—"ठीक यही ओम् की कुण्डली है। लेकिन हर कुण्डली को जाग्रत करना होता है, किसी-न किसी बीजमन्त्र स। इस अक्षर-कुण्डली को कौन-से बीजमन्त्र से जगाना होगा। यह भी बताइए।"

मेरे मुह से सहजमन निकला—अढ़ाई अक्षर ओम् की ध्वनि को अढाई अक्षर के बीजमन्त्र के साथ ही जगाया जा सकता है। और वह अढ़ाई अक्षर का बीज-मन्त्र है—प्रेम।

वाणी
आनंद
स्नेह
संकल्प
ज्ञान
मन
ॐ
मस्तिष्क
कला
तेज
आत्मा
बुद्धि
चेतना
अक्षर कुण्डली
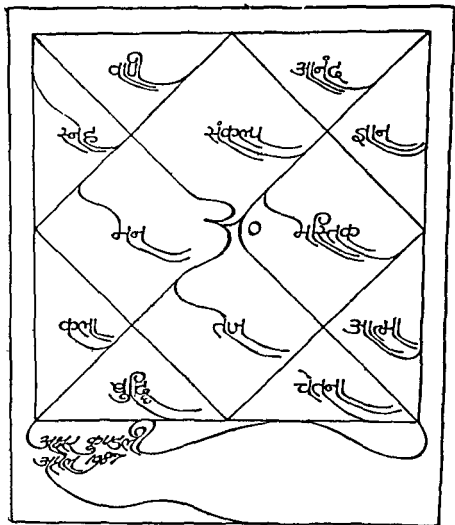
ब्रह्माण्ड की लिपि के कुछ अक्षर

चौन्ह माच 1987 की आधी रात ने एक विस्मय मेरी आंखो मे भर न्यिा, जब देखा कि एक बहुत बडी जगह पर अनगिनत औरतें बैठी हुई हैं। सभी दूधिया वेश मे लिपटी हुई हैं। और सामने श्री कृष्ण खडे हैं, जिनकी ओर देखकर कोई विद्वान-सा दिखने वाला आदमी, कोई रूहानी व्याख्या कर रहा है। वह जब कृष्ण को जन्म देने वाली मां का जिक्र करता है, तो अचानक कई औरतें उठकर खडी हो जाती हैं, जिनमे से हर कोई बडे अधिकार के साथ कहती है कि वह कृष्ण की मां है। वक्ता हैरान-सा होकर उन औरतो की ओर देख रहा होता है और वक्ता की तरह मैं भी, जब कृष्ण मुस्करा देते हैं, कहते हैं—"ये ठीक कह रही हैं इन्होंने मुझे अपने-अपने मन से जन्म दिया है "

इस सपने की हैरानी म, मैं कई दिन लिपटी रही। कोई तक नही मिल रहा था कि यह सपना मुझे क्यो आया है ! जिन अर्थों म किसी इनसान को देवी देवताओ का पूजक कहा जाता है, उन अर्थों मे मैंने कभी मूर्तिपूजा नही की। इसलिए यह मेरी हैरानी थी कि एक दिन मैंने यह सपना सी० बी० सतपथी को सुनाया, जिनके पास सस्कृत का, प्राचीन ग्रथो का, और ज्योतिष का गहरा इल्म है।

वह सुनते ही कहने लगे—"इतिहास का एक हवाला मिलता है कि त्रेता युग मे जब श्रीराम, राज छोडकर वन को जा रहे थे, तो वन के ऋषियो ने उनके दर्शन भी करने चाहे और उनका सग भी करना चाहा। उस समय श्रीराम ने कहा था कि जब मैं द्वापर युग मे कृष्ण बनकर इस धरती पर आऊगा, तब तुम सभी गोपिया बनकर मेरा सग करोगे। सो कृष्ण काल म जो गोपिया थी वे राम काल के ऋषि थे। लगता है—आपके इस सपने मे वे ऋषि गोपियो की सूरत मे दिखाई दिए हैं।"

मैंने हस कर पूछा—"लेकिन गोपिया की जो मिथ है, उसके मुताबिक सभी गोपिया कृष्ण की सखिया थी, माताए नही। मुझे वे गोपिया माताओ की सूरत मे क्यो नजर आइ ?"

सतपथी कहने लगे—"सपने मे कृष्ण के मुख से जो सुना था कि ये सभी मेरी माताए हैं, क्योकि उन्होंने मुझे अपने-अपने मन से जन्म दिया है, तो अगर हम सदियो की प्रचलित मिथ को भूलकर, सिर्फ सपने की गहराई मे उतर जाए तो यह इशारा उस त्रेतायुग की कहानी की ओर चला जाता है, जब जगल के ऋषियो ने श्रीराम का सग करना चाहा था। और उन ऋषियो का फिर द्वापर युग मे गोपियां बन जाना, कृष्ण को अपने-अपने मन मे से जन्म देने का सूचक बन जाता है "

सतपथी जी की यह व्याख्या मन को मोह गई थी, लेकिन हैरान थी कि मैंने वह पौराणिक कथा कभी सुनी नही थी, फिर मेरे सपने का सूत्र उसके साथ कैसे जुड़ गया? पूछा—"ऋषियो की गिनती का भी कोई जिक्र मिलता है?"

वह कहने लगे—"हां, मिलता है। ऋषियो की गिनती भी सोलह हज़ार बताई जाती है, और गोपियो की गिनती भी सोलह हज़ार "

अचानक याद आया कि श्री कृष्णदत्त जब समाधि मे जाकर वेदों और पुराणों की व्याख्या करते हैं, पौराणिक कहानियो का विज्ञान भी बताते हैं और हर प्रतीक का अर्थ भी। और मैंने उनके मुख से कभी सुना था कि कृष्ण की जो सोलह हज़ार गोपिया कही जाती हैं, वे असल मे ऋग्वेद की सोलह हज़ार ऋचाए हैं, ऋचा का दूसरा नाम गोपिका होता है

और मैंने अपने सपने की कुछ गहराई सी पा ली कि ये ऋग्वेद की ऋचाए थीं, जिन्हे किसी युग मे ऋषि कहा गया, और किसी युग में गोपिया। और वही मुझे सपने मे अपना दीदार दे गईं—एक बुनियादी सूरत मे, इनसान की काव्यमयी कल्पना की सूरत मे—जो हर देवी-देवता को जन्म देती है

यह सपना मैंने अपनी डायरी मे लिख लिया था, और फिर करीब-करीब भूल गई थी कि आज अपनी पूरी शिद्दत के साथ मुझे याद आ गया, जब मैंने कोलिन विल्सन की एक तशरीह पढ़ी—There is connection between creativity and psychic sensitivity The creative person is concerned to tap the powers of the subconscious mind

अचेतन मन मे किस तरह कई सदिया और कई युग समाने हुए होते हैं, उसका पार पाना कठिन है। सिर्फ कभी-कभी रचनात्मक छिनो मे उसकी अलौकिकता का अहसास होता है या कभी-कभी किसी सपने मे।

लगा—शायद यही अन्तर्यात्रा है जो यात्रा करनी हम भूल गए हैं। और जिसके लिए बीथोवन ने कभी खीझकर कहा था—man is not small but he is bloody lazy

बीथोवन के यही लफ्ज़ मेरे ज़ेहन मे थे कि मेरे चेतन मन ने अपनी उगली उस ओर कर दी, उस हालत की ओर जिसम से आज मेरा सारा देश गुज़र रहा है—अर्थहीन कत्लोखून मे से। और जिसमे से आज हमारी दुनिया गुज़र रही

है—निउकलर जग के खतरे मे से

याद आया कि ब्रह्माण्ड की और उसके मुआवजे की, यानी इनसान की बात करते हुए डाक्टर फोस्टर ने कहा था—The essential nature of matter is that the atoms are alphabet of the universe and compounds are words, molecules of the substance is rather a long sentence, and the whole book trying to say some thing, is man

और आज का कत्लोखून ? लगा—ये फाहरा गालियां हैं। और ब्रह्माण्ड की इस किताब, इनसान ने, आज अपने सफे दैवी इबारत से भरने की जगह गालियो से भर लिए हैं

अभी—दोपहर की डाक आई है, और एक बल्गारियन दोस्त ने मुझे हर साल की तरह 'मारतेनित्जा' भेजा है, जो सफेद और लाल धागो का एक गुच्छा है। यह बल्गारिया की एक प्राचीन खूबसूरत रिवायत है कि बहार की इन्तजार मे ये धागे दोस्तो को भेजे जात हैं, जो अपने-अपने पेडो पर बाधने होते हैं, जिन पर बहार के फूलो ने खिलना होता है

और आज भी हमेशा की तरह मेरा मन भर आया है। जी करता है—ये धागे अपने देश की रूठी हुई जवानी के हाथो पर बाध दू कि वे देश की वीरानी बनने की जगह, देश की हरियाली बन जाए। और ये धागे दुनिया के सत्ताधारियो की बाहो पर बाध दू कि वे एटमी शक्ति को दुनिया की तबाही के लिए इस्तेमाल करने की जगह, दुनिया की खुशहाली के लिए इस्तेमाल करने लग जाए।

यात्रा दो तरह की होती है—एक अन्तर्मुखी, जो अचेतन मन करता है, और एक बहिर्मुखी, जो चेतन मन करता है। लगता है—मेरी सोई होई आखो का सपना अन्तर्मुखी यात्रा थी, और यह मेरी जागती आखो का सपना बहिर्मुखी यात्रा है।

कोई मजिल कहीं नजर नही आती। लेकिन जानती हू—यात्रा मेरी तकदीर है। और मैंने रास्तो की दरगाह पर अपने पैरो की नियाज चढाई हुई है। और मैं इन रास्तों पर से वे कण इकट्ठे कर रही हू, जो ब्रह्माण्ड की लिपि के अक्षर हैं।

शिवकुमार की जन्मपत्री

पाच अप्रैल, 1987 के सूरज की आखें भी मेरी आखो की तरह भरी हुई थी, जिस समय दिल्ली टेलिविजन के दूसरे चैनल के लिए, मैं शिवकुमार की बात करते हुए कह रही थी—यही मेरे घर की सीढिया थीं, जिन पर पैर रखते ही शिव कहता हुआ आता था—"दीदुआ मैं आ गया "

1973 से लेकर 1987 तक के बीच के चौदह बरस पलों मे कही छपन हो गए, और जैसे राम चौदह बरसों के वनवास के बाद अयोध्या लौटे हो, शिव की आवाज सीढियो की दीवारो से निकलकर, मेरे कानो में पडने लगी—"दीदुआ मैं आ गया।"

टेलिविजन वाले अपना कैमरा सीढियो मे ही लगाकर, सीढियो की उस दीवार पर रोशनी डाल रहे थे, जहां पर इमरोज ने शिव का नाम कैलिग्राफी म लिखकर लगाया हुआ था

और, अगली शूटिंग मेरे उस कमरे मे थी जहा आकर शिव रहा करता था, और मैं उसकी बातें करती हुई उसकी नज़्म के अक्षर दोहरा रही थी—'असा तां जोबन रुते मरना '

इस तरह पाच अप्रैल वाला दिन तो जिस किस तरह गुजर गया, लेकिन शिव की कई सतरें कई दिन मेरे होठो पर सिसकती रहीं

और फिर 19 अप्रैल की सवेर थी, जब मध्यप्रदेश से अचानक श्री कैलाशपति आ गए। उनके आने की मुझे कोई इतिलाह नही थी, इसलिए हैरानी भी हुई, और एक तसल्ली सी भी कि उनके साथ मैं जिन्दगी और मौत के विज्ञान की कुछ बातें कर सकूगी।

याद आया कि शिव की बीवी ने मुझे शिव की जन्मपत्री दी हुई थी। मैंने वह निकाली और कैलाशपति जी के सामने रख दी। कहा—"यह पत्री देखो और कोई भविष्यवाणी करो!"

कैलाशपति जी ने एक नजर पत्री के जन्मलग्न की ओर देखा, कहने लगे—"मीन लग्न की है, लेकिन पत्री बद कर दो। मैं पहले प्रश्नलग्न बना लू।"

और दो एक मिनटों में वह प्रश्नकुण्डली बना कर कहने लगे—"किसकी भविष्यवाणी करू ? जिसकी पत्री दिखा रहे हो, वह आदमी जीवित नहीं है "

मेरे लिए यह बड़े संयम की घड़ी थी, मैंने मन की हैरानी अपने किसी इज़हार मे नही आने दी। कहा—' क्या मतलब ? आप यह कैसे कह सकते हो कि यह आदमी ज़िन्दा नहीं ?"

उन्होंने फिर एक नजर अपनी प्रश्नकुण्डली की ओर देखा, और कहने लगे—"मेरा इल्म यही कहता है कि यह आदमी जीवित नहीं "

यह हकीकत थी लेकिन यह ज्योतिष के इल्म की पकड़ म कैसे आई, मैं हैरान थी। और आखिर यह हकीकत मुझे माननी पड़ी।

यह मेरी जिज्ञासा थी कि कैलाशपति जी कहने लगे—"प्रश्नकुण्डली का लग्न मिथुन बना है। यह द्विस्वभाव राशि है, इसका स्वामी ग्रह बुध नपुसक ग्रह होता है, जो मीन राशि मे पड़ा है इसकी राशि मे। साथ ही पचम का स्वामी शुक्र पड़ा हुआ है, और साथ ही सप्तम और दशम् का मालिक बृहस्पति, जो सभी के सभी राहु की जद म आ गए हैं। और सभी क सभी चौथे घर को देख रहे हैं—मुख्य स्थान को और देखिए। इस प्रश्नकुण्डली के त्रिक स्थान कसे आपस म सबंध जोड़कर बठे हुए हैं—अष्टम् के घर का मालिक, मौत के घर का मालिक शनि छठे स्थान पर चला गया है, शत्रु स्थान पर। और छठे स्थान का मगल, बारहवें स्थान पर चला गया है जहा से पूर्ण दृष्टि से छठे घर को देख रहा है, शत्रु स्थान को, जहा मौत के घर का मालिक बैठा हुआ है "

मैंने बीच मे ही टोककर कहा—"लेकिन मौत के घर का मालिक अपनी दूसरी राशि के कारण भाग्य-स्थान का मालिक भी है "

वह कहने लगे—' हा, है, इसीलिए प्रभाव गहरा हो गया। क्योकि भाग्य-स्थान का मालिक भी शत्रु स्थान पर चला गया है "

मैंने फिर किन्तु किया— लेकिन शनि और मगल जसे क्रूर ग्रह जब त्रिक स्थानो के साथ सबध जोड़ते हैं और आपस म अदला-बदली का रिश्ता बनाते हैं तो विपरीत राजयोग नही बनेगा ?'

उन्होने मन के कारक चन्द्र की ओर उगली की। कहने लगे—' चन्द्र दूसरे घर का मालिक है मारक स्थान का, मारकेश। वह एक मारक स्थान से उठकर दूसरे मारक स्थान पर चला गया है, सप्तम मे। जिसे मगल अपनी अष्टम दृष्टि के साथ देख रहा है। और दूसरा मारकेश बृहस्पति है जो राहु की जद मे आ गया है। सो बात खत्म हो गई।"

मैं कैलाशपति जी का इसलिए भी आदर करती हू, कि कोई भी सवाल निस्सकोच पूछ सकती हू, और मेरी निस्सकोचता को वह सहज मन कबूल कर लेते हैं। इसलिए पूछा—"ग्रहो की एक बारीक व्याख्या के अलावा, आपने अपनी

अतीन्द्रिय शक्ति से भी कुछ देखा था ?"

वह पल छिन के सकोच के बाद कहने लगे—"हा ! इस प्रश्नकुण्डली को बनाने से पहले, आपने जिसकी भी ज"मकुण्डली मेरे हाथ मे दी थी उसे हाथ लगाते ही—मेरे सामने एक झलक आई थी—कि पाच सात आदमी सिर से पाव तक सफेद वस्त्रो मे लिपटे खडे हैं—जिनके मुह पर 'सोग' लिखा हुआ है इसी-लिए मैंने ज"मकुण्डली देखी नही थी, प्रश्नकुण्डली बनाई थी कि आपके मन मे क्या प्रश्न है ? और यह मेरा किस तरह का इम्तिहान है ?"

इसके बाद मेरे लिए एक ही रास्ता बचा था, जो मेरी इसी जिज्ञासा का दूसरा पहलू था, और उसके लिए मैं शिवकुमार का नाम लिए बिना, उसकी ज"म-कुण्डली उनके सामने रख दी, और कहा—"अब यह बताए कि यह आदमी कौन था ?"

अब उ"होंने गौर के साथ ज"मकुण्डली देखी, और कहने लगे—"जो भी था —उसका यश अमर रहेगा "

और वह विस्तार के साथ कहने लगे—

" देखिए ! उसका मीन लग्न था, जिसका स्वामी बहस्पति भाग्य-स्थान पर पडा था, जहा से वह पचम दष्टि के साथ लग्न को देख रहा था। इसलिए पहली बात तो यह कि वह एक सु"दर इनसान होगा जिसकी सूरत मे एक कशिश होगी

" और देखिए ! वह बृहस्पति अपनी नवम् दष्टि के साथ पचम को देख रहा है—इल्म के स्थान को मोहब्बत के स्थान को। और उस पचम स्थान पर तीन ग्रह पडे हुए थे—सूर्य, बुध और शुक्र। वह बहुत ऊचे दर्जे का शायर होना चाहिए, बहुत शक्तिशाली, लेकिन जिस पर मोहब्बत का गलबा हो। शृगार रस की प्रधानता तो होगी ही, साथ ही बुध के कारण बहुत करुणा होगी, अन्तमन की बात भी—इतनी, जो अन्तमन से दूसरे के अन्तमन मे उतर जाए साथ ही एक और करिश्मा है कि सप्तम का मालिक बुध पचम् मे है, और शुक्र के साथ पडा हुआ, इसलिए उसकी आवाज म एक ऐसी कशिश होगी, कि उसके गान के साथ ही उसकी शायरी साथक हो जाएगी "

पूछा—"इस कुण्डली मे एक परिवतन योग है पचम का मालिक च"द्र सप्तम मे है, और सप्तम का मालिक बुध पचम मे। यह प्रभाव क्या हो सकता है ?"

कैलाशपति जी मुस्कराए। कहने लगे—"इसे बहुपत्नी योग तो नही कह सकता, लेकिन बहु प्रेमिका योग कह सकता हू "

पूछा—" सूय भी पचम् मे है, शोहरत का मालिक, लेकिन वह छठे घर से आया है, त्रिक स्थान से।

"उसका असर?"

कहने लगे—"कज का पैसा। इस आदमी की फकीरी पर लोग पैसा लुटाएंगे "

पूछा—"चौथे घर मे मगल और केतु हैं "

कैलाशपति जी कहने लगे—"चौथा घर मुख्य स्थान होता है, मां का स्थान भी। केतु के कारण, मां के होते हुए भी मां का सुख नसीब नहीं होगा, न जद्दी पुश्ती घर मे रहने का सुख मिलेगा लेकिन मगल दूसरे घर से आया है वाणी क घर से, इसलिए यह शख्स जहां पर भी बैठेगा, वह स्थान प्रतिष्ठा हासिल कर लेगा। लेकिन वह स्थान, भले ही हनुमान का मन्दिर हो, वह खडित होगा। लेकिन साथ केतु है, इसलिए उस खडित स्थान पर भी, उसके नाम का झडा लहराएगा "

पूछा—'और पिता का सुख?"

कहने लगे—"सवाल ही पैदा नहीं होता। क्योंकि पिता स्थान का, यानी दशम् घर का मालिक बृहस्पति नौवें स्थान पर पडा है, अपने घर से बारहवें स्थान पर खच वाले स्थान पर, वय स्थान पर "

और पत्री को गौर के साथ देखते हुए वह कहने लगे—"आपने परिवर्तन योग की बात की थी, पचम् और सप्तम् के ग्रहो के परिवतन की। यह बहुप्रेमिका योग तो है ही, लेकिन वियोगकारक, जो शायरी म दद और वियोग भर देगा। यही दद और वियोग अक्षरो मे भी उतर आएगा, और उसके अपने रोम रोम मे भी "

एक और नुकता मेरे सामने आया। इसलिए पूछा—"पचम् स्थान के जिस शब्द ने मोहब्बत की इन्तिहा दी उसकी एक राशि तीसरे स्थान पर है, और दूसरी राशि अष्टम् स्थान पर। इसका प्रभाव?"

वह कहने लगे—"तीसरा स्थान पराक्रम का होता है सो सारी मेहनत कबूल होगी। लेकिन अष्टम स्थान गहराई का भी है, मौत का भी। इसलिए जिस मोहब्बत और दद ने गहराई दी, वह इन्तिहा मौत का कारण बन गई "

एक तडप शिव की रगो मे बसती थी, उसका कारण पूछा तो वह कहने लगे—'मन का कारण चन्द्रमा होता है, उस पर मगल की चौथी दृष्टि है, इसलिए एक बेचैनी तो जन्मजात उसके साथ रही होगी।"

कम्द्रम योग तो सामने दिख रहा था, पूछने वाली बात नही थी। चन्द्रमा अकेला पडा था, जिसके पहले घर मे भी कोई ग्रह नहीं था, और अगले घर मे भी कोई ग्रह नहीं था, लेकिन शनि अपनी राशि मे था, मोक्ष स्थान पर, इसलिए उसकी बाबत पूछा, तो वह कहने लगे—'अगर कभी बृहस्पति की दृष्टि शनि पर पड जाती, तो उसे किसी मोहब्बत दी शिखर पर मोक्ष मिल जाता। लेकिन

मिथहास का नया दर्शन

मैं एक कहानी लिखना चाहती थी, उस एक अकेली औरत पर जिसने एक कालेज की प्रिंसिपल होने के नाते सारी जिंदगी किताबो मे गुजार दी है, लेकिन उसने मेरी दोस्ती को कोई भी जाती सवाल पूछने का हक नही दिया। कभी पिघले से क्षणो म बस इतना भर कहा—"जिन्दगी मे कुछ-एक क्षण किसी की मुहब्बत के आए भी तो क्या " और इन लफ्जो के बाद हमेशा एक खामोशी फैल जाती थी—एक बहुत बडे वीराने की तरह।

अचानक इस खामोशी के वीराने मे एक दिन मुझे लगा—जैसे वह अकेली औरत, एक तिमजिला इमारत की तरह थी और जिसके खडहरात बताते हैं कि उसकी पहली मजिल जरूर कभी किसी की मुलाकात से आबाद हुई होगी सहज एक कहानी कागज पर उतरने लगी जिसमे पहली मजिल का मैं जिक्र करने लगी तो दो परछाइया उभरने लगी मैंने लिखा, "हवा कुछ तेज सी बहने लगी, शायद इसलिए कि हवा मे तेरी सास मिली हुई थी। और हवा की छाती मे खडे हुए पेडो के पत्ते धडकने लगे। मैं हड्डियो की और मास की एक इमारत थी, लेकिन तुम्हें राह से गुजरते देखा तो जसे अपने ही बदन से बाहर आ गई—देखा कि बाहर तेरे पर जैसे राह से बातें कर रहे हो। जाने तूने क्या कहा कि राह की मिट्टी का रग गुलाबी सा हो गया। और फिर जब दोबारा तुम उस राह से गुजरे और एक पेड के नीचे पलभर के लिए रुक गए, तो बाद मे उस पेड ने मुझे बताया कि उस दिन उसकी टहनिया पर बौर पडा था और फिर एक दिन बहुत गम दोपहर थी जब तुम उस राह से गुजरे तो मेरे दरवाजे के सामने ऐसे प्यासे से खडे हो गए जैसे उस दरवाजे से तुम किसी कुए का पता पूछ रहे थे मैं एक इमारत थी, और इमारत के भीतर एक पानी का घडा था, तुम चुपचाप इमारत मे दाखिल हुए, और पानी का कसोरा पी लिया तुम जब भी कभी उस राह से गुजरते, तुम्ह प्यास लगती, और तुम पानी का घूट पीकर चले जाते और बाद मे मुझे लगता, जैसे मैं सूखे हुए गले जैसी हो जाती थी और एक प्यास मेरे होठो पर तडपने लगती थी '

वह औरत एक इमारत की सूरत मे मेरे सामने आई, तो मेरी नजर मे उस इमारत की नीचे की मंजिल उस धरती की तरह हो गई, जो कभी मुहब्बत का मौसम आने पर जरखेज हो गई थी और उस इमारत की दूसरी मंजिल, उसी जरखेजता, की दूसरी मंजिल बन गई। जहां तन-बदन पर फूल खिलते हैं मेरी कहानी कुछ इस तरह आगे बढ़ी—"तुम आए, और एक दिन पानी का घूट पीने के बाद दूसरी मंजिल की सीढियो की ओर देखने लगे यह शायद तन की प्यास के साथ मन की भूख का इशारा था और ऊपर की सीढी पर कदम रखते हुए जब तूने दीवार पर हाथ टिका दिया तो मुझे लगा कि एक कपन मेरे पहलू से गुजर गया है "

यह कहानी औरत की थी, जो इमारत की सूरत अख्तियार कर चुकी थी, इसलिए इमारत की दीवार औरत का कधा भी हो सकती थी, उसकी बांह या हाथ भी

और जिस्म की बात, अगो की गोलाइयो की बात, ऊपर की मंजिल तक फैली हुई हरी बेलों मे, और बेल के फूल-पत्तो म ढलती गई

बात इमारत की थी, जहां एक कोने म घर का चूल्हा जल रहा था उस चूल्हे मे जलती हुई आग, जिस्म म बढती हुई तपिश का प्रतीक हो गई, और जिसकी लपट का साया उस आने वाले की आखो मे चमकने लगा

उस वक्त उस औरत और उस मर्द मे कुछ सकोच, कुछ झिझक भी नुमाया हुई होगी, उसी का बयान कहानी मे नुमाया हुआ, "लकडियो से कुछ चिंगारिया उठकर मेरे पैरो के पास आ पडी, पर मैंने उन चिंगारियो को पैरो से मसल दिया "

चूल्हे पर पकने वाली गम रोटी उस औरत उस मर्द के तन की भूख का प्रतीक हो गई, जिसका एक निवाला खाते हुए एक कपन दोनो के बदन से गुजर गया

लेकिन बदन मे छुपे हुए कपन को नजर से पकडना आसान नही था, इस-लिए एक बदन दूसरे बदन को गले से लगाते हुए जसे अपना-अपना कपन छिपाने भी लगा, और एक दूसरे का कपन ढूढने भी लगा

कहानी म इमारत की बात चलती गई, तो अचानक मुझे उस इमारत का एक तहखाना नजर आने लगा, जहा जाने क्या क्या रखा हुआ था

जो औरत मेरी कहानी की किरदार थी, उसने अपने मुह से कभी कुछ भी तो नही कहा था, शायद इसीलिए कहानी मे एक ऐसा तहखाना शामिल हो गया, जिस की बात करते हुए कहानी आगे बढी, "और जब तू चला गया, मैंने अपनी उम्र का बीसवां साल अपने बदन से उतार कर तहखाने मे रख दिया "

कहानी और आगे बढ़ी, तीसरी मंजिल की तरफ, जिसमे उस औरत की

जि दगी के वह साल थे, जब उसका मुता-लिआ बढ़ता गया था, डिगरियां बढ़ती गई थी, और रोटी-रोजी की जद्दोजहद के साथ जिन्दगी की खामोशी भी बढ़ती गई थी। उस वक्त कहानी के अल्फाज हैं, "तुम एक दिन फिर आए, बहुत अरसे के बाद, उस दिन तुम्हारे पैरो मे पहली मजिल वाला सकोच न था, न दूसरी मजिल वाला, तुम सीधा तीसरी मजिल पर आ गए, जहा मेरी इतजार के दिनो जैसी, बद, ठडी और खामोश सैकडो किताबें थी तुम कितनी देर खामोश खडे रहे, जैसे किताबो मे एक और किताब बढ गई हो "

कहानी मे उस मद की आमद का, दो मजिलो से गुजर कर कुछ निस्सकोच हो जाने पर भी, तीसरी मजिल पर पहुच कर खामोश किताबो में पडी हुई एक किताब की तरह हो जाना, मेरी नजर मे एक ऐसी मुलाकात का होना था, जिसका वतमान था, पर भविष्य नही था

भविष्य नही था, यह भी एक सच्चाई थी, लेकिन वतमान था, यह भी एक सच्चाई थी। और वतमान की उस सच्चाई को पकडने के यत्न मे कहानी इन अल्फाज मे ढल गई, "मैंने कुछ आगे होकर तेरे हाथ को इस तरह छुआ, जैसे हौले-से एक किताब की जिल्द को उठाकर उसका पहला वक देखा हो तू हस-सा दिया, जसे उस किताब की इबारत होंठो मे भर ली हो और तूने मेरे होठो को इस तरह छुआ जैसे मेरे होंठो मे भरी इबारत को पढना चाहा हो "

उस वक्त मास की दीवार औरत के बदन पर से भी गिर जाती है, और मर्द के बदन से भी। और वतमान की क्षणभर की सच्चाई उनके उस वस्ल से नुमायां होती है, जब वह दो नदियो के पानी की तरह मिलते हैं और उनके अहसास उस पानी मे हसो की तरह तैरते हैं

हसीन पलो म डूबने उतरने के बाद मेरी कहानी जि दगी के उस यथाथ की तरफ लौटती है, जो मैंने उस औरत की जिन्दगी मे देखा था। कहानी के अल्फ़ाज़ हैं, "नदिया जब सूखती हैं फिर मिट्टी बन जाती हैं। तुम पास थे, तो मैं नदी थी, तुम चले गए तो मैं *मिट्टी थी—मास— मिट्टी की औरत।*"

लेकिन किसी बदन मे से हसीन पलो का गुजर जाना, एक कयाभत का गुजर जाना होता है जिनसे किसी औरत की कोख मे पलने वाले सपने से इन्कार नहीं हो सकता। मेरी कहानी ने उसी को पकडना चाहा, और कहा, "और फिर तुम आना भूल गए। और एक रात मेरी कोख मे से रोने की आवाज इस तरह आती रही कि मैंने अपनी कोख को और उसमे से उठने वाली किसी के रोने की आवाज को अपने बदन से उतार कर तहखाने मे रख दिया। सोचा जब कभी तुम आयोगे तो मैं तुम्हारा हाथ पकड कर तुम्हें तहखाने मे ले जाऊगी यहा अपनी उम्र से काट कर जो मैंने अपना बीसवां साल रखा हुआ है, और कोख में उठने वाली जो

किसी के रोने की आवाज रखी हुई है, वह सब दिखाऊगी "

और कहानी एक नामुराद इतजार की बात करती है, "तेरे इकरार को मैंने अपने हाथ मे फूल की तरह पकडा हुआ नही था, मैंने उसे अपनी हथेली मे बो लिया था। वह कितने ही बरस मेरी हथेली पर खिलता रहा। लेकिन मास की हथेली आखिर मास की होती है, मिट्टी की तरह हमेशा जवान नही रहती। उसमे सालो की झुरियां पड जाती हैं, और जब वह बजर होने लगती है तो उसमे खिला हुआ हर फूल पत्ता मुरझा जाता है तेरे इकरार का फूल भी मुरझा गया, और एक दिन मैंने कापते हाथो से उस मुरझाये हुए फूल को तहखाने के अधेरे मे रख दिया "

जिन्होंने दुनिया के मिथक पढ़े हैं, जानते हैं कि यूनान के मिथहास मे आज से हजारो साल पहले यूरेनस नाम का एक मर्द हुआ है, जिसने गाया नाम की औरत से मुहब्बत की थी लेकिन गाया की कोख मे से जो बच्चा पैदा होता था, वह उसे धरती के नीचे दफन कर देता था, और गाया को हमेशा धरती से बच्चे के रोने की आवाज आती रहती थी

मैं कहानी लिखती गई तो अचानक तहखाने की बात करते हुए मेरे सामने यूनान का मिथिहास आ गया, और लगा, जैसे मेरी कहानी उसी मिथिहास का एक नया दशन है

कहानी लिखकर एक दिन मैंने अपनी दोस्त उसी औरत को यह कहानी सुनाई, जो मेरी कहानी की किरदार है। पूछा—'आपने कभी कुछ नही बताया, लेकिन क्या मैं आपकी जिदगी की हकीकत को कुछ पकड पाई हू कि नहीं ?" वह हस दी, सिफ इतना ही कहा, "यह कहानी मेरी भी हो सकती है किसी की भी हो सकती है "

कहानिया कब कैसे प्रतीक धारण करती हैं, या वह मुअजजे (चमत्कार) होते हैं, जिन्हें अभिव्यक्त करने के लिए किरदार गढ लिए जाते है, यह कुछ पकड मे नही आता। लेकिन हमारा इतिहास भरा हुआ है, ऐसी प्रतीकात्मक कथाओ से। मिसाल के तौर पर एक हवाला देती हू। हमारे इतिहास मे पुरूरवा और उवशी को जो कहानी सदियो से चली आ रही है, और जिस पर कई बार नाटक भी खेले गए हैं वह किरदार हमारी नजर में इतने हकीकत बन चुके हैं कि पुरूरवा को एक बादशाह के तौर पर ही हम देखते हैं, जिसे एक अप्सरा उवशी से प्यार हो जाता है और वह उसकी जुदाई मे व्याकुल होकर राजभवन मे तडपता है।

लेकिन हकीकत यह है कि कुदरत के कुछ तत्त्वो को नुमायां करने के लिए यह किरदार गढ़ लिए गए थे। पुरूरवा कोई बादशाह नही है, वह एक खास समय का नाम है। बुध ग्रह कभी भी सूय से सत्ताइस अशो से ज्यादा दूर नही रहता।

लेकिन वही जब साढे सत्ताइस अशो पर पहुचता है तो सूरज की रोशनी उसके दोनो तरफ पडती है । उसे 'मद्ध बिन्दु' या 'गम बिन्दु' कहते हैं। धरती जब उस 'मद्ध बिन्दु' को छू लेती है, तो उस काल का नाम पुरूरवा होता है । उसी 'मद्ध बिन्दु' से चद्र बिन्दु के भ्रमण की दिशा शुरू होती है, और उसी की उत्तर दिशा का नाम 'उवशी' है । सत्ताइस अश उत्तर की तरफ जब चद्रमा आता है, तो वह समय उवशी और पुरूरवा के मिलन का होता है। कुदरत के इन्ही तत्त्वो के मिलन से राजा पुरूरवा और अप्सरा उवशी की रोमाचक कहानी ने जन्म लिया था

इला गाथा और उसका विज्ञान

एक प्राचीन गाथा है कि वैवस्वत मनु ने पुत्रप्राप्ति के लिए यज्ञ करवाया, लेकिन पुरोहित की गलती से पुत्र की जगह पुत्री इला पैदा हो गई। फिर मित्र वरुण की मेहर से वह स्त्री से पुरुष बनी और उसका नाम सुद्युम्न हो गया। फिर शिव की अकृपा से वह सुद्युम्न से इला बन गई और उसका बुध के साथ विवाह हो गया। इस विवाह से इला के घर पुरूरवा नाम का पुत्र पैदा हुआ।

फिर विष्णु की कृपा हुई और वह इला से फिर सुद्युम्न हो गई, पुरुष बन गई। और पुरुष रूप में वह तीन पुत्रों की पिता बनी।

शिव-पार्वती का एक सुरक्षित वन था जिसमें प्रवेश करने के कारण वह पुरुष रूप से फिर नारी हो गई। लेकिन बन्धुबांधवों की प्रार्थना से उसे यह वर मिला कि वह एक माह पुरुष रहेगी, एक माह स्त्री और सिलसिला अब तक चल रहा है

यह सब कुछ प्रतीकात्मक है, यह मैं जानती थी, लेकिन इसकी व्याख्या के लिए मैं उस विद्वान की तलाश में थी, जिसे अपने अन्तर्ज्ञान के आधार पर इसकी व्याख्या का हक हासिल हो सकता है।

श्री कैलाशपति के अनुसार इसकी व्याख्या है—

इला प्राण-वायु का नाम है।

यह गाथा सृष्टितन्त्र की प्रतीक है।

यज्ञ—वाणी का निरन्तर जप है, प्राणायाम।

पुरोहित—शरीर रूप पुर (नगर) का हित चाहने वाला।

आगे योग की क्रिया है, जिसके अनुसार बाईं ओर लेटने से इड़ा नाड़ी दब जाती है, और पिंगला नाड़ी खुल जाती है।

इड़ा नाड़ी चन्द्रनाड़ी है, पिंगला सूर्य नाड़ी है।

इसलिए इड़ा स्त्री है, पिंगला पुरुष।

पुरोहित की गलती—दाईं ओर लेटना है, बाईं ओर के स्थान पर।

इसीलिए पिंगला (पुत्र) की जगह इला (पुत्री) पैदा हो गई।

यानी सूयनाडी की जगह चन्द्रनाडी मे गति आई।

वरुण—जल है, उसकी मित्र धरती, जिसकी मेहर से कान्ति से काया बनी। स्थूल शरीर। यही स्त्री से पुरुष हो जाना है।

सुदयुम्न—आकाशमण्डल का श्रेष्ठ स्थान है, जो इसानी शरीर मे मस्तक पर है, दोनो भौओं के मध्य। यही स्थान प्राण को प्राप्त हुआ।

शिव अकृपा का अथ है—जीव की पहली स्थिति जब मां के गभ में हुई तो मा तत्त्व प्रधान हो गया। यही पुरुप स स्त्री हो जान का कारण है।

विष्णु तत्त्व पालनशक्ति है, जो ब्रह्म से चन्द्रकना पूरित अमृत के बरसने से पालना करती है। योग की खेचरी मुद्रा से फिर पुरुपतत्त्व प्रधान हुआ, जो चेतन तत्त्व का प्रतीक है। यही इला का फिर पुरुष रूप हो जाना है। यह शरीर का अनहद चक्र है।

इसके बाद विशुद्ध चक्र शिवतत्त्व का वन है, जहा शक्ति के बिना शिव, शव हो जाता है। इसलिए विशुद्ध चक्र मे प्रवेश शक्ति रूप हो जाना है। यही पुरुष से फिर स्त्री रूप हो जाना है। इस विशुद्ध चक्र म महामाया का दशन स्त्री रूप मे होता है।

और इस गाथा म इला का बुध के साथ विवाह प्राण का वायु के साथ समागम है, क्योंकि वायु का स्वामी बुध है, इसलिए इला और बुध का मथुन सांस का वायु के साथ मिलन है।

इस समागम से पुरूरवा नाम के पुत्र का पैदा होना सकल्प का जन्म है।

और, इस गाथा म जो कहा गया है कि इला जब फिर मे सुदयुम्न बनी, पुरुष हो गई, तो तीन पुत्रो की पिता बनी—वे तीन पुत्र तीन गुण हैं—रजोगुण, तमो गुण, सत्त्व गुण।

और, गाथा का अन्त जिस क्रम से किया गया है, कि इला एक महीना पुरुष रहेगी एक महीना स्त्री, यह क्रम इडा और पिंगला का क्रम है, जिसके अनुसार इसानी शरीर मे एक महीना चन्द्रनाडी प्रधान रहती है, एक महीना सूय नाडी।

और यही विज्ञान राशि विज्ञान है, जिसके अनुसार मेप राशि पुरुप होती है, वृप राशि स्त्री। मिथुन राशि पुरुप होती है, कक राशि स्त्री। सिंह राशि पुरुप है, कन्या राशि स्त्री। तुला राशि पुरुप होती है, वृश्चिक राशि स्त्री। धनु राशि पुरुप होती है मकर राशि स्त्री। और कुम्भ राशि पुरुप होती है, मीन राशि स्त्री।

प्रतीक-विज्ञान

कश्मीर के एक पण्डित घरान की सत्रहवीं सदी के आखिर से एक वशावली मिलती है, जिसमें एक पूर्वज का नाम सिद्ध-रैणा था।

इस वश मे सदैव से ही एक पुत्र की प्राप्ति की परम्परा चली आती है। जिसके अनुसार सिद्ध रैणा का पुत्र दया रैणा था। संस्कृत के विद्वान इस वश मे दया रैणा का पुत्र भवानी-रैणा था, जिसने इन्द्रकूट पर जाकर पूरे दस वर्ष नन्देश्वर की आराधना की थी।

कहा जाता है कि उस आराधना के समय उन्हें नन्देश्वर के साक्षात दर्शन हुए और उस देवता ने अपने बावरे उपासक को कुछ मागने के लिए कहा। मुर्शिद के दीदार से बावरे साधक ने केवल इतना ही कहा था—"मेरी सात पीढ़ियों को मेरे देवता बस यही वरदान दें कि घर मे एक बर्तन सदैव चावलो से भरा रहे। उसके ऊपर सासारिक जरूरतो को पूरा करने के लिए एक सिक्का पड़ा रहे, ताकि मेरी सात पीढ़िया निश्चिन्त होकर आदि-शक्ति के ज्ञान को अर्जित कर सकें।"

इन्द्रकूट की इस तपस्या का एक चिह्न 'कूट' शब्द भवानी रैणा के नाम के साथ जुड़ गया, जिससे उनका नाम हो गया भवानी कूट रैणा। यह करीब अठारहवीं सदी के मध्य की बात है।

इस भवानी रैणा के घर एक बेटा हुआ राज रैणा, जिन्होंने 85 वर्ष की आयु भोगी। परन्तु पहली पत्नी की मृत्यु के बाद जो विवाह किया था उस दूसरी पत्नी के सुहाग की उमर बहुत छोटी थी। पद्मा नाम की उस युवा लड़की ने अपनी शेष आयु प्राचीन ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त करने मे अर्पित कर दी। जब उस का जवान बेटा अमर चन्द साधना काल मे ही देश मे फैले सक्रामक रोग के कारण नही रहा तो पदमा ने अपने ढाई वर्ष के पौत्र को गोद लेकर अपने ज्ञान का वारिस बना दिया।

यही बालक आज कश्मीर का महान पण्डित है—श्री निरजन नाथ रैणा। उनके पास अपने पूर्वजो और प्राचीन अज्ञात ऋषियों के लिखे हुए अनेक ग्रन्थ हैं—शारदा लिपि मे—शैव परम्परा को आगे चलाने के लिए उनकी बहुत गहन

साधना है, जिसम शक्ति-साधना और श्री यन्त्र साधना मे अतिरिक्त सप्तशती और अत मन को जाग्रत करने की साधना भी शामिल है। इसके अतिरिक्त यह अब साधना भी जानते हैं। शिव शक्ति, गणेश, सिद्ध और सूरज की—जिस साधना को 'पचाइन-पूजा कहा जाता है—उसकी शुद्धता को भी जानते हैं।

आगे श्री निरजन नाथ रैणा के पुत्र हैं—डॉक्टर चमनलाल रैणा। जिन्होंने यह सब कुछ विरसे मे पाया है और कश्मीर की शैव परम्परा को आग चलाया। इन्होंने एक लम्बी 'लेखनी-साधना' की है। इहोने लल्लेश्वरी और कश्मीरी शैव मत पर भी काय किया है। श्री अरविन्द और इकबाल के दशन का तुलनात्मक अध्ययन भी लिखा। वेद वेदांत, गायत्री, विश्व मित्र, भरथरीहरि श्री कृष्ण, श्री राम महात्मा बुद्ध, गुरु नानक और स्वामी रामतीथ के मोनोग्राफ्स लिखे। अब अपनी लेखनी को कश्मीर मे शक्तिवाद' के लिए अर्पित कर दिया है।

यही श्री रैणा हैं जिन्हें विरासत मे मिले ग्रथो मे एक अज्ञात ऋषि का लिखा हुआ आदि शक्ति का श्रुति ज्ञान भी मिला है। जिसका प्रतीक विधान देखने योग्य है। इसी प्रतीक विधान को देखन के लिए मैं श्री रैणा से बात करती रही।

प्रतीक-दशन

कश्मीर के आदि ग्रथो मे से एक ग्रथ है—'भवानी सहस्रनाम' जिसका मूल स्रोत 'रुद्रयामल' ग्रन्थ में था। जो समय की धूल मे खो चुका है। परन्तु सत्रहवी सदी मे एक महान चिन्तक हुए थे—चूडामणि श्री साहिब कौल, जिहाने 'देवी नाम विलास' एक ग्रथ लिखा था, जिसमें आदि शक्ति के हजार नामो की सूची मिलती है।

उसी नामावली के आरम्भ मे एक वणन है कि शिव को आराधनामय देख कर नन्दकेश्वर ने सवाल किया कि हे देवो के देव! आप किसकी आराधना करते हैं?

उस के जवाब मे शिव ने कहा था—बेटा, मुझसे आज तक किसी ने यह प्रश्न नही किया, परन्तु तुमन किया है मैं खुश हू। इसलिए यह भेद बताता हू कि आदि-काल मे जब केवल जड-चेतना थी उसमे से तीन गुण पैदा हुए थे—सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। वही मूल शक्ति मूल प्रकृति बनी। उसी मे से मैं पैदा हुआ था और उसी से सारी चेतना पैदा हुई। उसी शक्ति से मेरा महामिलन हुआ, तो सकल्प पदा हुआ, मन पैदा हुआ, इच्छा पदा हुई। यही महाशक्ति का शक्ति-पात था। उसी से वणमाला बनी शब्द बने, वेद बने और सरस्वती विकसित हुई

अक विज्ञान

यह आदि शक्ति जिसके हज़ार नामो की नामावली मिलती है, इसकी काया प्रतीक रूप म वणन होती है। इनकी अठारह भुजाए कही जाती हैं—'अष्ट दस भुजा देवी शारिका शाम सु दरी ।

ये अठारह भुजाए—महाकाली की 10 भुजाए और महासरस्वती की 8 भुजाओ का जोड है जो आदि शक्ति की काया का प्रतीक बन जाता है।

महाकाली को दस भुजाओ का मूल विज्ञान—पूरे विश्व का 360 डिग्री का नाप है। प्रत्येक भुजा मे छत्तीस छत्तीस तत्त्व दर्शाए जाते हैं, जो दस भुजाओ से गुणा करने पर 360 तत्त्व बनते हैं। यह वही अक है जो पूरे ब्रह्माण्ड का नाप है।

ब्रह्माण्ड की चेतना का नाम महासरस्वती है जो कमल की आठ पत्तियो मे कायामय होती है। यह योग विद्या के आठ पहलू हैं—पूण चेतना के आठ पहलू।

महासरस्वती का अक आठ और महाकाली का अक दस मिलकर अठारह बनता है, जो आदि शक्ति की अठारह भुजाओ का प्रतीक है।

श्री-चक्र

किसी महान चिन्तक ने, पता नही किस काल मे ब्रह्माण्ड के विज्ञान को रखाओ म दर्शाया था और श्रीय त्र अस्तित्व मे आया था।

आदि शक्ति का पूरा विज्ञान श्रीय त्र मे मिलता है जिसके मध्य मे केवल एक बि दु है—पूण चेतना का प्रतीक। उस बि दु के चारो ओर एक त्रिकोण है—मूल त्रिकोण—जो इच्छा, ज्ञान और क्रिया का प्रतीक है। इसी को 'विश्व-योनि' कहा जाता है।

इस त्रिकोण के चारो ओर इसका विकासमय रूप आठ कोण हैं—अष्ट-कोण। यह जल वायु, अग्नि, आकाश और धरती पांच तत्त्वो मे सत्त्व, रजस् और तमस् तीन गुणो का जोड है।

इस अष्टकाण के बाहर की ओर दस-कोण का घेरा है जा पाच कर्मेंद्रियो और पाच ज्ञानेद्रियो का प्रतीक है। इसके चारो तरफ दस कोण का घेरा है जो रूहानी अवस्था का प्रतीक है। यह रूहानी अवस्था उसी पहली शारीरिक अवस्था की दस इद्रियो मे से विकसित होती है। उसके इद गिद 14 कोणो का घेरा है जो वणमाला का आदि-स्रोत है।

उसके बाहर की तरफ फिर आठ कोण हैं—अष्ट-दल—अष्ट सिद्धियो के प्रतीक।

फिर उसके चारो ओर 16 कोण हैं—16 बीज अक्षरो के प्रतीक।

इन सबके चारा ओर तीन वृत्त हैं जो फिर रजो, सतो और तमो गुणो के प्रतीक हैं। यह उन वृत्तो मे घूमते मनष्य के आवागमन के सकेत हैं।

इन सभी चक्रों के चारों ओर चार दरवाजों के चिह्न हैं, जो चार दिशाओं के भी प्रतीक हैं और मनुष्य के बनाए चार वर्णों के भी, चार आश्रमों के भी।

इन चार दरवाजों का संकेत ब्रह्माण्ड की चेतना देकर मनुष्य को रंग, नस्ल, जाति, कौम, मजहब और जिनस के प्रत्येक विभाजन से मुक्त करता है।

चेतना-विज्ञान

समस्त भारतीय चिन्तन विज्ञानमय है और उसकी प्रत्येक कथा-कहानी प्रतीकात्मक। यहां तक कि यज्ञ-हवन भी प्रतीकात्मक हैं। इनकी अग्नि मनुष्य की अन्तर्चेतना अग्नि का अभिनय है, निराकार को साकार रूप में देखने का प्रयत्न।

परन्तु इस आत्मिक अभिनय में और मंच पर प्रस्तुत की जा रही किसी कथा कहानी के अभिनय में बहुत बड़ा अन्तर है। किसी कथा-कहानी के पात्र, उस कहानी-कथा के मूल पात्र नहीं होते, चाहे मूल पात्रों के प्रत्येक दुःख सुख को और उनके अन्दर के अनुभव को वह कुछ समय के लिए अपने अंगों में उतार लेते हैं, अपनी प्रत्येक मुद्रा में। फिर भी वह मूल पात्र नहीं होते। वह प्रत्येक रूप को एक कपड़े की तरह पहनते हैं और निश्चित समय के पश्चात् उस कपड़े की तरह उतार देते हैं। परन्तु यज्ञ-हवन के अभिनय में जो पात्र भाग लेते हैं, वे मूल पात्र होते हैं। उनकी प्रत्येक अनुभूति सदैव काल के लिए उनकी चेतना पर अंकित हो जाती है। इस चेतन विज्ञान को समझने के लिए एक हवाला देना चाहती हूं

विधि-विज्ञान

बस तो जो देवी या देवता जिन गुणों को धारण करता है उसका हवन उन्हीं गुणों के हिसाब से प्रतीक धारण करता है। जैसे दुर्गा पूजा के हवन में नौ दीये जलाए जाते हैं जो स्थूल से सूक्ष्म तक की चेतना की नौ अवस्थाओं के प्रतीक हैं। सरस्वती के हवन के समय पांच दीये जलाए जाते हैं जो पांच तत्त्वों के प्रतीक हैं। परन्तु यहां विस्तारपूर्वक आदि शक्ति की पूजा विज्ञान की बात करना चाहती हूं। उसके हवन में अठारह दीये जलाए जाते हैं जो आदि शक्ति की अठारह भुजाओं के प्रतीक हैं।

किसी पण्डित पुरोहित का दखल मूल चिन्तन में नहीं था। यह समय की जरूरत के अनुसार आया। जब मनुष्य स्वयं इस विधि विज्ञान को समझने में असमर्थ रहा।

मूल चिन्तन में इसके दो ही मूल-पात्र होते थे—एक पुरुष और एक नारी। जिन्हें शुक्र' और शुक्व कहा जाता था। शुक्र' का अर्थ है तेज प्रधान अर्थात पुरुष और शुक्व का अर्थ है गर्भ प्रधान अर्थात स्त्री।

हवन विधि में घी और सामग्री अर्पित करने के लिए दो लम्बे चम्मच इन्हीं

दोनो ये प्रतीक धारण करते हैं। इनमे से पुरुष के हाथ मे पकडा हुआ चम्मच एक गहराई वाला होता है, जो केवल घी अर्पित करता है—तेज का प्रतीक। अग्नि को प्रज्वलित रखन का साधन। स्त्री के हाथ मे पकडा हुआ चम्मच दो गहराइयो वाला होता है, उसका और उसकी गभ शक्ति का प्रतीक, जिससे वह धरती से उत्पन्न हुई वस्तुए—जौ और चावल जैसी—अग्नि को अर्पित करती है।

इस प्रकार पुरुष देवताओ को अपने घर मे अतिथि बुलाने का सकेत बन जाता है और स्त्री उनका आतिथ्य सत्कार करने का सकेत।

जैसे—प्रत्येक हवन का विधि विज्ञान उसके केन्द्र बिन्दु देवता के अनुसार होता है, उसी तरह आदि शक्ति की पूजा के समय भी जो पूजा स्थल चुना जाता है उसकी पहली परख यह होती है कि उस भूमि खण्ड मे किसी कीट-पतग की बाँबी न हो, ताकि वह स्थान हत्या मुक्त हो।

आदि शक्ति का हवन कुण्ड दस हाथ लम्बा होता है। यह दस का अक उसकी दशमहाविद्या का प्रतीक है।

इसकी गहराई दस अक का चौथा भाग होती है, जिसे चार के अक से भाग करना चार वेदो का प्रतीक है।

यदि ऐसी भूमि न मिल सके तो हवन-कुण्ड को भूमि खोद कर बनाने के स्थान पर जमीन की सतह के ऊपर मच की तरह बना लिया जाता है परन्तु नाप-तोल वही रखा जाता है, दस हाथ चौडा और दस हाथ लम्बा। उसकी ऊचाई उसी माप का चौथा भाग—चार वेदों का प्रतीक।

इस मच पर जो सूखी मिट्टी की सतह बिछाई जाती है, वह पृथ्वी तत्त्व की प्रतीक है।

इस मिट्टी की सतह पर प्रत्येक देवता का देवतानुसार यन्त्र बनाया जाता है। उसी तरह आदि शक्ति को पूजा के समय, उस मच पर बिछाई मिट्टी पर श्रीयन्त्र बनाया जाता है। जो आदि शक्ति का यन्त्र है—विश्व कोख का प्रतीक।

यह यन्त्र चावलों के सूखे आटे से अकित किया जाता है। मिट्टी से पैदा होने वाले अन्न का प्रतीक है।

प्रत्येक हवन-कुण्ड के सामने की ओर गणेश स्थापना होती है—पूजा का आरम्भ करने के लिए। जिसका स्थान दस हाथ की चौडाई में से दोनों ओर चार चार हाथ जमीन छोडकर बीच की दो हाथ भूमि गणेश की स्थापना के लिए चुनी जाती है। उसके दोनो ओर चार चार हाथ भूमि शिव और शक्ति का प्रतीक है। इन दोना स्थानो के बीच का स्थान—गणेश का स्थान—उनके पुत्र के नाते चुना जाता है।

गणेश का प्रतीक वेल फल होता है। यह इसलिए कि शिव ही एक ऐसे देवता हैं जो इसके पत्तो की कडवाहट भी पी जात हैं। इसके काटो को भी सहन कर लेते हैं। यह लोगो के प्रत्येक दु ख को सहन कर लेने का प्रतीक है। गणेश शिव जी का पुत्र होने के नाते इस फल को ग्रहण कर लेता है।

इस पूजा के पात्र पूर्व दिशा की ओर मुह करके बैठते हैं, जो दिशा विज्ञान है, यह उदय होते सूय क प्रकाश को अपने मन और मस्तिष्क मे धारण करने का प्रतीक है।

हवन मे जिस लकडी का प्रयोग किया जाना होता है वह उस वक्ष की नहीं होती जिस फल लगता हो। यह फल देने वाले वृक्षो को कभी भी न काटन का सूचक है।

यह उत्तर-पूव का दिशा विज्ञान है कि पानी का कलश उस कोण म स्थापित किया जाता है। यह कलश जल-तत्त्व का प्रतीक है और इसकी गोलाई ब्रह्माण्ड की प्रतीक है, आदि बिन्दु की।

पानी के इस कलश मे कुछ अखरोट डाले जाते है यह इसलिए कि अखरोट के अन्दर चार गरिया होती हैं, जो चारा वेदो का भी प्रतीक हैं और चारो दिशाओ का भी।

इस कलश का मुह लाल रग के कपडे के साथ ढक दिया जाता है जो अम्बर का प्रतीक है और उसका लाल रग अम्बर की लाली का प्रतीक है।

इस कलश पर नारियल रखा जाता है, जिसकी बाहरी जटाए वन-जगल की प्रतीक हैं—कुदरत वनस्पति की। इसका अन्दर का भाग मनुष्य के स्व' की अन्तरात्मा का प्रतीक है, जिसम रस भी है और फल भी। इसकी गरी का सफेद रग शुद्धता का प्रतीक है, सात्विक बुद्धि का।

ब्रह्माण्ड के प्रकाश-स्रोत दो ही होते हैं—सूय और चन्द्रमा। इसलिए कलश के निकट दोना के चित्र मिट्टी पर बनाए जाते हैं। यहा सूय चित्र को सात रगो मे चित्रित किया जाता है जो उसकी किरणा म समाए हुए रग हैं। चन्द्रमा को सफेद मिट्टी से चित्रित किया जाता है जिसमे हल्का सा नीला रग भी छुआ जाता है, उसकी नीली आभा का।

यह सूय और चन्द्रमा मनुष्य की अन्तरात्मा के भी प्रतीक हैं—सूय मनुष्य के अन्दर विराजित तेज का और चन्द्रमा उसके उज्ज्वल मन का।

साथ ही 18 दीये जलाए जाते हैं—आदि शक्ति की अठारह भुजाओ के प्रतीक और उनको इस आकार मे रखा जाता है जो उसके श्रीयन्त्र का आन्तरिक भाग है—एक बिन्दु और त्रिकोण वाला—विश्व योनि का प्रतीक।

इन दीयो में जो रूई की बत्तियां रखी जाती हैं उनको बनाने की भी एक विशेष विधि है। गोलाकार म एक बडे से टिकके की शक्ल म रुई को बिछाकर

उसके बीच मे से दो पतली पतली वत्तियां खीच ली जाती हैं जो शिव शक्ति की प्रतीक बनती हैं। फिर दोनो को इकट्ठा करके उन्हे एक बत्ती की शक्ल दे दी जाती है, जो अद्धनारीश्वर का प्रतीक बन जाती है। अब रूई की टिक्की दीये के घी मे भिगोकर बत्ती के सिरे को आग का स्पश किया जाता है जो अद्धनारीश्वर के मुख मे से प्रकाश निकलने का प्रतीक बन जाना है।

इस पूजा के पात्र अपनी-अपनी दायी भुजा पर मौली का धागा बाधते हैं। परन्तु बाधने से पहले मौली के धागा के बीच से गाठ लगा देनी होती है। यह अनेकता को एक रूप मे देखने की प्रतीक होती है।

पूजा के फूल उन वृक्षो के नही लिए जाते जिन्होने समय पाकर फल बनना होता है। जैसे अनार या आडू के फूल कभी पूजा के लिए प्रयोग मे नही लाए जाते। ऐसी वजना फलो की सलामती के लिए होती है।

अब प्रश्न उठता है कि पूजा निष्काम की जा रही है या सकाम। यदि निष्काम हो तो इस पूजा मे केवल सफेद फूलो का प्रयोग होता है परन्तु यदि सकाम हो, किसी इच्छा पूर्ति के लिए—तो लाल फूलो का प्रयोग होता है—सासारिक कामनाओ के प्रतीक।

इस तरह यदि यह पूजा निष्काम हो तो माथे पर सफेद चन्दन का तिलक लगाया जाता है और यदि सकाम हो तो रक्त चन्दन का।

सिन्दूर की बिन्दी स्वच्छ प्रकाश की प्रतीक है—उदय होते सूय की आभा की।

हवन कुण्ड के पास जिस भी देवी या देवता की पूजा करनी हो उसकी मूर्ति रखी जाती है चाहे गीली मिटटी को हाथो मे आकारमय करके। यह निराकर को साकार रूप म देखने का प्रतीक है।

इस पूजा मे अनार जरूर रखा जाता है। जिसके अन्दर का प्रत्येक दाना उसका बीज होता है। इस प्रकार अनेक बीजो को अपने अन्दर सहेज कर वह ब्रह्माण्ड का प्रतीक बन जाता है। एक के अन्दर अनेकता का प्रतीक।

आदि-शक्ति के एक हजार नाम गिने जाते हैं इसलिए इस हवन मे एक हजार आहुति देनी होती है—प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ।

प्रत्येक नाम का उच्चारण इस पूजा का पात्र पुरुष करता है और उच्चारण के पश्चात 'स्वाहा' शब्द स्त्री कहती है। जो हवन की सामग्री को अर्पित कर देने का प्रतीक है।

इस पूजा के प्रसाद को ग्रहण करने का विज्ञान यह है कि जिस शक्ति से इस ससार का अन्न जल प्राप्त किया जाता है, उसकी वस्तु उसी को सौंप दी। फिर उससे अपनी शारीरिक जरूरत के अनुसार कुछ ग्रहण कर लिया। यह दष्टिकोण मनुष्य को वस्तु मोह से मुक्त कर देता है।

—

कौमी एकता

वैसे तो आदि शक्ति के एक हजार नामों म ब्रह्माण्ड का प्रत्येक पहलू समाया हुआ है, परन्तु पूरे भारत की 'एकता' का पहलू विशेष रूप से प्रदर्शित होता है। ताकि अलग-अलग प्रान्तो, जातियो और मजहबो के लोग इसमे अपनी एकता को पहचान सकें। जैसे—भारत के सभी प्रान्तो की नदियो के नाम इसी आदि शक्ति के नाम हैं—गगा, यमुना, सरस्वती, गान्धवरी, विपाशा, कावेरी, सूय, चन्द्रभागा कौशकी, गण्डका, शचि, नमदा कमनाशा वतरवती, विवसत्ता आदि।

कोण त्रिकोण वृत्त आदि सारे आकार भी उसक ही नाम हैं। पाच तत्त्व भी उसके नाम, सब धातुए भी उसके नाम, साता रग, सातों स्वर और सारे अक्षर भी उसके नाम हैं।

चेतना, तक और विज्ञान भी उसके ही नाम हैं, और चारो आश्रम चारो वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और अवण भी उसक ही नाम हैं। सारे मजहब भी उसके ही नाम हैं।

उसके प्रत्येक नाम का पूजनीय मान कर, उसके एक हजार नामो को एक हजार बार आहुति दी जाती है।

एक दस्तावेज

मध्यप्रदेश की एक बारह साल की बच्ची का जिक्र मैंने श्री कैलाशपति जी से सुना हुआ था। और एक प्यारा सा इत्तफाक हुआ कि वह बच्ची अपने पिता के साथ, रिश्तेदारो के घर किसी की शादी के सम्बन्ध मे दिल्ली आई, तो उसके पिता बच्ची को लेकर मुझे मिलने आ गए।

जैसे सुना हुआ था, बच्ची म उसी तरह की गम्भीरता देखी, जो उसकी उमर से बहुत बरस बडी है। उसके पिता कहने लगे—"मैं जाती तौर पर घरेलू वीरानगी का परेशान आदमी हू। व्यापार ठीक है, सरकार की ओर से गाजा और भाग का ठेका मिल जाता है, जो हर बरस नीलामी मे लेना होता है। 1963 मे मेरी शादी हुई थी। पत्नी के साथ रहने का मौका तकरीबन तीन महीन के लगभग मिला था, कि 1964 मे 24 अप्रैल को वह मकान की छत पर से गिर गई। जिसके साथ उसका दिमाग़ी तवाज़न हिल गया। और 1964 से 1970 तक उसको नफ-सियाती मरीज़ो के हस्पताल मे बम्बई रखना पडा। मेरे उन वीरान वर्षों मे कई बार मेरी दूसरी शादी की पेशकश हुई, पर मन नही माना। मेरी मरीज़ पत्नी जब सात बरसो के बाद कुछ ठीक हुई तो मैं उसे घर ले आया। हमारी यह बच्ची 28 जुलाई 1973 का पदा हुई। फिर इससे छोटी एक और बच्ची 1977 मे हुई, पर जब वह एक साल के करीब थी, तो मेरी पत्नी फिर बीमार हो गई। इतनी कि उसे फिर दो साल हस्पताल मे रहना पडा। ठीक तो नही हुई थी, पर उसे फिर घर ले आए थे। और पिछले वष 1985 मे मई के महीने किसी ने कहा कि उसको जरूर कोई प्रेत-पकड है, जिसके लिए उस घाटा मैंहिन्दीपुर बाला जी के स्थान पर ले जाना चाहिए। वह राजस्थान का इलाका है। मैं दोनो बच्चियो को साथ लेकर अपनी पत्नी को वहा ले गया। वहा जा हमे अनुभव हुआ है, वह सारा बच्ची के मुह से सुनिए। क्योकि वह सारा इसी बच्ची के माध्यम से हुआ है उस समय तक यह बच्ची हमारे लिए एक साधारण बच्ची थी पर उसके बाद इसमें क्या कुछ जाग्रत हो गया है, चाहता हू यह अपने मुह से आपको बताए"

और बच्ची के साथ जो बातचीत हुई, वह इस तरह है—

कौमी एकता

वैसे तो आदि शक्ति के एक हज़ार नामो मे ब्रह्माण्ड का प्रत्येक पहलू समाया हुआ है, परन्तु पूरे भारत की 'एकता' का पहलू विशेष रूप से प्रदर्शित होता है। ताकि अलग-अलग प्रान्तो, जातियो और मज़हबो के लोग इसमे अपनी एकता को पहचान सकें। जैसे—भारत के सभी प्रान्तो की नदियो के नाम इसी आदि शक्ति के नाम हैं—गगा यमुना सरस्वती, गोदावरी, विपाशा, कावेरी, सूय, चन्द्रभागा कौशकी, गण्डका, शचि, नमदा, कमनाशा, वेतरवती, विवसत्ता आदि।

कोण, त्रिकोण वत्त आदि सारे आकार भी उसके ही नाम हैं। पाच तत्त्व भी उसके नाम, सब धातुए भी उसके नाम, साता रग, सातो स्वर और सारे अक्षर भी उसके नाम हैं।

चेतना तक और विज्ञान भी उसके ही नाम हैं, और चारो आश्रम चारो वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और अवण भी उसके ही नाम हैं। सारे मज़हब भी उसके ही नाम हैं।

उसके प्रत्येक नाम को पूजनीय मान कर, उसके एक हज़ार नामो को एक हज़ार बार आहुति दी जाती है।

एक दस्तावेज

मध्यप्रदेश की एक बारह साल की बच्ची का जिक्र मैंने श्री कैलाशपति जी से सुना हुआ था। और एक प्यारा-सा इत्तफाक हुआ कि वह बच्ची अपने पिता के साथ, रिश्तेदारो के घर किसी की शादी के सम्बन्ध मे दिल्ली आई, तो उसके पिता बच्ची को लेकर मुझे मिलने आ गए।

जैसे सुना हुआ था, बच्ची म उसी तरह की गम्भीरता देखी, जो उसकी उमर से बहुत बरस बडी है। उसके पिता कहने लगे—"मैं जाती तौर पर घरेलू वीरानगी का परेशान आदमी हू। व्यापार ठीक है, सरकार की ओर से गाजा और भाग का ठेका मिल जाता है, जो हर बरस नीलामी मे लेना होता है। 1963 मे मेरी शादी हुई थी। पत्नी के साथ रहने का मौका तकरीबन तीन महीने के लगभग मिला था, कि 1964 मे 24 अप्रैल को वह मकान की छत पर से गिर गई। जिसके साथ उसका दिमाग़ी तवाज़न हिल गया। और 1964 से 1970 तक उसको नफ़-सियाती मरीज़ो के हस्पताल मे बम्बई रखना पडा। मेरे उन वीरान वर्षों मे कई बार मेरी दूसरी शादी की पेशकश हुई, पर मन नही माना। मेरी मरीज़ पत्नी जब सात बरसा के बाद कुछ ठीक हुई, तो मैं उसे घर ले आया। हमारी यह बच्ची 28 जुलाई 1973 को पैदा हुई। फिर इससे छोटी एक और बच्ची 1977 मे हुई, पर जब वह एक साल के करीब थी, ता मेरी पत्नी फिर बीमार हो गई। इतनी कि उसे फिर दो साल हस्पताल मे रहना पडा। ठीक ता नही हुई थी, पर उसे फिर घर ले आए थे। और पिछले वप 1985 मे मई के महीने किसी ने कहा कि उसको ज़रूर कोई प्रेत-पकड है, जिसके लिए उस घाटा मैंहिन्दीपुर बाला जी के स्थान पर ले जाना चाहिए। वह राजस्थान का इलाका है। मैं दोनो बच्चियो को साथ लेकर अपनी पत्नी को वहा ले गया। वहा जो हमे अनुभव हुआ है, वह सारा बच्चो के मुह से सुनिए। क्योकि वह सारा इसी बच्ची के माध्यम से हुआ है

उस समय तक यह बच्ची हमारे लिए एक साधारण बच्ची थी, पर उसके बाद इसमे क्या कुछ जाग्रत हो गया है, चाहता हू यह अपने मुह से आपको बताए"

और बच्ची के साथ जो बातचीत हुई, वह इस तरह है—

कौमी एकता

वैसे तो आदि शक्ति के एक हजार नामो मे ब्रह्माण्ड का प्रत्येक पहलू समाया हुआ है, परन्तु पूरे भारत की 'एकता' का पहलू विशेष रूप से प्रदर्शित होता है। ताकि अलग-अलग प्रान्तो, जातियो और मजहबो के लोग इसमे अपनी एकता को पहचान सकें। जैसे—भारत के सभी प्रान्तो की नदियो के नाम इसी आदि शक्ति के नाम हैं—गगा, यमुना सरस्वती गोदावरी, विपाशा, कावेरी, सूय, चन्द्रभागा कौशकी, गण्डका, शचि, नमदा कमनाशा, वेतरवती, विवसत्ता आदि।

कोण, त्रिकोण, वृत्त आदि सारे आकार भी उसके ही नाम हैं। पांच तत्त्व भी उसके नाम, सब धातुए भी उसके नाम, सातो रग, सातो स्वर और सारे अक्षर भी उसके नाम हैं।

चेतना, तक और विज्ञान भी उसके ही नाम हैं, और चारो आश्रम चारो वर्ण—ब्राह्मण क्षत्री, वैश्य शूद्र और अवण भी उसके ही नाम हैं। सारे मजहब भी उसके ही नाम हैं।

उसके प्रत्येक नाम का पूजनीय मान कर, उसके एक हजार नामो को एक हजार बार आहुति दी जाती है।

एक दस्तावेज

मध्यप्रदेश की एक बारह साल की बच्ची का जिक्र मैंने श्री कैलाशपति जी से सुना हुआ था। और एक प्यारा सा इत्तफाक हुआ कि वह बच्ची अपने पिता के साथ, रिश्तेदारो के घर किसी की शादी के सम्बन्ध मे दिल्ली आई तो उसके पिता बच्ची को लेकर मुझे मिलने आ गए।

जैसे सुना हुआ था, बच्ची मे उसी तरह की गम्भीरता देखी, जो उसकी उमर से बहुत बरस बडी है। उसके पिता कहने लगे— 'मैं जाती तौर पर घरेलू वीरानगी का परेशान आदमी हू। व्यापार ठीक है सरकार की ओर से गाजा और भाग का ठेका मिल जाता है, जो हर बरस नीलामी मे लेना होता है। 1963 मे मेरी शादी हुई थी। पत्नी के साथ रहने का मौका तकरीबन तीन महीने के लगभग मिला था, कि 1964 मे 24 अप्रैल को वह मकान की छत पर से गिर गई। जिसके साथ उसका दिमाग़ी तवाज़न हिल गया। और 1964 से 1970 तक उसको नफ़सियाती मरीज़ो के हस्पताल मे बम्बई रखना पडा। मेरे उन वीरान वर्षों म कई बार मेरी दूसरी शादी की पेशकश हुई, पर मन नही माना। मेरी मरीज़ पत्नी जब सात बरसो के बाद कुछ ठीक हुई, तो मैं उसे घर ले आया। हमारी यह बच्ची 28 जुलाई 1973 को पैदा हुई। फिर इससे छोटी एक और बच्ची 1977 मे हुई, पर जब वह एक साल के करीब थी तो मेरी पत्नी फिर बीमार हो गई। इतनी कि उसे फिर दो साल हस्पताल मे रहना पडा। ठीक तो नही हुई थी, पर उसे फिर घर ले आए थे। और पिछले वर्ष 1985 मे मई के महीने किसी ने कहा कि उसको जरूर कोई प्रेत-पकड है जिसके लिए उसे घाटा मैंहिन्दीपुर बाला जी के स्थान पर ले जाना चाहिए। वह राजस्थान का इलाका है। मैं दोनो बच्चियो को साथ लेकर अपनी पत्नी को वहा ले गया। वहा जो हमे अनुभव हुआ है, वह सारा बच्ची के मुह से सुनिए। क्योकि वह सारा इसी बच्ची के माध्यम से हुआ है उस समय तक यह बच्ची हमारे लिए एक साधारण बच्ची थी, पर उसके बाद इसमे क्या कुछ जाग्रत हो गया है, चाहता हू यह अपने मुह से आपको बताए "

और बच्ची के साथ जो बातचीत हुई, वह इस तरह है—

? काव्य शर्मा बडा प्यारा नाम है सो काव्य ! वहा बाला जी के स्थान पर क्या हुआ था ?

काव्य वहा मगलवार और शनिवार को बहुत लोग आते हैं, हजारो लोग। कोई एक सौ धर्मशालाए हैं। हजार से ज्यादा लोग एक धर्मशाला मे रह सकते हैं। वहा हलवाई से सवा रुपये का प्रसाद लेकर बाला जी का चढाना होता है

? बाला जी से क्या मुराद है ?

का० वह हनुमान जी का स्थान है

? और प्रसाद मे लड्डू होते हैं ?

का० हा जी छ लड्डू बूदी के, साथ म घी का दीया, और साथ पताशे। यह सब कुछ एक दोने म होता है। बाला जी की मूर्ति के आगे हवन हो रहा होता है और पुजारी चुटकी भर बूदी उस हवन की आग मे डाल देता है। बाकी सब कुछ वह वापिस दे देता है, सिर्फ दो लड्डू अलग करके। जो मरीज ने खुद खाने होते हैं

? और बाकी ?

का० पास ही भैरो जी का मदिर है, वहा पत्थर का एक कुण्ड बना हुआ है, जहा हवन हो रहा होता है। उस प्रसाद मे से वहा भोग लगता है और वह दोना फिर वापिस दे दिया जाता है

? फिर ?

का० फिर वह दोना लेकर प्रेतराज सरकार के स्थान पर जाना होता है वह भी नजदीक पडता है

? प्रेतराज सरकार ?

का० वह यमराज का स्थान है, एक बहुत बडा पत्थर, जिसके ऊपर सिंदूर लगा हुआ होता है। उसमे दो आखें भी बनी हुई हैं, जो बडी चमकती हैं। शायद चादी की बनी हुई हैं। वहा हवन की अग्नि मे थोडा सा प्रसाद डालकर, बाकी बचा हुआ पिछली ओर की पहाडी पर फेंक दिया जाता है, जिसे पक्षी और कुत्ते खा जाते हैं वह न आप खाना होता है न किसी को देना होता है

? कोई पुजारी भी प्रसाद को मुह नही लगाता ?

का० नही ! पर यह साधारण पूजा होती है। जिन्होने अपने प्रेत निकलवाने होते हैं वे फिर अर्जी देते हैं।

? अर्जी किसको देते हैं ?

का० बाला जी को। पर वह अर्जी हलवाई तयार करते हैं, मरीज का नाम लिखकर। यह अर्जी सवा पचीस रुपय की होती है। उसम सवा किलो

लडडू होते हैं ? सवा किलो उबले हुए उडद, और तीसरी थाली मीठे चावलो की बनाई जाती है, घी और शक्कर डाल कर।

? और यह सारा कुछ भी किसी ने खाना नही होता ?

का० नही। पहली थाली हनुमान जी को चढती है, लडडुओ की, जिसमे से सिफ दो लडडू मरीज न खाने होते हैं। दूसरी थाली, उबले हुए उडद की भैरो जी को चढती है, और तीसरी थाली प्रेतराज जी को। पर फिर तीनो थालियो का सामान पहाडी की ओर फेंक दिया जाता है, और इसके बाद पेशी होती है

? पेशी, किसके आगे ?

का० मरीज का नाम बोला जाता है, और उसके अन्दर बाला जी के दूत आ जाते हैं। वही मरीज के अन्दर से प्रेतो को निकालते हैं। कई प्रेत तो अच्छे होते हैं, जल्दी निकल जाते हैं। पर कई बहुत खराब होते हैं, जिनको व दूत मार-मार कर निकालते हैं

? क्या यह दूत दिखाई देते हैं ?

का० नहीं। पर अपने अन्दर महसूस होते हैं। उनकी आवाज भी सुनाई देती है

? और वे जब प्रेतो को मारते हैं, वह चोट किसको लगती है ?

का० शरीर तो मरीज का ही होता है, पर शरीर को चोट नहीं लगती। महसूस होता है कि शरीर के अन्दर कोई किसी को मार रहा है

? पर मरीज तो तुम्हारी मा थी, तुम्हे यह सब कुछ किस तरह पता चला ?

का० मेरी मा बहुत ही कमजोर है। मुझे एक आवाज सुनाई दी थी कि अगर तू मा का दुख अपने ऊपर ले ले, तो दूत महाराज सब प्रेतो को निकाल देंगे। इसलिए मैंने मा का दुख अपने ऊपर ले लिया था

? तुमने बाला जी के दूतो की आवाज सुनी थी ?

का० हा जी, उन्होने बताया था कि इकतालीस प्रेत हैं, जो मा को दुखी कर रहे हैं

? वे प्रेत मा के अन्दर किस तरह आ गए ?

का० दूत महाराज ने बताया था कि किसी समय आपके घर के लोगो का पडोसियो से झगडा हो गया था। जब तुम्हारे घर के लोग मकान बनवा रहे थे, तो पडोसियो ने मुकद्दमा किया था कि उनकी जमीन का कुछ हिस्सा तुम्हारे मकान मे चला गया था इस पर पडोसियो ने काला जादू करने वाले एक बगाली को बुलाया था, और चौकी के साथ इकतालीस प्रेत बाध दिए थे

? दूत जी ने उस बगाली का नाम भी बताया था ?

का० हा जी, बताया था। उसका नाम दीपक था। और जिस जमादार से वह चौकी रखवाई थी, उसका नाम भी दूत महाराज ने बताया था कि वह किशोरा नाम का जमादार था।

? यह प्रेत किस तरह बाधे जाते हैं ?

का० मन्त्रशक्ति के साथ। फिर उनको भूखे प्यासे रखकर हुक्म दिया जाता है कि फला आदमी के अन्दर चले जाओ, और उसको दुख दो।

? य प्रेत क्या होते हैं ?

का० जो लोग कुदरती मौत नही मरते, उनकी आत्माए भटकती रहती हैं। वही लोग प्रेत-योनि मे पड जाते हैं

? काव्य ! तूने बाला जी के दूता की सूरत भी अपने अन्दर देखी थी ?

का० हा जी, देखी थी। उनके हाथो मे गदा होता है, पैरो मे खडाव। सिर पर बाल नही होत। और उन्होने गले मे पीले कपडे पहने होते हैं

? और, वे जब प्रेतो को निकालते हैं, मरीज को तकलीफ नही होती ?

का० कई मरीज दीवारो के साथ सिर पटकते हैं, जब प्रेत नही निकलते। कइयो का वे आग मे जला देत हैं पर मरीज के जिस्म को तकलीफ नही होती। न ही वह आग मे जलता है। सिफ उसको बाद मे बडी थकावट हो जाती है। आग की गरमी स कई बार उसका जिस्म काला सा हो जाता है, पर जलता नही।

? यह प्रेत कितनी देर म निकल जाते हैं ?

का० कइयो के बहुत जल्दी, दस पन्द्रह मिनटो मे ही। कइयो के घण्टो बाद, कइयो के कई दिनो के बाद।

? यह पता लगता है कि नही—कि वे प्रेत कौन थे ?

का० पूरा पता लगता है। दूत महाराज उनके नाम पूछते हैं, और वे बारी बारी से अपना नाम बताते हैं।

? पर यह सब कुछ सिफ मरीज को सुनाई देता है कि पास बैठे लोगो को भी ?

का० सबको सुनाई देता है। जब दूत महाराज बोलते हैं, तो मरीज की आवाज और तरह की हो जाती है। जब प्रेत जवाब देते हैं, तो मरीज की आवाज बदलकर और तरह की हो जाती है। बोलता मरीज है, पर उसकी आवाज बारी-बारी से बदल जाती हैं

? अब तेरी मा ठीक हैं ?

का० हा जी, बिल्कुल ठीक हैं, पर अभी भी बडी कमजोर हैं

? इसके इलावा तुझे और क्या अनुभव हुआ है ?

का० उसके बाद, 1985 के जून महीने से, मुझे अपनी नाभि में से संगीत सुनाई देने लगा है। जैसे, यहां कोई भजन कीर्तन कर रहा हो और साथ ही मैं जब आंखें बन्द करती हू, तो मुझे सामने एक प्रकाश दिखाई देता है यह रोशनी पहले नाभि में से उठती थी, फिर ऊपर आ गई, छाती मे, फिर गले मे, और अब नाक से कुछ ऊपर है

? शायद इसी को कुण्डलिनी का जागरण कहते हैं—

का० पता नहीं।

? अब भी कभी दूत जी दिखाई देते हैं?

का० जी हां! वह भी दिखाई देते हैं मेरे साथ बातें करते हैं, और कई बार मुझे मेवे, पिस्ता, बादाम आदि कई चीजें खिलाते हैं

? अन्दर-ही-अन्दर या बाहर हथेली पर रखकर?

का० अन्दर ही-अन्दर, पर मुह मे हर चीज का स्वाद आ जाता है। साथ ही भूख लगी हो तो भूख मिट जाती है।

? तुम स्कूल जाती हो या नही?

का० छठी पास कर ली है। आगे भी पढूगी। पर स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता। मेरे साथ की लडकियां मुझे बहुत ही छोटी लगती हैं।

? कभी बाला जी का दर्शन भी होता है?

का० हां जी, वह मेरे साथ बातें करते हैं। एक बार कहने लगे—तू अभी हंसा-खेला कर। जब सोलह-सत्रह साल की हो जाएगी तब मैं तुझे मन्त्र-शक्ति दूगा।

? उन्होंने कभी तुझे पूर्वजन्म की बात भी बताई है?

का० इतनी कुछ बताइ है कि मैं, पूर्वजन्म मे एक संन्यासिन थी। मैंने बडी साधना की थी, पर कही कोई गलती हो गई थी, जिसके कारण मुझे मोक्ष नहीं मिला, और फिर यह जन्म लेना पडा

? अभी तो तू बहुत छोटी बच्ची है, बहुत दूर के स्थान देखे नही होगे। पर नजदीक का कोई स्थान कभी ऐसा लगा है जो पहचाना सा महसूस हो?

का० जब भी किसी मन्दिर मे जाती हू महसूस होता है, यह मैंने पहले ही देखा हुआ है। *मैंने पिछले जन्म मे श्रीराम जी की साधना की थी,* इसलिए अब कई बार श्रीराम का दरबार दिखता है। सीता जी के दर्शन भी होते हैं, हनुमान जी के भी और कई बार मैं संस्कृत के श्लोक बोलने लग जाती हू, जो बाद मे याद नहीं रहते।

यह बातचीत थी कि मैंने काव्य के पिता श्री कृष्ण शर्मा से कहा—"जब यह बच्ची संस्कृत के या किसी भी और भाषा के श्लोक बोलती है, आप उसको टेप पर रिकार्ड कर लिया करें।"

मैं नही जानती कि यह बच्ची जब सोलह सत्रह वरस की होगी, तो इसके कहने के अनुसार इसको कोई मन्त्रशक्ति मिलेगी, तब इसकी क्या उपलब्धियां होगी, पर इसके आज के अनुभव को कलमबन्द कर रही हू कि शायद यह किसी खोज की बुनियाद वन सके।

बच्ची के जाने के बाद, मैंने उसके बारे मे बिना कुछ बताए उर्मिल शर्मा को टेलीफोन किया और बच्ची का जन्म-समय, तारीख और साल बता कर उसकी जन्मपत्री बनाने के लिए कहा। मन मे एक जिज्ञासा आई कि क्या जन्मपत्री से उसके इस अलौकिक अनुभव का कुछ रहस्य मिल सकता है या नही ?

बच्ची का जन्म मध्यप्रदेश के गुना जिले म 28 जुलाई, 1973 को रात के 9 बजकर 18 मिनट पर हुआ था। और उर्मिल शर्मा ने वापसी फोन करके मुझे कहा—' यह कौन बच्ची है, बडी विलक्षण आत्मा लगती है। कुम्भ लग्न की है और इसका लग्नेश शनि पचम स्थान पर है, चन्द्रमा और केतु के साथ बैठा हुआ। यह साधना का योग है। साथ ही यह स्पष्ट है कि इसको पूर्वजन्म से बहुत कुछ मिला है। शनि चन्द्रमा और केतु इकट्ठे हैं, वह भी पचम स्थान पर '

उर्मिल शर्मा ने जो कुछ कहा, वह भी इसीलिए दर्ज कर रही हू कि परा-शक्तियो के विज्ञान को एक दस्तावेज मिल सके।

काव्य शर्मा के साथ यह मेरी पहली मुलाकात जनवरी 1986 मे हुई थी। एक वर्ष के बाद जब यह बच्ची फिर मुझे मिलने आई तो मेरा तकाजा था कि वह अपने अनुभव अपनी कलम से मुझे लिखकर दे, ताकि आने वाले बरसो मे उसकी होने वाली किसी उपलब्धि का, यह पहला दस्तावेज सभाल कर रखा जा सके।

इस बच्ची के पास अभी अपने अनुभव कलमबन्द करने की योग्यता नही, पर उसने मेरा कहना मान लिया, उससे इन्कार नही किया। और अब जब मई 1988 मे उसने मुझे एक डायरी की सूरत मे, अपने अनुभव लिखकर दे दिए हैं, जिनमे उसके लगभग ढाई वर्ष की उमर से लेकर अब तक के अनुभव दर्ज किए हैं। यहा मैं उसकी डायरी मे से कुछ सतरें दर्ज करना चाहती हू—

' जब मैं ढाई वर्ष की थी—एक विचित्र सी स्मृति मेरे मस्तक मे उभरती और विलीन हो जाती—यह अक्सर होता जिन्हे देखकर मुझे भय लगता फिर खुली आखो से भी दिखता कि कई वृक्षो से घिरा हुआ एक बडा-सा खण्डहर है। बडी बडी दीवारें टूटी हुई हैं, जैसे कोई पुराना महल हो। सामने विशाल झील भी है पर घने पेडो के कारण अधेरा सा दिखता है। और हवा तेज गति से चल रही है यह दृश्य मैं हजारो बार देख चुकी हू। अब मुझे डर लगना बन्द हो गया है। अब शान्ति की अनुभूति होती है।

"मुझे लगता, जैसे मेरी पीठ मे रीढ की हड्डी मे कोई कीडा चल रहा है। मैं डरती, और घर मे मेरी दादी मेरी पीठ की मालिश कर देती, पर कोई अन्तर नही आता

"मुझे अलीगढ़, हाथरस के बीच कन्या गुरुकुल विद्यालय म डाल दिया गया। वहा मैं बहुत रोती और बीमार हो जाती। वहा सभी को सवेरे चार बजे जगा दिया जाता। जो बच्चे उठन मे आनाकानी करते उन्हे नल के नीचे खडा कर दिया जाता पन्द्रह अगस्त के उत्सव मे जब सब लडकिया शामिल होन को चली गईं और मैं बुखार के कारण नही जा सकी, तो मन बहुत अशान्त हो गया। मैं भगवान से प्रार्थना करने लगी, पहले तो मन नही लगा, फिर एक दृश्य मेरे सामने आ गया कि चारो ओर साफ आसमान है। और नीचे चारों ओर बर्फीले पहाड हैं। नीचे बहुत स वृक्ष हैं और हरी हरी दूब है वहां एक नदी बहती है और थोडा हटकर कितन ही तेजवान योगी और योगिनिया ध्यान म बैठे हैं। वही उनके बीच मे मैंन अपने को बैठा देखा, तो कुछ घबरा-सी गई। आखें बन्द-कर ली तो प्रतीत हुआ कि पीठ म कीडे के चलने की गति तीव्र हो गई है। फिर बद आखों म तेज प्रकाश उठता हुआ नजर आया

"गुरुकुल छोडना अचानक हुआ। मैं अपने पुराने स्कूल शिशु मन्दिर मे पढने लगी फिर बाबा जी के मन्दिर म जाना हुआ।

"14 15 जून की बात होगी, मैंन पापा की दुकान पर आकर बताया कि मुझे नाभि मे से आवाज आ रही है। जो मैं दो-तीन दिन से सुन रही थी। पापा न पूछा, कब और कैसी आवाज आती है? मैंने बताया—'सुबह और शाम स्पष्ट आती है, दोपहर को हल्की हो जाती है। पर ध्यान लगान पर स्पष्ट सुनाई देती है।' फिर पापा ने पूछा—कैसी आवाज आती है?' मैंने उन्हें बताया कि जैसे सुन्दर कीतन की धुन चल रही हो।' पापा जी ने कहा—'वह जो मन्दिर मे सुनती हो?' मैंने कहा—'नही! वैसी धुन तो कही भी सुनने मे नही आई' दूसरे दिन मेरे दुबारा कहने पर, और फिर अगले दिन भी मेरे कहने पर वो झुझलाकर कहने लगे—हम क्या करें? पेट में दद हो तो डाक्टर को दिखाए'

"एक दिन मैं लेटी हुई थी, तब मुझे ऐसा लगा कि नाभि मे से प्रकाश निकल रहा है, और रीढ़ की हड्डी मे कीडे की गति तेज हो गई है

"पापा को बताया कि नाभि मे से प्रकाश निकल रहा है। पापा को आश्चय हुआ। उनकी गांजे की दुकान है, और वहा साधु-सन्त आया करते हैं, और पापा जी उनसे सत्सग किया करते हैं। उन्होने कहा कि प्रकाश तो साधु-सतो को निकलता है। और वे मुझे ऊपर कमरे मे ले गए। मुझे पालथी मारने और आख बन्द करके ध्यान करने को कहा। मैंने पापा से कहा—'आप यही बैठ जाओ, मुझे डर लगता है'

"फिर मैंने ध्यान दिया तो मेरा सिर झूमने लगा। मैंने कहा—'बहुत चका चौंध लगती है, इसलिए सिर झूमता है।' पीछे से दानो हाथो से पापा जी ने मेरा सिर पकड लिया, और मैं ध्यान करती रही

"यह क्रम रोज चलता रहा। करीब आठ दिन बाद पाया कि प्रकाश बढ रहा है। पापा जी मुझे अशोक नगर श्री कैलाशपति जी के पास ले गए। उन्होंने मुझे सिद्धासन की क्रिया बताई। कमजोरी के कारण मे बैठकर ध्यान नही कर सकती थी, इसलिए लेटे-लेटे ही ध्यान करती रहती। और फिर आंखो के सामने कई रग दिखाई पडने लगे

' प्रकाश की गति बढ़ गई, और उसके अन्दर भी कुछ दिखा। मैंने पापा को कहा कि अन्दर एक मणि दिख रही है, बहुत सुन्दर है प्रकाश की गति कठ तक आ पहुची। शुरू म तो जब मैं पूजन करती तब सुन्दर सुन्दर श्लोक अचानक अन्दर से फूट पडते थे फिर उनका कोई शब्द ध्यान मे नही रहता था शिशु मन्दिर के आचार्य करोडीमल जी घर पर आते थे, हम लोगो को पढाने के लिए। उन्होंने एक बार वो सब लिखने की कोशिश की। मगर कुछ ही शब्द लिख पाए, और उन्हे आश्चर्य हुआ कि वे न ब्रह्मा के विषय मे थे, न वेद के थे, न गीता और रामायण के मैं सस्कृत के अलावा और भी कई भाषाए बोलने लगी यह क्रम पच्चीस छब्बीस दिन चलता रहा

"मेरा अशोक नगर जाना हुआ तो श्री कैलाशपति जी ने कहा—जब तुम कभी दिल्ली जाओ, तो अमृता जी से मिलना दिसम्बर के आखिरी दिनो मे राज भुआ की लडकी देवबाला की शादी आ गई। हम लोग दिल्ली गए तो चार जनवरी (1986) के दिन हम लोग उनसे मिलने गए। पता चला कि वो आज-कल केरल गई हुई हैं। हम लोग मेंहदी पुर चाचा से मिलने चले गए। फिर 11 जनवरी को दिल्ली आए, और उनसे (अमृता जी से) मिलने गए। पहले तो मैं मन मे डर रही थी, फिर भ्रम दूर हो गया। मुझे उनसे मिलकर बहुत ज्यादा खुशी हुई। उन्होंने फिर दूसरे दिन बुलाया। और कितने ही प्रश्न करती रहीं। मुझे पहली बार किसी को अपनी अनुभूतिया बताने का मौका मिला '

इस लम्बी डायरी मे काव्य बच्ची का वो अनुभव भी दर्ज है जो चन्देरी पहाड पर पनखुआ गुफा म उसे हुआ। वहा एक वृद्ध साधु रहते हैं जहां यह बच्ची अपने चाचा रविन्द्र के साथ गई थी।

मुगावली से दस मील दूर मलहार गढ नाम के गाव मे हर बरस मानस-सम्मेलन होता है। कई विद्वान इकट्ठे होते हैं। वहा यह बच्ची अपने परिवार सहित गई थी, जहा चित्रकूट से आए श्री रामभट दास जी के साथ बच्ची की मुलाकात हुई

श्री रामभट दास जी को राष्ट्रपति से स्वर्णपदक मिला है। कहते

हैं—इस जन्म मे उन्हें आखें नसीब नही हुई, पर अन्तरदृष्टि नसीब हुई है। उस मुलाकात का ब्यौरा बच्ची के लफ्ज़ों मे इस प्रकार है—

" उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा, और कहा—'बेटी, तुम इतने दिन कहा थी ? तुम मुझे पांच सौ वर्ष के बाद मिली हो। मुझे कब स तुम्हारी तलाश थी। मुझे आज ऐसा लगता है, कि मुझे नेत्र मिल गए हैं।'

" उन्होंने मुझे कई बार ज़ोर देकर कहा—'तुम याद करो, तुम्हें सब कुछ याद आएगा फिर जो कुछ मुझे याद आया, वो बताना असम्भव है

" उन्होंने मुझे अपने हाथ से खिलाया, और फिर झुककर टटोलते हुए मेरे पैर छू लिए। मैंने भी उनके चरण स्पर्श किए उनकी आंखो से आसू बह रहे थे, उन्होंने कहा—'मुझे तुम्हारी तलाश थी '

" उन्होंने मुझे खाने को एक लौंग दिया। उसके बाद जब मैं रात को सोई तो बहुत ही अद्भुत चीज़ें दिखी, जिससे पता चलता था कि मेरी मुलाकात सचमुच पाच सौ वर्ष के बाद हुई है। "

यह बच्ची इस समय 15 साल की है। इसको किसी बहुत बडी उपलब्धियो का समय, इसकी उमर के सत्रहवें बरस मे बताया जाता है।

यह आज तक का दस्तावेज़, शायद एक कीमती दस्तावेज़ बन जाए, इसी नज़रिए से मैंने यह कलमबन्द किया है। इस बच्ची के हाथो की लिखी हुई डायरी मेरे पास वक्त की अमानत है। 20 मई 1988

नोट—

यह दस्तावेज़ एक और पहलू से, एक खोज के हवाले है कि देवताओ के आगे 'अर्ज़ी' देने की रिवायत कब से चलती आ रही है ? इसकी बुनियादी सूरत क्या थी ? क्या यह प्रथा, भारत से बाहर देशो मे गई, या बाहर देशो स भारत मे आई ?

मेरे सामने न्यूयार्क और लदन मे छपी हुई किताब 'अनएक्सप्लड है, जिसके सफा 807 पर ठीक इसी सिलसिले मे इस लफ्ज़ 'अर्ज़ी का इस्तेमाल किया हुआ है। प्राचीन मिस्र की बात करते लिखा हुआ है—"लोग सिद्धो, देवताओ से सलाह मशवरा करते थे। आज किसी इल्म वाले से अपनी जिन्दगी की पेशीन-गोई सुनना या पूछना, इसी प्राचीन रिवायत का बडा कमज़ोर पहलू है। इसी तरह सपनो की ताबीर पूछने का समय आया था। प्राचीन काल मे लोगो ने देवताओ से सलाह मशवरा करने की एक सूरत यह निकाली थी कि वह एक रात मन्दिर के बरामदे मे गुज़ारते थे। उस समय एक तरकीब अमल मे लायी जाती

थी, कि जिस किसी न देवताओ से सलाह मशवरा लेना होता था, वह एक कागज पर अर्ज़ी लिखता था, और जिस स्याही से लिखता था, उसमे मफेद बतख का खून मिलाया जाता था। फिर अपने बायें हाथ पर उस देवता की आकृति बना कर, अर्ज़ी वाले कागज़ का वह टुकडा, मुटठी मे लेकर, उस हाथ को काले कपडे मे लपेट लेता था, और मन्दिर के बरामदे मे सो जाता था। इसी अर्ज़ी के जवाब मे उसको सपना आता था, जिसमे देवता के साथ सीधी मुलाकात होती थी।"

कर बिसमिल्ला खोल दी मैंने चालीस गाठें

कई दिन मेरा एक सपना एक नुकते की ओर इशारा करता रहा। उसका पहलू कई तरह से बदल जाता था, लेकिन मरकज नही बदलता था। यहां तक कि कई बार एक ही रात मे अहसास होता कि यह सपना मुझे कई रातो से आ रहा है

सपन मे, सपने से जागन का अहसास भी होता, और उस सपने की तशरीह करने का भी अहसास होता। मेरे अपने ही बोल मेरे कानो मे सुनाई देते, जब मैं किसी-न किसी स कह रही होती कि जिस तरह इनसान कदम-कदम चलता हुआ किसी मजिल पर पहुचता है, जिस तरह धीरे धीरे तालीम हासिल करता हुआ, वह किसी विनान की नब्ज पर हाथ रख लेता है, उसी तरह हर इनसान की आत्मा न चालीस डिगरी पर पहुचना होता है

चालीस डिगरी पर पहुचकर मन मस्तक को किस तरह की रोशनी मिलनी होती है, उसका अहसास भी मुझे सपन मे होता था, लेकिन चालीस अक का राज क्या है, यह मेरे चेतन मन की पकड म नही आता था।

कई दिनों क बाद—अचानक एक सतर मेरे होठो पर तैरने लग पडी, जिसे मैं कोई पचास बार लय की एक मस्ती मे दोहराती रही। लेकिन उसे किसी तरह से भी मैंन अपने सपने के साथ नही जोडा, कि अचानक एक दिन ऐसा आया कि मन-मस्तक मे एक बिजली-सी कौंध गई।

वह सतर, जो कोई पचास बार मैं अचेत ही दोहराती रही थी, वह हमारे सूफी शायर बुल्लेशाह के कलाम की एक सतर थी—'कर बिसमिल्ला खोलिया मैं चाली गढढा" और फिर जो एक दिन के लिए मस्तक म एक बिजली सी कौंध गई वह इस सतर को मेरे सपन की आत्मा के साथ जोड गई।

खुदाया! क्या यही चालीस गाठे हैं जो हर मजहब ने अपने-अपने फितरी पहलू से अपनी-अपनी साधना स खोलनी होती हैं। उसके बाद अपना रूहानी दीदार पाना होता है।

जिन इल्मवालो न सिद्धिया हासिल की होती हैं, मैं उनसे मिली, और चालीस

नम्बर का राज जानना चाहा। वे मुझे सिद्धि हासिल करने का हर एक ब्योरा तो बता सके, पर यह राज उनकी जानकारी म भी नही था, कि इस तरह की किसी रूहानी प्राप्ति के लिए यह अवधि क्यो निश्चित की गई है, और इस अक की बुनियाद क्या है।

यह अवधि—सिर्फ देवी-देवताओ की साधना के लिए ही मुकरर नहीं होती, कुरान की किसी आयत के नम्बर गिनकर, उन्नीस मतबा उस कलाम को चालीस दिनो मे पढते हैं, और इल्मेजफर हासिल करते हैं।

यह चालीस अक, समाज का भी अचेत अग बना हुआ है। मृतक के भी चालीस दिन माने जाते हैं। और बच्चे को जन्म देने के बाद जो औरत मा बनती है, वह बडे सगुनो के साथ चालीसा नहाती है।

लेकिन विल्सन ने जिस थॅयब्रिज का जिक्र किया है कि जमीनदोज धातुओ *का पता लगाते हुए कि कितनी ईंटों के फासले से उसका पेंडूलम किस धातु का* पता देता है, उसने जाना कि चालीस ईंटो के फासले से एक उस सतह का पता चलता है, जो हमारी दिखाई देती दुनिया से ऊपर की सतह है।

लगा—इस ऊपर की सतह का राज हमारे पीरो-पैगम्बरो ने जरूर प्राप्त किया होगा, इसलिए इनसान की मानसिक अवस्था को उस सतह पर ले जाने के लिए, चालीस दिनो की साधना की अवधि मुकर्रर की होगी।

यकीनन ये चालीस पडाव होंगे, जो रूहानी इल्म को पाने के लिए उस रास्ते के मुसाफिर ने पार करने होंगे। और उन्होंने ही चालीस गाठें कहकर मन की ऊची अवस्था पर पहुचने का राज नुमाया करते हुए, बुल्लेशाह न लिखा था—'कर बिसमिल्ला खोल दीं मैंने चालीस गाठें '

याद आया कि कीरो ने किसी किताब मे अकविद्या की बात करते हुए, रूहानी अको की बात भी की है। मैंने वह किताब ढूढी, जिसमे इस चालीस अक *की तशरीह दी हुई है।*

अक तीस की तशरीह करते हुए कीरो लिखता है— This is a number of thoughtful deduction retrospection and mental superiority over one s fellows, but as it seems to belong complitely to the mental plane the person it represents, are likely to put all material things on one side not because they have to but because they wish to do so It depends on the mental outlook of the person it represents It can be all powerful but it is just as often indifferent according to the will or desire of the person

और आगे अक इक्तीस के बारे मे कीरो लिखता है—"The number is very similar to the receding one, except that the person it re-

presents is even more self contained, lonly and isolated from his fellows "

और अक चालीस के बारे मे कीरो कहता है—"It has the same meaning as to number thirty one "

ओ खुदाया ! यह तो इनसान की अन्तर्मुखी यात्रा थी, हर बधन से मुक्ति थी, किसी अनन्त का जलवा था, लेकिन हम, जो अपने-अपने मजहब के पैरोकार हैं, हम तो तुअस्सब की गांठों को और भी भींचते चले जाते हैं।

आज हर मजहब के नाम पर हमारे हाथ इनसान के लहू मे भीगे हुए हैं, और हम जब लहू से भीगे हाथो के साथ अपने-अपन मजहब की प्राथना करते हैं, सजदा करते हैं, तो पता नही किस किस तरह के दाग़ हम अपने-अपने मजहब के माथे पर लगा देते हैं।

निश्चय ही यही मेरे सपने का रहस्यमय सकेत था, आज की हालत की ओर, जहा—

जब लोहा सान पर चढ़ता है
लोगों के दांत और तीखे हो जाते हैं
और मोहब्बत के होंठ बद हो जाते हैं
सुर्ख लहू की नाड़ियों को—
काले नागों का जहर चढ़ता है
और सुर्ख लहू नीला पड़ जाता है
किसी के होंठ जो चूमने के काबिल थे
वही होंठ जहर से भर जाते हैं

और जरूर, यही उसका पैगाम था, हर मजहब की यात्रा की ओर, जिसने चालीस अवस्थाए पार करनी होती हैं, और आज वह एक ही जगह खड़ा, हैरान हो, अपने पैरोकारो के मुह की ओर देख रहा है

यही मेरे मन की जुस्तजू थी—कि फिर तारो के इल्म से उसका सकेत मिला कि 360 डिगरी की काल गिनती को जब बारह हिस्सो मे तकसीम किया जाता है, तो करीब-करीब सवा दो नक्षत्र होते हैं, जो हर हिस्से की राशि पर प्रभाव शाली होते हैं। और उन 27 नक्षत्रों की 12 राशिया मे जोड़ की गिनती 29 अक है, उसी का 40वा अक उनके राज को नुमाया करता है, यानी—39 अको के सुख-दुख को झेलने के बाद यह 40वा अक होता है, जो स्व की पहचान देता है।

मानसिक गुलामी की सचमुच ही चालीस गाठें होती हैं, जिस कट्टरपन को अगर इनसान अपने पोरा से खोल ले, तो मन की उस अवस्था पर पहुच जाता है,

जहां बुल्लेशाह पहुंचा था । और अनन्त शक्ति मे अपनी लीनता की ओर उसने इशारा करते हुए कहा था—'कर बिसमिल्ला खोल दी मैंने चालीस गांठें'

खुदाया ! यह तो इश्क की इन्तिहा है, लेकिन हम इसकी इब्तदा कब करेंगे ? जब हमारे मुह से निकलेगा—'बिसमिल्ला !' और, हमारे हर मजहब के हाथ उन गांठो की ओर देखने लग पड़ेंगे, जिन्हें हमने, सभी पैरोकारों ने, एक एक कर अपने पोरो के साथ खोलना है ।

नहीं जानती कि यह मेरा सपना कब सच होगा !

कुछ हरे पत्तो की बात

बचपन शायरी का गाव होता है जहा उसके नगे पैरो से मिट्टी का रिश्ता कायम होता है।

जवानी शायरी का महानगर है, जहां कोई और तो क्या, खुदा भी उसे अपना रकीब लगता है।

और बुढापा शायरी का आश्रम है, जहा वह सहज मन फूल सी खिलती है, चदन सी महकती है और दिए-सी जलती है।

सोचती हू, कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो केवल आश्रम मे बैठ कर ही की जा सकती हैं। आज इसी आश्रम मे बैठकर आपको एक वाकया सुनाती हू।

11 दिसम्बर, 1985 की रात थी, जब मैंने सपने मे एक किताब देखी—खुली पडी हुई और उसके जो पृष्ठ सामने थे, पढने लगी। बाईं ओर के पृष्ठ पर लिखा था—'उसे महसूस हुआ कि उसके दिल के गोशे मे एक मोटी दीवार है जहा से कुरान की आयतें निकलती हैं।'

और सपने मे ही मुझे एहसास हुआ कि यह सब मेरा लिखा हुआ है, मेरी अपनी दास्तान है, और मैं इमरोज को आवाज देकर पास बुलाती हू, वही पक्ति सुनाती हू और कहती हू—"देखो, यह किताब मैंने पूवजन्म मे लिखी थी।"

इतना कहा था और खुली हुई किताब से कुछ और पढने को थी कि नींद टूट गई।

यह सपना था कि मुझे अपने बचपन का एक वह वाकया याद हो आया, जो पहले कभी नही आया। इसीलिए जब आप बीती लिखी थी—'रसीदी टिकट' तो उस वाकया को कहीं दर्ज नहीं किया था।

मेरे पिता बरसो से प्राचीन ग्रथो की खोज मे लगे हुए थे और उसी सिल-सिले मे घर के सबसे बडे कमरे मे कई हस्तलिखित प्रतियां पडी हुई थी। एक दिन मैं उस कमरे मे गई लेकिन मेरे सिर पर पल्लू नहीं था और यह बात मेरे पिता की नजर मे उन ग्रन्थो का अपमान था। इससे उन्होंने मुझे जोर से एक चपत लगाई थी और मैं कहीं भीतर तक तडप उठी थी। नही जानती, उस वक्त

भीतर कौन-सी चीज थी, कौन सी याद्दाश्त, जो मेरे होठो पर एक चीख बन गई थी और मैंने पिता से कहा था—"जिन किताबो के लिए आपने मुझे मारा है, ऐसी किताबें मैं खुद लिख सकती हू, मैंने लिखी थीं।"

अब यह वाक्या याद आया तो खुद की हैरानी मैं खुद ही नहीं झेल पा रही थी। क्या अब जो किताब मैंने सपने म देखी है और जिसे देखकर सपन म कहा—देखो इमरोज, मैंने यह किताब पूर्वजन्म मे लिखी थी—तो क्या इस सपने का तार कही साठ साल पीछे उस वाक्ये से जुडा हुआ है, जब अचानक मेरे, बच्ची-सी के मुह से निकला था, ऐसी किताबें मैं खुद लिख सकती हू, मैंने लिखी थीं

ये सपने, ये सस्मरण कभी-कभी उन हरे पत्तो की सूरत मे दिखाई देते हैं, जो अचानक मन की मिट्टी म से उग आए दिखते हैं।

आज जब अपने आसपास साहित्यकारो के अहकार की इतनी बडी प्रदर्शनी देखती हू तो एक उदासीनता से लिपटी हुई मैं हैरान-सी रह जाती हूं

मेरी नजर म—जन्म-जन्म की साधना से भी अगर किसी ज्ञान को पाया जा सकता है तो वह ज्ञान का कणमात्र होता है

और इसी उदासीनता म से इसी साल का एक वाक्या याद हो आया है, जब कविराज गोपीनाथ जी की स्मृति मे दिल्ली मे एक व्याख्यानमाला शुरू की गई तो पहले व्याख्यान के लिए राजस्थान से श्री गोविन्द शास्त्री जी को बुलाया गया। *वह तन्त्र विद्या के ज्ञाता हैं, लेकिन मैं न तो तन्त्र विद्या के बारे मे कुछ जानती हू और* न ही गोविंद शास्त्री जी से कभी मुलाकात ही हुई थी, लेकिन जब उस समागम मे मुझे उनका स्वागत करने के लिए कहा गया तो उनकी कुछ किताबो के आधार पर मैंने एक जिज्ञासु के तौर पर कहा—"मैं समझती हू कि आज का दिन हमारी सबकी यात्रा म बहुत अहमियत रखता है, हमारी चममय आखो के लिए, हमारे स्थूल के लिए इनका दीदार, जिन्होंने सूक्ष्म का दर्शन पाया है"

और कुछ दिनो बाद मैंने गोविंद शास्त्री जी से वक्त मागा तो एक दिन वे मेरे यहा आए, पूरी दोपहर बातें करते रहे और जब जाने लगे तो मैंने अपनी एक किताब उन्हें अर्पित करते हुए उसम एक सौ रुपए का नोट आहिस्ता से रख दिया। वह नोट उन्होंने देख लिया और उसे हाथ म लिए कहने लगे—"इस नोट पर अपने दस्तखत कर दें, सभालकर रखूगा,' और हस दिए—"कई बार आपकी कहानिया पढीं, कई बार खयाल आया कि कभी मिलना होगा, अब यह नोट आज की मुलाकात का साक्षी रहेगा" आखें भर आइ, लगा यह सहजता और यह *अभिमानशून्यता सिर्फ उन्हे नसीब होती है, जिन्होंने ज्ञान के किसी कण को अपने* भीतर गहरे मे उतार लिया हो। मुझे आज श्री एल० एम० सिघवी की वह नज्म याद आई है जो अपने अनुज को सबोधित है—मैं तुम्हें अतिम सत्य का प्रकाश नहीं दे सकता वत्स! क्योंकि मेरे पास वह प्रकाश नहीं है। मुझे भी उसकी

खोज है मैं साधना के रास्ते पर चला हू। किसी साधना को सिद्धि बताकर कसे बाटू ?

और इस नज्म मे एक गुरु, प्रकाश की यात्रा मे अपने अनुज का सखा, सहचर और सहयोगी होकर उसके साथ चल देता है, और जब आहिस्ता से कहता है—'गुरु गोविंद से बडा नहीं होता,' तो यही रहस्य 'गुरु मत्र' के रूप मे पत्ती-पत्ती खिल उठता है।

कहना चाहती हू कि जो कुछ मैंने इस जन्म मे लिखा या किसी पहले जन्म मे भी लिखा था, वह मेरी एक साधना है और साधना को सिद्धि मान कर मैं नही बाट सकती।

रजनीश-चेतना

चैकोस्लोवाकिया के एक लेखक हुए हैं, काल-चेपाक जिन्होने जो कुछ लिखा था, बाहरी घटनाओ के आधार पर नहीं, इसान के अन्तर मे उतर कर लिखा था। और जब मैं कुछ दिनो के लिए चैकोस्लोवाकिया गई थी, तो उनका एक अफसाना ऐसा था जो मेरा हाथ पकड कर मुझे वहा ले गया, उनके उस मकान मे, जो आज तक उनकी याद मे सभाल कर रखा गया है

वोह अफसाना है—आखिरी फैसला। उसम कगलर नाम का एक 'मुजरिम' जब मरने के बाद दूसरी दुनिया की अदालत मे पेश किया जाता है, तो उसने जिन्दगी में जो जो कुछ किया था उसका ब्यौरा उसके सामने रखा जाता है। ब्यौरा सही है वोह इनकार नहीं करता। लेकिन वो सब कुछ क्यो हुआ, जब वोह इसकी तफसील देना चाहता है, तो उसकी सुनवाई नहीं होती। ब्यौरे की तस्दीक के लिए एक गवाह को तलब किया जाता है, और कगलर देखता रह जाता है कि जो अजीबोगरीब व्यक्ति वहा गवाही देने के लिए आता है, उसके नीले से चोगे मे आसमान के सितारे जडे हुए हैं, और उसके चेहरे पर कोई इलाही नूर है कि वहां के मुनसफ भी उसके स्वागत मे एक बार खडे हो जाते हैं, और फिर उस इलाही व्यक्ति वो गवाह के कटघरे मे खडा करते हैं, और कहते हैं—'यह मुकदमा बहुत उलझा हुआ है। हालाकि जो भी हादसे इस व्यक्ति के हाथो हुए उनमे किसी सदेह की गुजाइश नही है लेकिन यह व्यक्ति बार-बार कहे जाता है कि वो बेगुनाह है। इसलिए खुदावद ! एक तुम हो जो परम सत्य हो, इसलिए तुम्हें बुलाया गया—गवाही देने के लिए '

और वो गवाह कहना शुरू करता है—'यह कगलर अपनी मां को इतना प्यार करता था कि उसे किसी तरह व्यक्त नहीं कर पाता था। इसीलिए यह बचपन से इतना जिद्दी हो गया कि मां पर जब भी कोई ज्यादती की जाती, यह बाप से उलझ जाता था। इतना कि यह छोटा-सा बच्चा होने के कारण जब एक बेबसी महसूस करता तो अपने दांतो से बापकी अगुलियों को काट खाता '

, तीनों मुनसफ गवाह को टोक देते हैं—कहते हैं—खुदावद, यह मां से इतना

प्रामेथियस की तरह देवताओ के घर से आग को लाकर, इसान को यह अग्नि-चितन दे दिया है। जिससे इसान न अपनी चेतना के बुझे हुए चिराग को जलाना है। अगर कोई घर के चिराग से घर को जला ले, तो इसमे प्रामेथियस का दोष नही है।

मैं आज के प्रामेथियस की दी हुई इस आग को रजनीश चेतना कहना चाहती हू, जिससे देह के मन्दिर मे आत्मा का दीया जल सकता है।

□□

एक ऐतिहासिक हवाला

एक ऐतिहासिक वाकया है कि विक्रमी सवत् 1997 मे, राजस्थान मे भयकर अकाल पडा था । उस समय जोधपुर राज्य के राजा उमेद सिंह ने अपना खजाना खोल दिया था, और कहा था—मेरे राज्य में कोई इन्सान भूखा नहीं मरेगा—और वह राजा समकालीन प्रजा के मन-मस्तिष्क पर अकित हो गया था

कुछ और समय के अन्तर से जोधपुर के नागौर इलाके मे फढ़ौद ग्राम की एक निराश हुई मा को एक रात सपने मे अम्बर के राजा इन्द्र का दरबार दिखाई दिया, जहा वह राजा इन्द्र के सामने बिलख उठी—"मैंने इस अपनी कोख मे दस पुत्रो को जन्म दिया । और वह मुझे दिखाई देकर चले गए । जो भी पैदा होता था, वह अभी आखें ही खोलता था कि फिर हमेशा के लिए आखें बन्द कर लेता था । राजा इन्द्र ! मुझे एक पुत्र तो जीवित रहने योग्य दे दो, जो मेरी गोदी मे खेले ।"

और वह मा बताती है कि उसके सपने मे राजा इन्द्र ने अपने दरबार मे बैठे लोगो की ओर इशारा करके कहा—"तू इनमे से किसी का चुनाव कर ले जिसको तू चुन लेगी वही तेरी कोख से जन्म ले लेगा ।"

और वह मा बताती है कि उसने जब बारी-बारी से सब की ओर देखा, उस समय उसे एक चेहरा बडा ही अच्छा लगा । अच्छा भी और पहचाना हुआ भी । वह जोधपुर के राजा उमेद सिंह का चेहरा था । जब उसने उसकी ओर इशारा किया, तो राजा इन्द्र ने कहा—' अच्छा ! मैंने यही अपना अजीज तुझे पुत्र की सूरत मे दिया । पर एक बात याद रखना—जब तेरे यहा पुत्र पैदा होगा, उसे चौबीस घन्टे के अन्दर-अन्दर वनजारो की गोदी मे डाल देना, नही तो तुम्हारी गोदी मे पुत्र नहीं खेलेगा । जब वह एक बरस का हो जाएगा तो वनजारो को दी हुई अपनी अमानत घर ले आना, पर उसके वजन का नमक तोलकर वनजारो के पल्लू मे जरूर डाल देना ।'

और यह सपना सच हुआ । उस मा ने और उस बाप ने वनजारो को समय काल बता दिया, और जब उनके घर पुत्र का जन्म हुआ, चौबीस घन्टे के अन्दर-

प्यार करता था, हमें इसकी गवाही नहीं चाहिए, हमें तो यह बताओ कि इसने पहला जुर्म किसी के बाग से फूल तोड़ने का किया था या नहीं ?

गवाह मुस्करा देता है, कहता है—वोह फूल तो इसने एक इरमा नाम की प्यारी-सी लड़की को देने के लिए तोड़े थे। वो इसे बेहद अच्छी लगती थी वो इसके दिल मे प्राणो की तरह बस गई थी

कगलर जल्दी से पूछता है—खुदावद ! इरमा कहां चली गई, यही तो मुझे कभी पता नहीं चल सका

खुदा बताता है—तुम तो गरीब थे, इसलिए इरमा का विवाह मिल मालिक के लड़के से कर दिया गया, जिसे गुप्त रोग था, और इसी वजह से जब इरमा का हमल गिर गया तो वह भी बच नहीं सकी, मर गई थी

अदालत के मुनसफ खुदा को फिर टोक देते हैं—हम यह सब तफसील नहीं चाहिए—हम यह बताइये कि कगलर कब से शराब पीने लगा और बुरी संगत म पड गया ?

खुदा फिर मुस्करा देता है—कहता है—इसका एक दोस्त था, जो जलसेना मे भरती हो गया, और समुद्र की दुघटना मे उसका जहाज डूब गया, और वो मर गया। और यह हताश होकर गलत लोगो की सगत मे पड गया, और गारी बल नाम के एक शराबी के घर आने-जाने लगा। उसकी एक बेटी थी, मेरी, जिससे यह प्यार करने लगा। लेकिन मेरी को पैसा कमाने के लिए उसके बाप न एक ऐसी जलील जिन्दगी मे डाल दिया था कि वो जवानी मे ही मर गई, और मरत हुए उसका ही नाम लेकर पुकारती रही

मुनसफ लोग खीझ से उठते हैं—कहते हैं—इन वाकयात का मुकदमे से कोई ताल्लुक नहीं खुदावद करीम ! हमे यह बताइये कि इसने कितने कत्ल किये ?

ईश्वर कहता है—शहर मे जब दगा हुआ तो इसके हाथो पहला कत्ल हुआ था। इसने जान-बूझकर नहीं किया था, पर इसके हाथो हुआ था। फिर जब इसे जेल म डाल दिया गया और वहां इसे यातनाए दी गइ तो इसके मन मे वो दुख ऐसा पकने लगा कि जेल से छूटने पर जब इसने एक लडकी से मुहब्बत की, और वो बेवफा साबित हुई तो इसने उस लडकी का कत्ल कर दिया।

और इस तरह काल चेपाक की कहानी, हर घटना की गहराई मे उतरती चली जाती है, और जब वो मुनसफ अपना फैसला लिखने के लिए एक अलग कमरे मे जाते हैं, तो कगलर खुदा से पूछता है—खुदावद ! यह क्या हो रहा है ? मैंने तो समझा था कि इस दूसरी दुनिया म आप खुद मुनसफ होंगे और खुद फैसला सुनाएगे। लेकिन यहां भी

उस वक्त खुदा की मुस्कराहट गमगीन हो जाती है और वो कहता है—

बदर उस बनजारों की गोदी में डाल दिया
वह बच्चा जो एक बरस बनजारों के कबीले में भी पला था, और जिसके बजन या नमक लेकर बनजारों ने वह मां को वापिस दे दिया था, आज वही बच्चा हिन्दुस्तान का माना हुआ एक बुततराश है—पुष्प राज बेताला।
पुष्प राज ने तैल चित्रों की बाटिक की, फोटो व मिकल पेंटिंग्स की और बुत तराशी की कई प्रदर्शनियां दिल्ली, बम्बई, अहमदाबाद, लखनऊ और हैदराबाद में हो चुकी हैं। अभी हाल ही में इस बुततराश की बुततराशी का एक आला नमूना अमेरिका में हो रहे 'भारतीय मेले' में भी शामिल था।
इसके इलावा यह कलाकार हवाई जहाज की सिखलाई का इन्स्ट्रक्टर भी रहा था। (ऐवीऐशन फलाइग इन्स्ट्रक्टर) और उस दौरान आज के प्रधान मन्त्री राजीव गांधी को भी हवाई उड़ान की सिखलाई देता रहा था
इसके इलावा—इस कलाकार के पास कोई दैवी शक्ति है, जमीन के अन्दर
f ...गों और रत्नों की जानकारी प्राप्त कर लेने की। मैं जानती थी कि एक
सर्वे वाले उनको हवाई जहाज म ले गए थे—देश के हिस्सों में से
के लिए—पर अब जब मैं कोलिन विल्सन की किताब लैंपबरिज
बारे में पढ़ रही थी, तो उनके अक्षरों के अर्थ और भी गहरे
राज जी को मिली। मैंने पूछा—कुछ विस्तार से बताइए
क्या ...कहने लगे—जैसे किसी दीवार के दूसरी ओर
सूंघ लेता है कि दीवार के उस पार रजनी-
कुछ उसी तरह है, पर इसका किसी गंध
आवाज से है। इसका सम्बन्ध अन्तर से
कोई भी नाम नहीं दिया जा सकता।
पर मन अटक जाता है तो जमीनदोज
...ी है
वारदातें सुनाईं। जिनमें से एक यह
गिल्ला खेड़ा ग्राम का गांव है, जहां
मंत्र के कहने पर उन्होंने गांव के बाहर
से जांच की, और फिर एक स्थान पर
काल की कई वस्तुएं उस धरती के अन्दर
दे दी, और उस महकमे ने खुदाई द्वारा
हिफाजत में रखा हुआ है
बार हवाई जहाज में बैठे हुए, उनका
जहाज में से गिर गए हैं, और नीचे
ही यह भी देखा कि वहां समुद्र के पानी

फैसला सिर्फ वो लोग दे सकते हैं, जो अधूरा सच जानते हैं। मैं तो सच जानता हू। और पूरा सच जानने वाला इस तरह फैसले नही देता

हमारी दुनिया मे—हर मजहब के नाम पर जाने खुदा कितने फैसले रोज सुनाये जाते हैं। इसान को बुनियादी तौर पर एक गुनाहगार करार देने वाले फलसफे हमारे चारो ओर बिखरे हुए हैं। और इन अधूरा सच जानने वालो ने सदियो से एक कयामत ला रखी है कि इसान की आखें आसुओ से भरी हुई हैं, उसके होठ पश्चात्ताप के अक्षरो से कापते हैं, और उसके हाथ मे मुआफी-नामा के सिवा कुछ नही दिखाई देता

अपनी दुनिया की इसी हकीकत की रोशनी मे एक बार मैंने तडप कर लिखा था

मैं कोठरी दर कोठरी
रोज सूरज को जन्म देती हू
और रोज मेरा सूरज यतीम होता है

लेकिन इस दर्द की जान कितनी शिद्दत होगी कि नदी के दूसरे किनारे जब किसी मासूम आदमी को कोडा से पीटा जा रहा था तो कहते हैं कि उस किनारे की ओर जाते हुए श्री रामकृष्ण की पीठ पर कोडो के निशान उभर आये थे

और मैं सोचती हू कि पर-पीडा को झेलने वाली यह एक ऐसी चेतना थी, जिसका दर्शन हम श्री रामकृष्ण की पीठ पर उभर आये कोडा के निशान मे होता है। और कह सकती हू कि ठीक यही दर्शन हमे श्री रजनीश के चिंतन मे होता है।

मैं समझती हू—कि आज की रोजमर्रा की जो लोगो की व्यथा है, जो कहीं तो मदिरा म स्त्री के प्रवेश पर पाबदी लगाने की सूरत म नजर आती है और कही मुहब्बत करने के जुर्म मे स्त्री को सगसार करने वाले कानून की सूरत म, कही किसी मासूम बच्चे को 'नाजायज' कहकर पत्थरो से मार डालने की सूरत मे नजर आती है, और कहीं गैर मजहब वालो को जिदा जलाने की सूरत मे। यह वही कोडे हैं जो श्री रजनीश न, श्री रामकृष्ण की तरह अपनी पीठ पर झेले हैं। और इसान को उसकी जेहनी गुलामी से स्वतत्र करने के लिए एक ऐसा चिंतन दिया है जो अधूरे सच की रोशनी मे दिया हुआ कोई फ़ैसला नही है। यह पूर्ण सच की रोशनी मे दिया हुआ एक सकेत है। महज सकेत। फैसले तो वो लोग देते हैं, जो पूर्ण सच को नही जानते।

इस सकेत को पाकर कोई अपने अनुभव से अपनी चेतना का कितना भर दर्शन पा सकता है, यह अपने अपने सामर्थ्य की बात है। श्री रजनीश ने तो

अन्दर उस बनजारो की गोदी मे डाल दिया

यह बच्चा जो एक बरस बनजारो के कबीले मे भी पला था, और जिसके वजन का नमक लेकर बनजारो ने वह मा को वापिस दे दिया था, आज वही बच्चा हिन्दुस्तान का माना हुआ एक बुततराश है—पुष्प राज बेताला।

पुष्प राज के तैल चित्रो की, बाटिक की, फोटो कैमिकल पेंटिंग्स की और बुत तराशी की कई प्रदर्शनिया दिल्ली, बम्बई, अहमदाबाद, लखनऊ और हैदराबाद मे हो चुकी हैं। अभी हाल ही में इस बुततराश की बुततराशी का एक आला नमूना अमेरिका मे हो रहे 'भारतीय मेले' मे भी शामिल था।

इसके इलावा यह कलाकार हवाई जहाज की सिखलाई का इन्स्ट्रक्टर भी रहा था। (ऐवीऐशन फलाईंग इन्स्ट्रक्टर) और उस दौरान आज के प्रधान मन्त्री राजीव गाधी को भी हवाई उडान की सिखलाई देता रहा था

इसके इलावा—इस कलाकार के पास कोई दैवी शक्ति है, जमीन के अन्दर छिपी धातुओं और रत्नो की जानकारी प्राप्त कर लेने की। मैं जानती थी कि एक बार एटामिक सर्वे वाले उनको हवाई जहाज म ले गए थे—देश के हिस्सो मे से यूरेनियम खोजने के लिए—पर अब जब मैं कोलिन विल्सन की किताब लैंथबरिज की इस शक्ति के बारे मे पढ़ रही थी, तो उनके अक्षरो के अर्थ और भी गहरे करने के लिए, मैं पुष्प राज जी को मिली। मैंने पूछा—कुछ विस्तार से बताइए—यह आपकी शक्ति क्या है? वह कहने लगे—जैसे किसी दीवार के दूसरी ओर लगे पौधो के पास से गुजरने वाला—सूघ लेता है कि दीवार के उस पार रजनी-गधा होगी, या गुलाब मोतिया, यह भी कुछ उसी तरह है, पर इसका किसी गध से कोई सम्बन्ध नही है, न किसी रग या आवाज से है। इसका सम्बन्ध अन्तर से उठते किसी अहसास के साथ है, जिसको कोई भी नाम नहीं दिया जा सकता। यह जरूर है कि जब उस अहसास के केन्द्र पर मन अटक जाता है तो जमीनदोज चीजों की सूरत भी दिखाई देने लग जाती है

इस आलौकिक अनुभव की उन्होंने कई वारदातें सुनाइ। जिनमे से एक यह थी कि हिसार मे फतहबाद के नजदीक एक गिल्ला खेडा ग्राम का गाव है, जहां का एक जमींदार उनका मित्र था। उसी मित्र के कहने पर उन्होंने गाव के बाहर की धरती की कई जगह से अपनी शक्ति से जाच की, और फिर एक स्थान पर खुदाई करने से पता लगा कि पूर्व हडप्पा काल की कई वस्तुए उस धरती के अन्दर हैं। यह खबर उन्होंने सरकारी महकमे को दे दी, और उस महकमे ने खुदाई द्वारा जो कुछ हासिल किया, आज वह सरकारी हिफाजत मे रखा हुआ है

और एक वाक्या यह भी है कि एक बार हवाई जहाज म बैठे हुए, उनका आंखों के आगे एक दृश्य फैल गया कि वह जहाज मे से गिर गए हैं, और नीचे जहां गिरे हैं वहा पानी ही पानी है। साथ ही यह भी देखा कि वहां समुद्र के पानी

मैं पन्ने का एक पहाड है, जो पानी मे डूबा हुआ है। उसी दृश्य ने फिर उनका पानी में से बाहर निकाल लिया जहां खडे होकर उन्होने देखा कि दूर पगडडिया पर बैलगाडियां चल रही हैं जिनम बैठे लोगो न गुजरानी पहरन पहन हुए हैं

पुष्प राज ने इस दृश्य को ज्यादा अहमियत नही दी थी क्याकि जब तक से सोचा तो ख्याल आया कि उन्होने समुद्र म से सूरज निकलन का दृश्य भी देखा था। जिसका अथ हो सकता था कि समुद्र पूव की आर है, और गुजरात के इलाके मे यह होना सम्भव नही। पर मन म एक हैरानी थी, जो जाती नही थी। फिर उन्होने एक बार पिलानी के इतिहासकार श्री गौड म इसकी बात की, तो उन्होंने बताया कि गुजरात का एक स्थान इस तरह का है, जिसके पूव की ओर समुद्र पडता है। और फिर उन्होंने कुछ खोज करने के बाद एक प्राचीन हवाला सामने रख दिया कि किसी समय वहा पन्न का एक पहाड होता था, जो समुद्र मे डूब गया था

पुष्प राज ने इस जन्म की अपनी इस अनोखी शक्ति को कभी चेतन तौर पर अपन पूवजन्म के साथ जोडकर नही देखा, पर वह जब कई वाक्या सुना रहे थे, हैरान होकर यह भी कह रहे थे "यह पता नही चलता कि मुझे सिफ खजाना का ही अता पता क्या मिलता है, बहुत कीमती हीरे मोतियो का। आम धातुओ का इस तरह पता नही पडता' —तो मेरे मन म उनकी मा साहिबा की बताई वह कहानी जुडन लग गई, जब सपने म उन्होंने इन्द्र के दरबार म से, सबको छोडकर राजा उमेद सिंह की सूरत चुनी थी।

मैंने पूछा—आपने जोधपुर के पुराने महल देखे होगे, कभी कोई जगह पहचानी हुई नही लगी?

वह कहने लगे—पुराने महल अब बन्द हैं। सिफ नये महल खुले हैं। तो भी कई जगह पहचानी हुई लगती हैं

मैंने पूछा—और राजा उमेद सिंह की सूरत?

वह कहने लगे—वह तो बहुत मिलती है सो जाहिर था कि पुष्प राज जी को खजानो का अता पता मिलन का सम्बन्ध जरूर उनके पुराने जन्म के साथ जुडा हुआ था। और हीरे और पन्नो की पहचान भी उसी धागे की एक कडी थी।

वह हसने लगे और कहने लगे—पर इस जन्म मे सिफ पहचान मिली है, किसी दौलत को भोगना नही मिला। जौहरी लाग लाखो रुपये के हीरे हथेलियो पर रख कर लाते हैं मैं देखता हू, परखता हू और वे फिर हथेलियो म लेकर चले जाते हैं

महसूस हुआ—राजा उमेद सिंह ने लोगो के लिए जो अपना खजाना खोल दिया था, वह कम शायद अब भी चल रहा है। वह खजाना चाहे रत्नो की सूरत

मे है, और चाहे हुनर की सूरत मे, पर वह सब कुछ लोगो के लिए है

एक और वाक्या है, जिसके बारे मे उन्होने सरकार का सूचना दी है, पर उस सूचना की गम्भीरता को अभी तक नही पहचाना गया। सरकार की ओर से खुदाई का कोई प्रयत्न नही किया गया।

यह वाक्या भी गाडी मे सफर करते, अचानक एक दृश्य की तरह उनकी आखो के आगे फैल गया था, कि भूपाल के नजदीक उसकी पूर्व दिशा की ओर, उनको एक पहाडी सी दिखाई दी, पर उसी दृश्य की एक गुफा मे से निकल कर उन्हें महसूस हुआ कि वह पहाडी नही एक खण्डर सा है। जिसके चारो ओर चक्र लगाते उन्ह एक गुफा सी नजर आई, जिसके अन्दर जाकर उन्होंने देखा कि उस खण्डर के अन्दर मरे हुए घोडा की, और सिपाहियो की कई हडि्डया पडी हुई हैं, और साथ ही हीरे मोतिया का एक खजाना बिखरा हुआ है

यह तसदीक भी पिलानी के इतिहासकार श्री गौड न की थी कि शिवा जी की फौज की एक वह टुकडी अचानक कभी गायब हा गई थी, जिसके पास बहुत बडा खजाना था। फिर उस फौजी टुकडी का कभी नामोनिशान ही नही मिल सका

लगता होता है—कि यह पराशक्तिया भी—कुदरत के कई खजाने हैं, जो सदियो से जमीन के अन्दर की परतो मे पडे हुए हैं। इनकी कई बार कइयो को खबर-सी मिलती है, और वह रूहानी खुदाई से इसके कई टुकडे खाज कर दिखा देते हैं

इन शक्तियो की कोई सीमा नही है पर जिनके पास भी इसका इल्म है, उनको मैं मानव वैज्ञानिक कहना चाहूगी, बिल्कुल नये अर्थों मे।

पुष्प राज जी के जाने के बाद जब मैं उनस की बाता को कागज पर उतार कर करीब करीब सो चुकी थी, तो सी० जी० युग की किताब मे पढा हुआ एक वाक्या, मेरी अर्द्ध सुप्त आखो के आग आ खडा हुआ। वह किताब मैंने कई बरस पहले पढी थी और अब याद नही पडता था कि वह लायब्रेरी मे कहा पडी थी। पर वह वाकया याददाश्त मे इस तरह जाग गया कि मुझे भी जागना पडा

उठकर बत्ती जलाई और लायब्रेरी मे से वह किताब ढूढने लग गइ फिर महसूस हुआ, किताब के लिए जो कशिश मुझे हो रही थी, शायद कुछ मेरी कशिश भी किताब को पड रही थी, कि वह मुझे जल्दी ही मिल गई

वह वाकया युग ने उस समय लिखा है, 1923 का, जब उसने अपन हाथो से, एक पत्थर को देख रेख करत, अपने मकान की खुदवाई करवाई थी। युग के लफ्जो मे—"मेरी सबसे बडी बेटी वहा आई जगह का चुनाव देखन के लिए। और जमीन पर पैर रखते ही बोली—यहां इस स्थान पर घर बनाना है? यहां नीचे जमीन मे लाशें पडी हुई हैं' उस समय मैं सिर्फ हस दिया। पर जब

चार बरस के बाद घर का एक और हिस्सा बनाना था, तो यहां खुदाई कर
सात फुट नीचे से एक पिंजर निकल आया वह एक सिपाही की लाश थी, जि
कोहनी पर एक बंदूक की गोली का निशान था। उस वक्त इतिहास के हव
से जाना कि 1799 में जब फ्रांसीसी फौजें आगे बढ़ रही थी, तो आस्ट्रीयन
पुल तोड़ दिया था, जिसके कारण कई दजन सिपाही दरिया में बह गए थे

और चुग ने लिखा है—उस खुली कब्र की और सिपाही के पिंजर की तस
उतार कर, मैंने उसके नीचे तारीख लिख दी 22 अगस्त 1927। और मैं स
लग गया—मेरी बेटी को जमीनदोज लाशो की जो जानकारी मिल गई थी,
शक्ति उसे जरूर विरसे में मिली है—मेरी नानी स

यह चुग की बेटी, चुग की नानी, पुष्प राज और ऐसी किसी शक्ति के मां
मेरे लफ्जो में मानव वैज्ञानिक हैं, पर बिल्कुल नये अर्थों में।

□

अमृता प्रीतम

जन्म 31 अगस्त 1919, स्थान गुजरांवाला (अ
पाकिस्तान मे)
बचपन और शिक्षा लाहौर मे
अब तक प्रकाशित पुस्तकें 75 के लगभग
(काव्य-संग्रह, कहानी-संग्रह, उपन्यास
निबन्ध-संग्रह और आत्मकथा) कुछ
पुस्तकें ससार की 34 भाषाओ मे अनूदि
साहित्य अकादमी पुरस्कार 1956 मे
पद्मश्री उपाधि 1969 मे
दिल्ली विश्वविद्यालय से डी० लिट० की उपाधि 1973 म
वाप्तसारोव बुलगारिया पुरस्कार 1979 मे
भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार 1982 मे
जबलपुर विश्वविद्यालय से डी० लिट० की उपाधि
1983
राज्यसभा मे मनोनीत सांसद 1986 से
पजाब विश्वविद्यालय से डी० लिट० की उपाधि 1987 मं
फ्रांस सरकार से उपाधि 1987 मे
पजाबी मासिक 'नागमणि' का सम्पादन 1966 से
एक उपन्यास पर आधारित फिल्म कादम्बरी
कुछ उपन्यासों पर आधारित टी० वी० सीरियल जिन्दगी
यात्रा सोवियत संघ, बुलगारिया, युगोस्लाविया, चेको
स्लोवाकिया, हंगरी, मारीशस, इग्लैंड, फ्रांस, नाव
और जर्मनी